্ৰশ্বৰ'ৰগ্ৰুমা

ळ८ अगुम्यसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्ध



यद्यन्याया अन्यन्यम्भिषाशिः श्रान्या

न्गरःळग

सर्देव-शुस्राची-ये छ-श्रे-दर-र्ये।	1
रटार्ट्रेन श्री हे शाशु प्रमापिये त्ये तु हो माहे शामा	40
ग्वित् ग्री देव ग्री हे श शु द्या पा प्रते त्ये सु भी शु श प्रा	79
न्मे न्दरन्मे सूर सूर च नह्या प्रदेखे दुः हो निवि मा	136
ग्वित्रःशेयः नह्याः मदेः ये दुः हो खुः म्।	155
स्रमार्केन् नहमारावे त्ये दुः हो नुमारा	191

७७। |र्क्ट्रायानायमान्यात्रायदेः विशेषाया

र्स्न प्रस्त्र स्मार्थ सारा स्

यर्ने न श्रुया की त्ये तु र हे न र र र

चित्राम् अत्राह्म । अत्राह्म । अत्राह्म । अह्न । अ

यदेर'यर'रवाहानेदायदे'द्रासेर कु'द्रायन्य भाग्यास्त्र शुमा र्केषामासमा क्ष्यास्त्र स्त्र स्त्रीत्र स्त्रीमा स्त्र स् वर्हेद्र संत्रे स्त्र स्त् वर्हेद्र संत्रे स्त्र स्

दे त्या कु ते त्या अध्या प्राप्त कु त्या अध्या के त्या अध्या कि त्या कि त्या

विष्ण्या वि

ने'य'रनःश्चें र'ळ'न'याव्य याथेया । रूट्ट्र श्चें वे'यळंद हेट्'य' द्र द्र स्यानुका प्र'द्र प्र'देया'हेट्ट्या'यक्ष प्र'देया'य'र्सेयाक्ष प्र'त्र स्या' श्चे वे'यळंद हेट्दे प्र'देया'य'र्सेयाक्ष प्र'त्र स्या'यें वे क' से 'ह्या'य'हेट्'य' स्याक्ष प्र'यर'येट्योक्ष र्या हुर्श्चें र'यर होट्ट्री

नेति श्वे राळन् सामावन साधे ने नि श्वे राय स्वि स्व साधे ने स्व साधे ने स्व साधे ने स्व साधे ने साधे

वर्दिन कुण वर्ष श्चा हम्मा श्वा श्वा हिन स्वर्ग श्वा हम्मा हिन स्वर्ग हम्मा ह

यदी त्याम के मान्त में त्यो या मान्न प्रमान प्रमान के माने के माने प्रमान के माने के माने

के मार में श्री र माहि शाया नहे व तथा श्री र पित है स्याप र में शाया निव स्थाप र में स्थाप नहे व र पित स्थाप निव स्थाप से स्थाप

 श्चे अकेट्र त्यः श्चे देः श्चें ट्र प्युत्यः ठवः वेशः निर्हेट्र ग्री वः ट्र ट्र प्यायः वः श्चे ट्र र धरः हेंग्रसः प्यसः वेश्यप्येवः वे ।

र्नेत्र प्रेन् क्षेत्र क्षेत्

ने भूर दारे विवादियर में भूष्य अ क्षेत्र स्वित स्वाद्य स्वीत । क्षेत्र स्वादे स्वाद्य स्वीत स्वाद्य स्वाद्य स्वीत स्वाद्य स्व

देन्त्वेद्वन्त् वित्यायभ्रम्भ्यभ्भः भ्रम्भः भ्रम्भः द्वान्तः विवान्त्रः वित्रः वित्यः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः

याश्चिम्राम् । वित्रमान्ते सर्वे शुक्षासाधिव । यदः श्चिम् वित्रम् वित्

यहायः निरंगुतः हैं नः खेरं ने शंदर्ग हों नः खंदे हों नः अर्दे न्यु स्वारं ने शंदर्ग हों । वित्र निरंगुतः हों नः खंदर्ग हों ने स्वारं हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों हों स्वारंग हों

यदीराणरा ज्ञान्दान्वस्थान्यः हैं नास्यान्यस्थाः क्षेत्रा । क्षित्राचान्यस्य । ज्ञान्दान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्य । ज्ञान्दान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्य । ज्ञान्यस्य । ज्ञान्यस

रटारेवालायादिरावन्यात्। विशायात्रेश्वरावाहेशायशा

श्ची अपित्र निर्मा श्वर निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान स्थान निर्म स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्

स्वः श्वेरः र्ह्या | देवेः श्वेरः लेकाराका खुंका महिका खेरा के नारा श्वेर के नारा श्व

नेश्वान्ते व्याप्पदान्तेशाव्याव्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थ

स्यान्त्र स्थान्त्र विष्ट्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्

देशक् विर्वेश्व प्राप्त क्ष्रियाय क्ष्रिय क्ष्य क्ष्रिय क्ष्रिय क्ष्रिय क्ष्रिय

मञ्जूषायायार्थेषायायात्रेतायात्र्येषायायात्रेत्रत्वहेत्यराज्ञात्रात वा है ने राम भ्रे निर्म सूर सूर निर्म ति निर्म है न धीव वस्या दे हे जावव दु ह्वर दु विव ग्रार हे ह्वर धेर परि दे हुर प्रमुर नःलेन म्या देख्या हेरादशुराने नाया हे हे स्वान देख्या नेया या यर विशुर है। दे हिद त्य द्रिया श्राया थित प्रवे श्रीर में । श्रें त से त्या श्री वा श्र धरःबूटःवदेःलेशःधःषःदेवःदेःषशः श्लेशःधदेःलेशःधः सर्देवःशुसःदः वशुरार्रे विश्वादर्दे नाया दे प्राप्त के कि वाश्वादा ने निवाद्य विश्वाद्य के विश्वाद्य विश्वाद विश्व नित्रायर वित्रायि ह्या ग्री ह्या पा हित् वित्र हो। ते हित् ह्या वा सेवाया ने के हे सूर वें न स्कूर कुर कुर के ने सूर हरा वार्य के निया निया हेश्यस्थि त्यूरहे ने क्षर्वने न्या सेन्य हे स्थित्ते । विक्षर्व पार ग्राम्याध्यम्बर्भुन्त्, ज्ञानाक्षेत्रे देशे दर्वेन सम्भावक्ष्माने। ने न्वार्के के यानेश्वायाधेन्यायाधेन्त्री। श्रिंशें नाने न्वायन् श्रायाकु धेन प्याने वर्षासम्पर्भिन्यायार्थेषायायात्री।प्रयासम्बद्धार्थे।।

र्ने हिन्द्र्य्याया है स्ट्रिस्ट्र्य्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्र्य्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्र्या है स्ट्र्या है स्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्र्या है स्ट्

र्देव में क्षेय में अपने वेद पायदा | निर्हे न मु अपने वेद पायदा । विर्हे न मु अपने वेद मु अपने वेद पायदा । विर्हे न मु अपने वेद पायदा । विर्वे मु अपने वेद पायदा । विर्हे मु अपने वेद मु अपने वेद पायदा । विर्हे मु अपने वेद मु अपने वेद

स्वारित्वे स्वार्थि । श्री स्वार्थि स्

प्रतिः प्रतः से म्रान्यः स्था विद्यान्यः प्रतिः स्था विद्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्य

देवे श्वे राखायहायायवे हिन्यराय स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

वस्त्राच्या । विश्वास्त्राध्या । व्याप्त्राध्या । व्याप्

 प्रश्नाचे प्रश्निमा स्थान विष्य में के प्रश्निमा स्थान स्था

न्वर्धं म्वत्यं प्रिन्द्वर्धं । प्राप्त स्थित् विक्र प्रिन्द्वर्धं हित्त स्वर्धं क्षेत्र प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं । विषय प्राप्त प्रिन्द्वर्धं । विषय प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त

द्वाने शत्वश्वान व्यान व्यान

बिट्याब्रुं विद्याय्य्य अर्गुं प्रत्युं प्रत्याय्य स्वाय्य अर्थः विद्याय्य अर्थः विद्यायः विद्या

तेश्व ते हिन्यम् नु ह्या त्या प्रत्य क्ष्य मान्य क्ष्य क्ष्

ते भ्यात्र त्रे भी श्वात् वित्त त्र क्ष्य ग्यात्र व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त व्यापत व्यापत

त्रे त्र्वास्यक्ष्यःश्री स्वरं त्रे स्वरं त्रियः विषयः विषय

ब्रेश्वास्यक्ष्र्रस्यस्यस्य विद्वान्त्रस्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्रस्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वा

म्बद्धाला है ते हिन्द्या के स्थान के स्यान के स्थान के स

 याधिवर्ते । विवेश्वेरावेश्व प्रतासेश्व प्रतासेश्व प्रतास्त्र । व्याप्त स्त्र । व्याप्त स्त्र । व्याप्त स्त्र । व्याप्त स्त्र । व्याप्त । व्याप्त

गयाने ग्राम्यायार्थे ग्रायाये श्राप्त श्राप्त स्वाप्त स्वापत स्व मुः धुवायायदितायायो वर्ते। । ५ वटार्यायविवामुः धुवारे हेर् वे या मुनारा यश्चन्त्रन्त्रिनेवा ग्रुःक्षुन्तुःक्षे देःश्चेवा वीश्वानाद्ववा न ग्रुटा वादाद्वाः गयः हे : रेगः प्रदे : इश्राभेगः गेशः प्रदेष दादे : द्वर : रेंग्वद : ग्रीः खुयः प्यरः श्रेगामी रूरमी खुवाधीत विश्वास्थान राष्ट्र सुरुषा स्थित स्थान राष्ट्र सुरुषा स्थान राष्ट्र सुरुषा स्थान राष्ट्र गुरः श्रृंदः सं त्यः श्रें गुश्रः प्राचिदः तुः रेगाः प्रायः श्रें गुश्रः प्रायः प्रायः श्रे गाः गीशः वहें त'सर' त्रव्यं नर' वर्गुर' नवे श्रीर' नर' । व'न्न्' संदेन के ने ने निर्मार हैं न स्रभावा बुरानर ग्रानदे कु स्रळ्दा धेदा हे सादा द्वार में जावद ग्री खुरा भेष्ट्रिया ग्राम्परम्बित्राभेष्ट्रम्थापरम्बर्धेर्,सभाषट्वेत्रसर वशुरा ग्राह्म वास्यार्थियायार्थियायाः प्रवटार्थिः ग्राह्म स्वर्धितः धरादशुरा दे इशाया श्रीवाशाया विवादी । दे भूरावा धरावा त्वाशाया यने न्या वे व्येन्य अप्येव हे। या बुवा अप्य अवा अप्य ने न्या व्य स्ट स्ट वी हो ज्ञवा देश या भेंद्र या भेंद्र या दे से दाये हो स्प्रदार से दे हिं से दाये यासीयविकास्याचे विष्या के लाराने रियाची रियास हिराने के ख्रान विया। यारा

श्रेमान्दरनेमान्यन्मानीश्वरेन्द्रमान्यहेन्द्रस्य श्रेष्ट्यू सःही । मान्यने ने भ्रात्र ते नार त्याना तुना र हिर प्यें र सारे से ना नी ना तुर हा प्येत हैं। । ने भ्रा नशक्रेन्। शुःषः श्रेन्थायः प्याप्तः दे निवेदः द्रः देशः यः हेद्रः श्रेशः शिद्रः यरः ळॅर्या भीतार्वे । प्रेयिवेदर्णम् स्वास्थार्थस्य स्वास्थार्थर्थे स्वति । इश्यायार्श्वेषाश्यायायादेश्यायासेन्यम्यस्य स्ट्राम्यस्य विष्ठा नेयस्य स्ट्राम्यस्य <u>षदःव्यायःहे। देः सेदः सवेः श्रेक्तः से व्यावायः वेदायः हेदः यः सेवायः</u> र्शेग्रायायार्थेन् प्रवेश्चित्रयाये याये वर्षे । नित्रावित्रे म्यायायात्रया वळ्याक्षे। नगरार्भे माववाग्री सेनाया सेनाया समामन्याया त्रा मात्रा नर्ने मातुर नाराधीनन्। मातुर नर्श हैंदर माते हैं सूर मातुम् अहेंदर स र्शेम्बरम्बर्भे रानराग्चाके मायाने कु सेरायरायहै कारासेरायरे वे वा देवे भ्रिम्मा बुम्बा वा व्यावा वा वा वा विकास के माने का वा विकास के माने के माने के माने के कि के कि के कि का श्चेन्द्रभ्यायार्थेन्द्रभ्यायार्थेन्यम् स्थायार्थेन्यम् वहें त'यं शे अर्बेट च दे हैं हैं ले त्रा मलत ही खुया शेम दे रेम यर हा नः न्वात्यश्वात्त्रः स्वेतः स्वात्तः स्वात्तः स्वेतः स्वे

सर्दिन्धुस्य ग्रीस्य विद्या स्थानि स्यानि स्थानि स

श्चित्रः वित्रः प्रदान स्थाः प्रस्ताः स्थाः स्य

यात्राने ने त्थू र न्यत् र्यो सान्त न्या स्थान स्थान

पतिः श्वीतः स्वातं स्व

न्वर्धे प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्यर्चन्त्र्र्त्त्र् प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्रम्यदेश्वे प्रम्यदेशे प्रम्

देश श्री मा श्री विश्व मा स्वार्थ स्व

स्त्री । दे द्वानी भूरत्य प्यत्त्वर स्त्री व्याप्य स्त्री स्त्री व्याप्य स्त्री स्त्री व्याप्य स्त्री स

यर्वः न्वर्वारेषाः वशुम् वे के मे ने मर्थेवः नवः वाश्वयः व से न्द मश्रामेग्राश्राम्हेगाहिताधेवावादीने भूमावाद्वामा प्रमानिकाने मा रायार्श्वेष्वश्चायदायहेव्यस्य वयायदाय्यू रावदे श्रे राद्यदार्भे व्याष्ठियाः हेर्र्र्यूरहे। वस्र उर्र्यू मिन्न मास्य विकास कर् व्यव म्वर्ग मुख्य प्रत्य प्रति क्षुते से ग्राय के व्यव स्था से विक्र में प्रति क्षुर क्षेत्रपुरुष्यपेते नेपाञ्च या सेपास्य स्थाय स्थित है। प्राप्त के स्थित য়ৢ৾৾ঢ়য়৽য়৽য়৾ঀয়৽য়৾ঀ৽ঢ়৾৾ঀয়য়৽য়ৢয়৽য়ঢ়য়৽য়ৢঢ়য়৽ঢ়৽য়ৢ৽য়৽য়৽ र्शेग्रामान्याचान्द्रामा है स्ट्रिम् सेद्रा क्षेत्रे मेग्रामान्ये प्रमासामान्ये । यदे न्त्रीत्र शी मात्र भूत्र भीत्र भ इस्रायश्वाचार्त्रायः है। देवाश्वास्र व्यवेषा बुद्र वर्त्र गुर्वेष्णुयाया है। नःवह्यायःधेवर्ते । नेःनवेवर्तःनेयायःयःश्यायःयःयःयःपरःहे। । नेदेः धेरहे भूरर् पहें राये भूवर् प्रवास्त्र प्रवास के स्वास के रेगा ग्रु हो यो गी अ शुक्र परि । धुय पुर हो या प्र शुर प्र श्री न या श्री र प्र श्री न या श्री र प्र श्री र या श्री र प्र श्री र या श्री र प्र श्री र या श्र गिरुशःग्रीःगात्रुदःग्रुदःदेःर्वे त्यःश्रेषाश्वःपदेःद्वित्रश्रायःश्रेषाःददःदेषाःग्रः <u> न्यायी लेखारा सर्वेट प्रदेश के सम्मार्थ प्राया है। विस्तर प्रद्या में लेखारा है।</u> इस्रायराम्यायाने। न्दीनसाग्रीसाग्रसारीरिम्याग्रीनी ज्ञापदेनिसरी ख्र-रवावे क्षायार्थे नायायां वे क्षायायार्थे नायायायायायायाया विकास नायाया विकास का विकास नायाया विकास का विकास गर गी भीर ने नी नी नी नरी ने मारा सामी भी निर्मा नि न-१८-सू-१८-१रो इस्सर्था ग्रीया ग्रीट-१ न्या निवास स्थित । स्थि यदे श्वाप्तर है प्तर में इसका समें दि शुसाय पीदा पर प्रमुन में प्राप्त । प्राप्त ग्रेग'य'न्त्रिन्रास्टार्से वर्षेन'सर'यट व्युर्नेन न्नट से ग्रेग्नी गडेग'रु'र्ह्चेनशर्'र्'अ'अर्वेद'नर'व्यूर'र्रे । । र्ह्चेनशः इयश'व'छिर्' यर से द : यर : सर्द द स : यदे : द्वी र : या से र : या से या स : यदे : क्वी या स : स स स : द र : कुत्रस्थर्थान्ते न्यान्येत्रस्य विक्रम्ये । प्रतिवर्धास्य स्थान्यः ल्रि.सप्त. ब्री.स्याक्षेत्र. या क्षेत्र. या क्षेत्र वा धरःवशुरःर्रे।।

दे निविद्य द्वा स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

स्टानिविद्याः स्वाप्त्राच्याच्यात्राच

मानवः प्याः मानवः देनः सेवायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वय

र्षेद्रशःशुःचडदःमवेः ध्रेरःर्रे।

श्चायाश्चित्रायायायायाश्चीत्रायम् वहित्रायायम् अर्थेन्दि। । निने न यार्श्वायायदे। प्राया से द्वारा स्वाया द्वारा द्वारा द्वारा स्वया श्री । लिक कुर अक्र असर वर्षेत्र है। नियर मु अश्र र में लिक कर पर्ये धरक्षे वशुरक्षे वरे वर्षकार्थे वाषाया धुवावावर वार्यक्षेत्र शिष्ठे व्याप्येत अधीत हे स्टर्स्स मी प्रीनशामी अम्बर्धित हैं तो अम्बर्धित हैं तो अम्बर्धित हैं तो अम्बर्धित हैं तो अम्बर्धित हैं नर्हेर्न्स्वेत्रा रेःभूर्त्वे नर्हेर्त्यस्मार्थास्य वे से नर्हेर्ने। महामे <u> भ्रेर-५, अर-५६, प्रेर-पार्याश्याश्यार्थ, याश्यार्थ, याश्य</u> য়ৢ৽য়ৣ৽ঽ৵৻৴৽য়ৼ৻৽ৼৣ৾৾ঀ৾৽য়ৼ৽য়ৢ৾৴৽৻৻ঢ়ৢঀয়৻য়৾ঀৢয়য়৻য়৾ঀৢয়য়ৢ৽ *ज़्गश*न्त्रभःदिहेत्रभाते सासर्वेदारें। ।देरप्रीयसाग्री वाप्तरायसारीयासा ग्री म'न्न'यर्ने न'वे ने 'हे न'न्नर' में मुना स' से न' सर मया नर 'युगुर'न' धेवर्ते । प्दे वे मुरुष उवर में में अप अप अप अप के प्दे द दें। । क्रें व में अर अर अर रे भूदे अळव हे द ग्रासुस रायस मसे द द रास स से व हो देगा स गावत *क्षेत्र*ःयश्वे अःधेवःसश्चेताः चुःयः श्रेत्राश्चः सदे सळ्वः क्षेत्रः ताशुश्चः से प्तारः र्ये मन्द्रामान्त्र श्रीशामा बुदान्य स्वयदाया साधी वार्ते । । देवे श्री सावदे । नावा र्शेग्राशः इस्रायः वः ५५ : वेदः स्रायः ५ वदः से द्वस्रायः ५८ : ५८ वो : धुवः न्नरः होन् प्रमः नाईनि निष्या प्रायः प्रमायः निष्यः प्रायः प्रायः निष्यः प्रायः निष्यः प्रायः प्रायः निष्यः प्रायः निष्यः प्रायः प्रायः निष्यः प्रायः प्रायः निष्यः निष्यः प्रायः निष्यः निष्यः

धरःवयःवरःवयुरःरेविकःवेरःरे । पायःहेरीयाकःग्रेःवर्द्रायकःग्रहः इससायसाहित्यरात् होतायाष्ट्रायादे ने नसायरा हे साध्यायरात् वि र्वेशः शुप्तरः वुप्तः हेर् दे। रे रेदेरे रेवेर वस्य अउद्दे। विरे रेवेर ह्या स्रवःश्राःश्रेत्रः व्या । वर्ते व न्दरः स्रवा वस्य न्दरः विते स्रवा न्दरः स्रवा । र्यात्रस्थारुद्रान् सेंद्राया विद्यान हेंद्रायम् स्वीते । र्या हुः से म्यादे धरर्मा पुरर्श्वे रावदे हो ज्ञालकार्मा नी रेवाकालका अपन्यास्य स्त्रका नुदेर्भेर्म्युन्यने न्वर्भे ह्रम्या ग्री खुवान् व्यूर्भे । ह्या स्व गशुस्र सेंदे रूट नविव र्। । गाउँ गारे दे रे रे रे रे रागट मी सादर्शे । गाय हे श्वर यः अदि विश्वाने नाया श्वाशासान्दान्य नदे ना से न्द्रा में नि नि नि न् स्रदेः स्टान्न बितः वासे 'द्रान्य प्येत स्वरूप स्वीति स्वीत्य क्षेत्र स्वीति स्वीत्य स्वरूप स्वीति स्वीति स्वीति स रेग्रायायी समुद्रायया सुराया थी। रिना तुः र्से रानर वर्रे दाया धेदा। ग्रायुया र्रे श्रुर्यायश्यावेवा हुःश्रुर्याय वे पेर्याया पेवाहे। यार शास्त्र स्वरा ग्री-देवाश्वाचर्त्र, दशुर्व्याचे स्थित्र हो । श्वाचिवाच हेन् प्रादे । विवास रमायश्वरद्रिशरीं महिमाय है। विर्मेशम्बर्धित विर्मेशम्बर्धित र्राचित्र'र्'वश्रुर'वर्षे श्रुर्रायर वर्षे व

स्रायर्देन् प्रये स्रायं क्षेत्र प्रयो स्वर्धि प्रयो स्वर्धि प्रयो स्वर्धि स्वर्येष्य स्वर्धि स्वर्येष्य स्वर्धि स्वर्धि स्वर्येष्य स्वर्धि स्वर्धि स

डेदे भ्रेर ले ता निव भी रूप मान मान है। निव में देखा है। ह्यद्रायम् उत्। । श्रुप्य सेवास्य स्टिन्द्र से स्टिन्स नविवागरायार्क्के पहुंगायारे नियर सेंदि र्हेव हो। दे हिन्नियर सेंदि खुवा धीव विं । ने प्यट गार्डिया विं व हो। ने या ग्रु या श्रेया श्राय इसशाय प्यट सर्द्धरमायायायीवार्वे। दिवे धेरारेगमायायायीवार्वे। दिवे धेरारे रेवे र्टूशःस्.जा चिर्शःश्यःसीयोशःतशः विरे.सरः यसयोश । क्रिंयः चीयोशः नदेव'स'र्वि'व'स्रे। देगार्थाग्री'ग्रे'त्रमाम्वेमामी'स्ट'नविव'र्डस'ग्री'कु'यर्थ' शे हिं अ से विश्वास से अ स्वर्ष स्वर्ध र ही। वाश्वास ही र र र विव वाहिवास हे र यशने साधेन हैं। । वायाने परान्त क्षरान दे क्षाउँ सावहें न परा होना परे <u> ५२८:सॅवे:वह्ना:स:सर्देव:सुस:५:वर्दे५:स:५े:क्षु:व:वे:धुव:मडेना:स:धेवा</u> য়ঀড়য়য়ৼয়ৢ৽য়য়য়য়ড়ৼয়ৣৼ৻ৠড়৽য়৽ড়৾৾য়৽ড়৾৾ঢ়৽য়৽ড়৾য়৽য়য়য়৽ नरत्यूरर्से । १८६ मार्याने रहें न्यर नहें न्याय धेतरें। । ननर सेंदे यहनामण्यम्निम्स्यःश्चित्त्वमःश्चित्त्वःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चि

इत्रयर्थे विष्ठ इत्रयेत् १ विष्ठ १ वि

इवर्यानेश्वान्य वे विद्यानियाम के दारी दे विद्यान में विद्यान के व

इव्राचायदी सर्देव शुसायहैं व्यायये हो ह्या विश्व हा व्याप्त स्वाप्त हो । दे स्व वः धरः वरः अः केंद्रः पवे द्वरः सेविः धुवः वहें व व वे द्वरं परः से व्यूरः है। धेर्गी कुस्र श्रास हीं रावि ही रार्ने । सूर धेर ग्री शही रेवा ही रेवा कुस्रक्ष-सुः ह्येद्र-तः दे सेदः दे । इतः मः कुस्रक्षः मदस् इतः मधिवः ददः ग्वित्र अर्वेद व्याप्त । द्वर में दे वह या पार्य अविया श्री द न वे से प्र अभा शुः सार्श्वेद्रान्त्रम्। इत्राप्तिस्रायाः वेत्रान्त्रान्त्रात्वे सार्वे सुन्त्रस्य । इस्रायरायह्यायवे देवाही | दे स्वराष्ट्रस्यायरावयूराहे। धे रेवा छे देवा यान्तरासेवियद्वापान्दाञ्चरहेवा हुः क्षेत्रायाधेदाग्रीकाह्यका शुः ह्येदाना वर्देन्याधेवार्वे विषा गराहे अन् र्नेवायोगायी यान्य रामेश्र नश्चेत्रपदे तुषाय दे नहमायर से तुषार्थे वेशन हैंत्य दे धेर दे दे क्रयमानि केरानि । क्रियामाने प्राप्ति । यह स्वाप्ति । इत्राप्ति । वित्राप्ति । वित्राप्ति । वित्राप्ति । वित्रापति ख़ॣॖॺॱढ़ऀॻॱय़ॸॱॻॖॖॖॖॖॖॻॱय़ॱढ़ऀॸॖॱख़ॱढ़॓ॱॺॖॖऀॱॸॕख़ॱॻॖऀॱॸॕढ़ॱख़ॱॸॖॺॸॱय़ॕॱॸ॒ॸॱऄॸॱॸॗॻॱ गैर्भाष्ट्रवार्ष्ठेगारुप्यहेवायराग्चेरात्रयावेर्भायहेवाख्यार्भायानम्याने। यारा न्रहें न्राये भी में के ने के ने के ने कि ने के ने इस्राचर्या वायाने द्वाराख्या सरावहें नासरा वायते छेरा छे रेया छे । र्देव या धेन निर्म् इ के वा निर्माया या धेव व वे ने सु व प्यन वान है सून नु वर्रे क्षूर-न्वर-र्रेश्वरण्ड्र-णे । हेश्वर्थिन खेशवहें त्रः सर-हेन हे।

देन्य स्ट्रिंग्वर्त्ताव्यक्ष्यः च्यात्रे स्ट्रिंग्वर्त्ताः स्त्रे विद्यत्ताः स्त्रे विद्यत्ताः स्त्रे स्त्

र्डे क्षे प्यट वर्दे र वर्वा व कें वाका प्रान्ट प्येट वाकी वाका प्रान्ट प्यट र्श्वेर:बेर:बर:य:वर्हेर:यर:ग्रु:क्षे दे:श्वेदे:श्वय:वर्हेर:य:धेवर्वे:बे:वा दे: यर देवारा या या येव दें। । यें दारा उस दूर स्वदाय दुरा। । सा येव सेव हे यार वी अन्तर्हेत्। भ्रिअन्तः या अवा अन्य श्री र व्येत् या उद्या दर श्रदः या दिन वे स्वान मार्चि व स्री देवे स्री माराया वे से प्रमा स्री माराया स् यः श्रें गुश्रामः व्यें द्रामः व्येवाया स्वर्षेत्रः श्रुमः श्रूमः यादे । द्रमः व्यादः विगाः रु: श्रद्राः प्रस्तुः स्र्री । ध्रिया छिद्रः यरः ठवः ददः है। अदेः गर्दरः वाद्दरः वाद्दरः । वर्द्धराववे हो त्रमा इस्र अवे व्येताया राज्या वि वा हो। वे त्रीमा मी हिं त्रा स्र वर्षान्त्रं सेन्यते स्थित् ग्री मुस्यायम् भी साम् मुस्याया मेस्रा ग्रीसायविता यदे ने राय वर्ष्ट्र हो। देवे हि रादे प्रवादवावा यर व्यद्भार स्वार मः अधिव हैं। वि क्षे धें प्यून क्षानमः वर्देन। । नगरः में अहे अः समः गर्हेनः राखेवा विराधरायदी सूरा वह्या सरा ग्रास्ट्री विराद् दिवर में विरादिया न्यायरामुनायारे के मान्याया थे त्रम्या है। नेया वारे प्राप्ता प्रमा ब्रन्यवम् धरक्षाच्या व्याप्त्रवर्षे स्व कुः सहे स्य प्राप्त ब्रम्य स्व वेत्रा न्यायरामुनान्दायहेयायासे। विमासूनायार्येग्यायावेदायया ग्रम्। । ने मुन रे या ग्राम ने के वा पान मूम नि में नि न्ति।

ह्यःश्रेषाश्रामाववःश्रेशःग्राम्यःश्रेष्यः। प्रमःश्रेषः स्वाःश्रेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वः। स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वः।

वश्रूराते। निर्मरावर्षे निर्मे निर्मे स्थान स्थान स्थित स्थान स्था ग्रुन्यः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्रः विद्याद्यात्र सर्कें दायर हो दारी जावदाय रादी साधिद हैं। ।दे नविद दुर्ग रा पुर सहें रा यायाप्यरावर्हेरायरा वृद्धित्वा वक्तयावायरी वे से ववराया स्री वायाया यशने सूर नहग्रामा मार्था । भूने निवर में दे खुयाय भेता । दर्भे निदे अन्ते नायर वित्रयाम्याप्य वर्षे नित्र अन्य अर्के ना से नित्र वितर् न्यायान्दार्यातुः अहे यायरा गुः नवे श्वेराधेन्यवे श्वयान्वदार्थे त्या ग्वरायां वे साधिव के । दिवे ही साधित यदे हु त्यरा दे हु साम साधित रैग्रथं संस्था धीव हैं। । गुव हु रैव ५८ स्वर ग्राट वा । ग्रा बुग्रथं श्वा वर्म र क्रेंन्यन्ता । क्रेन्स्वरवहेंन्यर अर्बेट नशन्। । नरन्य केंन्यय गर्वेत्। ।वरे सूर वस्र रहर्त्त्र प्रतर से स देव वे व स्र होत्य व दे रवा वा गरायरे ग्रा श्रा शार्म ह्या राष्ट्र वा त्य शहे न स्तु के दि स्व विदाय त्य स्ट्रिय विरा नगरारेविः कन्यायायायायायायायास्त्रम् । निःस्नर गिहेशगाराधराधे वशूरावदे श्वेराद्यराधे ते दे वार्शेग्रायाविवादः नर-रु-अ-केर-यन्तर्वेन्यर-वे-अ-अर्वेर-रेन् व्रि-धे-कु-धे-केन्यरा-रु। न्रह्में न्यान्य व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत यासर्वित्यान्ययार्स्स्रिव्यत्यात्ते स्रिव्यास्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्

ते त्यान हे त्याने त्याप्य स्टि त्यान त्याप्य स्टि त्या स्टि त्या स्टि त्या से त्या स

मानविष्णता हैं विद्यान्त्र विष्णे स्क्री में क्षेत्र स्वान्तर स्व

र्रेदि:र्र्ह्रात्यादे रहात्याया नहेत्र त्रात्या निया विकास सेत्र प्राप्त प्रमानित केत्र प्राप्त केत्र प्रमानित केत्र प्राप्त केत्र प्रमानित क र्श्वेर्यनरहे से होराया सर्श्वेरानरानायरायार्थेन्यायरादेशायरायरासे रैग्रथःश्री ।देवे:धेराष्ट्रपर्र, ग्रुज्यद्वाष्ट्रपर्र, ग्रेट्याद्वायहेन धराग्चानारा हैनाधराग्चेनाधवे द्वाप्याना हैनाधावने निवास्य अप्य धिन् ग्रीशक्षे न्य त्वेष्वा शास्य होन् ग्रीशन्त्र न्य दिते हि हि साधिव है। । हेदे धिरःवेषा रहःरहःरेषाःधरःग्रःवदेःर्देषा । तसूवःग्रःभेवःद्धयः द्वारःभेदेः धुया । क्रिंश-र्, संपेर्न-र्, बेद्र-ग्राम्प्रम्यम् सेरे खुयादे नाम् सुद्रास्य धेत्रसदे नित्र केत्र नित्र में त्या सूर नि से तर्वे न स्र नि नित्र खुया धेत्र त्या र्राची सूर प्रदेश के अप्यासे अप्याने देश प्रमाण अप्याने पार्थ स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स यदे रहा मी क नियान विवादी । ने स्थान प्राप्त मिन से साम स्थान स्था यःश्रेष्यश्रायाद्वे प्रसूत्रयम् स्री त्राहे। पर्हेन्यम् ग्रुप्य स्रीष्य श्रायादे श्चितः पुत्रः धेतः स्वः स्वः स्वः स्वः

हे स्ट्रेप्पर हुँ ते स्वापित हुँ या द्वापात है न है न है न है न ले का न न न ले का न न न ले का न ले का न न ले का न ले का न ले का न न ले का न ले

निकास्य प्रवास्य प्राचित्र विकास स्थान स्

प्रवार्त्ता ।

वावारिः तर्ब्रित्रां तर्तुः नात्ते त्यान्य त्याः नात्ते त्याः विद्याः वाव्य त्याः विद्याः विद्

रटार्ने व की हे श श र र या र य दे खे तु हो या हे श या

हेशन्यग्रह्मान्त्रभाक्षेत्रभाविष्ठभाविष्यभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभ

वर्ते प्यटावर्त्र श्रास्ट्र प्रविव हे। हे स्ट्र स्ट्रेस स्वास्य हिंगाया गहेशहेर्'यशप्रवश्चरात्रर'वहेर्'य'दे'विवर्'र्'यरे'याथर'गयाहे यिष्ठेशःगाः प्यदः हिंयाः प्रवेश्यळवा हेदा उवा प्येवावा विष्वावा विष्वावा विष् विगार्थेन्छेन्। धुयन्निने में में अद्धन्य सेवने गहिया है। अमें व शुस्तरम् हे साशुर्त्रप्रमायायाष्ट्रियाग्री खुत्यादी चर्तराया हे। देवे हसाया पर त्रे[.]त्रवाचीः क्षें त्रवाकी । स्टाची में में प्याप्त न्न प्याप्त निवास के स्वीत । वात्य ने स्वीत । धिराहेशाशुर्विमायावित्यावित्रामित्रामित्राम् श्रीति हो वित्रामित्राम् वित्रामि <u> द्रम्याः सः द्याः वे : स्टः यो : दें : स्वे व : द्रः या बुदः स्व : युः सः ध्यः द्रः सः ध्ये व : </u> वै। । पाय हे अर्देव शुअ शु देव त्य व श्वर र र श्वर र व श्वर र पहिल शु के वि हेशाशुर्द्रमण्यम् त्यूमार्से । यायाहे यायम् अर्देवाशुर्या में देवायाहेशा शुः न्यवाः यः वह्वाः यः अर्थेनः स्रे। न्ये नः वः वा त्या श्वायः यथः नेवाः तुः निविवः वे वेता ने भ्रत्वे अर्वे न्यर्ने ने ने प्यायर्वे अया नविव नि हे या शुन्या पा ल्यायायाते साधिवार्ते ।

यार यी भी राजे वा रे प्यश्यावता रे प्यश्यावत वेश मुन्य दी *ॻऻॿॖॻऻॺॱॸ॓ॱढ़ॖॆॸॱॺॸॕढ़ॱॺॖॺॱॼॖऀॱॾॺॱॸॱॸॸॼॺॱढ़ॺॱॻऻॿॖॻऻॺॱॻॖऀॱॾॗऀॱॺॱ* रेगा गुरे श्रुदे हे या शुर्दिया पाणे वार्ते । । अर्देव शुअर्द् गुअर्पदे रेगा धरा चुरवदे चुर्वा दे वसूव धरा चुरवा साधेव धरे छुरा स्वा के साची । र्श्वेर् प्राया विवास र शुराय वे प्येर सामा प्राया के विवास र स्था विव अर्वेदानायार्शेम् शायायायार्थेद्रानायार्शेम् शायिष्वासूद्रानु नेदाये श्रिता हे सूर्यस्व राष्ट्रमानसूर पराग्नुनाधिर वे वा वरे वा वयायायायाधिर यासा धेव हो नेर परा अर्घर रेजा शहेर रेज्ञ वश्वर रा । रर जी रेजे न्हें न्याधित्। । अर्थेन्ने । विश्वार्थे। । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । श्रुदे श्रुप्त रार्दे व रे स्यया न हें दारा धेव नी र नी रे ने दे श्रुप्त राति सा धेव हो यदे सूर भेग में इस मर लेश मरा सर्वे र नर वशुर नवे देव याधीन ग्री इसायम ने यायया केंत्र में है त्यायम ने या की विने केंत्र में वे वेशः हेन्यर होन्दी निरायरा भेरायश केश होर इसायावता। नश्रुव र वुः धेर र वुः इस्र र र विदेश । यार यो खेर से या यो इस्र स्र र ने स्र र स्र नेयामार्चियाममानुयार्थी नेयामासून्त् नेत्रामायाधीन् ग्री इसामायादेयार्थी वेशनईन्दै।

रटानी अळट हेट नमून गुः भेना विश्व गुरु प्रश्व हिंग्य पर गुः नवे देव की निर्मा हित अर्देव शुंश की खुवा धेव वित ही हे श शु त्यमा सवे ध्याकेन्न् अर्देव्यान्य वर्देन्य राज्येव्यान्य वर्देन्ने । वायाके वर्दे स्र हेशन्यम् वस्य उन् हे दे पुरा उत् हें लेश है नहें न स्तर है। हेदे मुर्वेत्र भुःसधित्यवरासर्वेरानवे मुर्वे साधितायवरावेश गुः न'ते'अर्वेद'नदे'तुद्राय'र्शेग्रथ'रदे'रद्रान्वेत'रेग्।नु'य'र्शेग्रथ'र्थ्य' शु-दर्भग्-धर्मे ।दे-भूद-दु-प्यद-देग्-ग्रु-वे-देग्-ग्रु-अर्थेद-व-इस्रश-ग्री-स धेवर्वे वेश ग्रुप्त वर्षे वाश प्रश्न महिंदि दे वे दे सेव सर्वे द ग्रुष्टे धेव भ्रेम । ह्नुरायार्श्रेम् श्राप्ता हे श्रास्य प्राप्त मार्थ । स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स रेगा ग्राया शॅग्या सदी पॅता प्रता के पारी हित के पारी शिरा सर्वे वा पदी शिरा रमा लट्यं क्रिट्य सेंग्राय राष्ट्र स्टर्य विष्ठित सर् उत्र दें हे सार् प्रत्या मनियाधित ही। यादानी हिराह्या हैदार साही है देखारे या हाया से या सा माम्यया ग्री हेत ह्या हेत् त्या सर्वेत स्या श्री वाया है। ग्रावाधी है अ विवास त्या विवासे प्रीय कि मार्चिय अप्यास है प वःश्रवाश्वाद्यः स्टानिवः हेशःशुः द्यवाः यसः ग्रुनः पर्वे।

दे सूर पर रेग्रायाया धेता है। यहें राया सुया उत् हेंग्राया पर र नरुरान्यस्था धेर्गीर्धेन्तिन्द्रस्थान्यम् धेर्रेर्नेग्न क्रॅग्नायमःग्रुवायायाधेवार्वे। ।ग्रामाग्रीभ्रिमायवेटावाद्वययाययायवेटावदेः मुर्दित्। साम्बूट्रिया सम्मूल्या सम् क्रमार्विवर्वे । दे क्रममार्वे द्रामाधिव मदि ही मादि ग्वामा वी प्येव विमाने क्ष्यान् विष्युर्भे । देवे भ्रेराव्यया वर्षा वर्षा हुर हे या शुन्येया मन्त्रे मेया रामा था या वित्र वित्र में मानी स्वार में में मानी स्वार मान ग्रीया । ने यय पावन या प्रमोगाय पर होना । परीय ग्राम हो। पार परी <u>ह्याग्री भ्रेष्ट्रा सुर्द्यमात्रयात्रयाते । या पित्रायर हेया सुर्देयाया पित्रया</u> धेर्केश्रामदेक्षिमामी र्कर्ष्यशह्राम्वत्याप्य प्राप्ति । स्वाम्य थॅर्नास्त्रम्यम् होर्नास्य म्याप्तारे हेर्ने होरी । देनवेवर्न्मस्य ग्री:पर पेतर्ते । दिवे श्री र ह्यू र त्या श्री ग्राया सुर त्या सुन या र सार् स र दि वशुरार्दे गयाने शक्षान्त्र सुना हे वा वर्ते सूराख्र न्तर हे या शुन्य ग यद्याः वीश्वान्नः श्रीः द्रम्युनः धरेः श्रीमः हेशः शुः द्रध्याः यः महः वीः सळ्दः हेदः त्री त्या हिन त्या के त्या त्या के त्

वर्ह्न्-डिश्-वर्ह्न्-प्राणित्ते विकायस्य स्थान्य विकाय स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान स्थान्य स्था

वा ने निर्मास्त्र मार्वि वाया विष्ठ वाया के मार्म मार्च विष्ठ के मार्च मार्च विष्ठ के मार्च के मार्च विष्ठ के मार्च के मार्च विष्ठ के मार्च के मार् यक्षेर्व्याया सेर्व्या वियासया दे सुरायर हे केर्त्या सरा हु निर्दे केर् ह्रे। बेर्न्सहेर्त्याबेर्म्सहेर्धेर्मीम्वर्मायायायायाया यापारासापीत्रार्ते विसामित्री । न्यूनाममाग्रामित्री मासाम्या यायाधित्रयाद्रस्थेत्रयायायेत्रयाक्षेत्रात्रेत्रात्र्यायायायायाया द्धयानाशुरायदे ह्यायाययाह्याया उदाहें वाया से विया यसूदाया धेदार्दे। ठे से ने या पर जु न पी दार्दे वे दार्से या पर जु न या पी दा हे गार मी छिरा वरी-मुःलेश्यवदार्वेनायाहेन। यान्हेन्याने हे सूर्वेन छेता लेशा वेरःभ्रम्यश्राभीः नमरः व्यास्थित। । यदितः यात्रम् क्षेत्रायाने स्वेयः यत्रः वेदः यदे न्वर नु जुरु यदे हिर ने प्यर हैं वा य से रूट वी वन्वा हे न य हैं रा वयाहेंग्रयायारा होत्रायारे कुरणेवरही। होत्रायारे प्रविवर्तु रहें यायायायेवर

स्रम्हेश्यास्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व स्वाप्त स

यदीःया विक्रिण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र विक्राण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्णित्र कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्र कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य

मश्राक्षेत्राहेश्रास्याप्रमात्रा र्देवापारश्राप्तराम्यायाया वर्रेयामाइनम्बर्धिन्दिं विष्ठा देख्याळेषाठनदेखिन्या ।द्यमाद्यर के'धे' द्वेर से पर्देत्। । याय हे से दर प्रदेय परि स द्वेय स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य न्भेग्रासाय्यसाहे सासुन्नया सम्। ग्रुन्ताक्ष्यं सो न्माय्यस्य स्थित्। सार्थे प्राया सम्। ग्रुन्ता स्थायः स्थाय ने हिन हे अ शुन्नवा प्रमानुके वे अ हिन हिम शे पर्ने न ने म शे पे नियम शे हैंग्रायाय है साधिव हैं। । ग्रायाय वेषायाय प्रायाय स्वार्थ है साबे सावा व्यून्याने व से व्यून्ते व सायने व्यून्य स्थून होन ही से वसान्त प्रते वहोता यायार्सेग्रामार्येदायायायेदार्दे। ।ग्राव्यायदा देपविदानुगायदे सुनु वश्या विशेषायाहेशाशुन्यमायम् श्रान्यम् श्रीन्यवेषाया उत्तीषाया । बेबाबे प्रतिपदीयाया विवाद्यापिये क्षुक्षियायम् प्रयूमकी। परी वारी वेदे वेदि विश्व दे साधिव दे । या दायी हि र वही या पा दे से वही या दे विश्व द द से दि 新和四美子子

वे नश्रव मरा ग्रामा स्थाप के विष्ट्र के किया में किया में प्राप्त के विष्ट्र के किया में प्राप्त के विष्ट्र के किया में बेननी गरमी भ्रिस्के त्राप्त प्रवासी कार्य माने के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा वर्त्वराववे वर्त्रेवाया वसूर्याय राष्ट्राया साधिराष्ट्रा हे सासु प्रवा हिरा होत्रयाते प्रविवर्त्य प्रदेशयायायायाय प्रदेश स्थाप्य विवारे वि श्वरा नः हो हेदे: ध्रेरः ने न हग्रा ग्रीः विद्याया से दारा है। विर्याय सम्बद्धा र्भ्रेन्यर होत्। १रेर सुन दे प्रम्था । के शास्त्र में प्रमास्त्र न धेवा । ग्राम्ये प्रमान्त्र प्राये प्रमान के प्रमान धरः ग्रुमः दमः धुयः ग्रावदः ५:५५ र । दे । दमदः विगा र मः सर्वे र । धरः ग्राटः दः र्रायाधित्यादेवां के व्याप्तात्री । के प्रायम्भू वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के व वे वग ह न इत पर के व्यार्थे । । गवि वुद के र न है र र न इत पर हे गरकर्त्रभर्षेर्भारेका से व्याप्त के विकास मुद्रभावे हिस्से ।

वःशेष्यः वनसः नः न्दः हैं नः व्यः श्रेषाश्राः नः श्रः व्यन्ति । वीं निस्ति हो ने ने विद्यां विदेश हो स्ति ।

ग्राम्प्रम् राष्ट्रायनेयाम्प्रम् व्यवायावन्याने से साधिन हो हरा *क्षेत्रप्रश*्चेत्रप्रत्रक्षेत्रप्यःश्चेत्रायायात्रे प्रतापीयः ह्यायायेत्रप्यायः श्चेत्रायः यायशार्वेवायाउँ यायवयावेवा वैवायमा हो नामा हो निमान से शासे प्येता यायश्चित्रायदे स्टान्टावर्रेयाया द्यार्चेनायस हो नायने निवान् प्रदेश षरः से सं पीतः पात्रस्य सं उदाया सामितः विदाया के समितः विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाय र्वे । धेव ५ व दे ५ ८ दे १ व श्रद श्रेम्या । दे धे हो इया यो दे सम्बर्ध । इस भेवायार्श्वायात्रम्यायहर्वया । श्रिष्ठायार्श्वायारे मे मे मे वाया दे त्यार्थेवा हराहेर ग्रेश हरायाधेर पायर वेंगा पर दा। दे हेर ग्रेश रादे हराया धेवन्यत्यकार्वेवान्यन्ता देन्वस्त्रान्तिन्ग्रीकादेन्त्वते हुन्यकार्वेवानः ८८। ट्रे.चश्र्रःचदे:व्रे.च्याःचीशःश्रृङ्वःवःश्रःधेवःशःवःश्रॅवाशःशःवशःविताः यसेरेरेक्ष्मिश्यस्ति होत्याधिवर्के । निःश्लासाधिवरवर्के। मायाने सर्वेदाया निवरमान्त्रक्षम्य। अन्यस्तिः अन्तर्मान्द्रमान्यः विवर्णनिवर्षम्यः सर्भी त्यूर रस्य । यदं त्र वस्य उद्दे वाय सर् त्यूर । वाय हे यह <u> न्रोरक्षेक्ष्यन्त्रयासर्वेदायाविवान्येष्ठेश्याः क्षेत्र्याः वह्यायराह्येन्यः </u> वे वसायर हैं गुरुष्य स्थान हो निये र व से सब द निया व साम हिंदि । नविवर्र्से से स्पर्धे हिंग्रास्य प्रमूर्से । गाय हे हे सूर सर्वेद न निवर्, दें निया सम् हो दावा वे वायया ना दार हैं ना या से निया से दे हो ज्ञा

नायः हे : हेन नाडेन न बुदः न अः ग्रदः वस्य अः उदः ना बुदः न ध्वेन न हो दि । यदि : श्वेनः ध्वेनः स्वा न स्व न स्व

विष्याधिरारी हिनायाउदाहेयासुवियाववेरिदा हिनायाद्याहनाया उदानी ने निया । साधिदादे या हैया सामित्री । हिया सामा मा दिया सामित्र स्वा मुन् विश्वानुन्वान्य भूनशामुश्राक्षेत्राश्वान्य विश्वेष्टे वर्त्रेयामाने याराद्यामान्य वर्षेत्रमान वितर्त्या है सामाद्रा पर्वेयामा येता यदे भ्रिम्ह्याय उत् भ्री कें याह्याय त्याय प्रमुम्से लेखा दे दे पे प्रमु अधीव है। विशेष रामिक अधिक स्वास स उदार्श्वेनशामितामा हितान्तामहेनामानविदाधेनामी । प्यानमानर्थेना यनिवरमधीवा विशेषायमहिषायमविषायस्तिवेदिर्धेन्धीयाग्रह वर्त्रेयामार्थ्याम्रीयाहेवाद्यानहेवायये केंयास्यावस्या नहेवाया हेत्र उत्र श्री कें अप्तर मुत्र सें दर् प्रशूर न दी माद द प्यर पें द या साथित दी ने निवेद र हिन्य अहन अवद र प्रमुक्त निवस अधिव है। निवेद र हिन्य अ <u> ५८:ह्याश्रः उत्रःदशुरः यादे यादः दः धदः धेदः सः स्राधेदः देश । धदः ५ याः सरः</u> वर्डेन्यन हे सूर गरेग न्या वेया न्या वेया निर्मात स्थान विष्य स्थान स्था देवे श्रेर दे दर वर्षे वे अद्धर्य याया धेव वे ।

यदी सुन्ना ह्याश्चाद्दा ह्याश्चा व्यवस्थित स्वी विया विश्व स्वाश्चा स्वाश्च स्वा

धेव प्रदेश हो र हवा श्राह्म शास्त्र श्री र प्रदेश हो र ग्वित : र् दे : रेग्र अ: या अ: ये दा अ: ग्र : र् : त्र : हे र : त्र वे द : र् : त्र दे : श्रु : त्र : या व र्शेग्रायायायाची नर्ते द्राया सेता विदाह्य हिताया श्रेग्राया से साधित हैं। वेशनिर्देनित्री । ने सूरम्यशन्दम्स्याश्चरम्याश्चरम्याश्चरम् न बुद्द न वे खेव के लें न हु न व का प्राप्त के कि के प्यद हन का प्रे व प्यद प्र ह्याश्चार्यं त्र्युर्यं त्राचे र्वेर्यं त्राच्या श्वार्यं हेर् र्वायं हेर् रह्या स्वार्यं हेर् रह्या त्रा हेर वा ह्यायाग्री। वितासवर वर्दे दासा हो । दे प्यी क वया ह्याया उदापीया । ह्मा हो दार का ने भी हो द्वारा का धीन ने प्याप्त का स्वाप्त का स्वाप्त हो । स्वाप्त हिमा हो स्वाप्त हो । स्वाप र्वसाव्याह्मायाह्मायारवाद्याद्याह्मायावे व्याद्याद्याह्माया देशादे त्या नुःठवःहेन्:ग्रेशःनःयन्यः। ह्यनःग्रनःनेशःनःयनःमे ननः होनःयने सःथेवः। श्ची वित्र होत् दे हित्र न व्यत् वी अवीं न्यत्र होत्र मानवित ही । हित्र होत्र वो न र्शे से राजग्रामित से प्रविकाया । यार से रावसे वाया वार्षे साधिता । दे ह्येरम्बार्या श्रीम्हवार्या उदाया । विद्रास्य नदेव प्यटा होदा से से वा । ह्या स्वरा श्रे ह्या साया ह्या हुन हुन बेदा ग्राम्य हिन्य माया दश वे निम्मे होन साने । निवेद र से हिना प्रया नुया पाया निवास हेद मे या माराया नुया पाया निवास हैद से या माराया निवास है या माराया वशर्यो नरम्बेरम्थिवर्देषि

नेते भ्रेत्रास्य प्रते में त्राया में त्राय

यानग्वान्त्राचीं नरामु ना हित्र पुरामु निया में नरामे ना निया में यर नहें र्या व्याय हेर के या वहे नाय या वित के या व्या राधियासेत्र ।ह्यापासेटायाद्यियापदेः द्वेत्र । साद्यवापधेः देवादीया र्ह्नेत्र । नुःरुवः हेन् ग्रेयानायमाया । विनायमानुः रुवः सेवाया ह्रिना । सुमः यानु उत्रामी साम्राम्य विता । नायर मी दिन हिंगा मे न से न विसाम्य । वरःभ्रवशःग्रीःक्षेष्वश्राःवठदःयःद्वाःम् । स्टःवीःद्वःग्रीःहेशःशुःद्यवाः मारेशम्य निष्ठ्व हैं। । हैं न्य श्रुवाय व्यावेश के न्य के विद्या निष्ठे निष् अर्वेदः यादे 'देवायाया हेया सुर्वया अर्वेद विया यहें दार्दे। ।दे या सेदाय शेष्युर्वात्र अर्वेदावि । स्टामी इसाय रंग अर्वेदाव । माय हे से द्वा श वर्जुर नवे। । से दार से वर्जुर न दे वर्ज विषा र सा सर्वे दार वर्जे दार पर धिवन्वन्देन्। देवान्डेश्रासीन्द्रन्। डेश्रामुन्नन्देन्त्रमुश्राम्बुवान्यदे। याराया यायाने से दास से प्रमुद्दानिय दिन यात्र दुरास है। वन्ते। यदे सर्वेदाले याहे स्वरान हेंदायरा व्यापार यादायाहें वार्षेत्र वेदा स्वरा विषय वेत्रा हे से प्यट स्वास्त्र ने ते के सम्मान स्वास्त्र ने वर्ष्युर् निष्ठेर देवा पर्वे लेखा वर्षे दाया धेव वर्षे दे त्या के दाव के वर्षे वेशक्षित्रा विदेश्वरस्य से निर्मा से स्वीत स र्धिन्याकेन्ति। सेन्यस्थायमून्याकेन्ति मेन्यस्याने वार्षेत्र न्यान्येत्वी विश्वभावन्त्वे भावान्त्वे स्वान्यान्यात्वे स्वान्यात्वे स्वान्यात्वे

ध्रम्भाश्राश्चित्तान्त्रवित्तः स्वित्राण्यात्त्रव्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्य स्वान्याः स्वित्त्रवित्तः स्वान्याः स्वायः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वय

वर्तेषामाम्बद्धायमाग्राम्पर्ने क्रिंदासाक्ष्माद्वेषावह्द्याया देशा सासर्वेटानवे से रान्या सासर्वेटानवे हे सासु नमना माने ना साम हिनाया साम स श्चरानराभे गुर्वे । पहिषानदे भ्रीरामाध्यामाभ्रम । थ्रिमायराग्रीरामाने रैग्रायात्रा । सूरायरी राजेर्पर रें वियाय यथा या सूराया राजेराया वे.लीय.ट्रे.जेश.रा.लट.कॅ.श.टट.कंष.तर.परीय.ता के.ज.परीश.ये.जेश. यर हो न या ने भूर के प्रतिया यह हो र क्षत्र या या धीव के । क्षु प्रें न व न न ने व र् कुना व प्यट नो ना वा की रायदे ही र रहा। कु ना वव सार्के ना वा सारी र ८८.र्जेथ.रा.थु.र्प्रयोग्रासामात्रात्त्रेयात्रेया.र्जेथ.तात्त्राची स्थिता. याः सुन्तुरावेशाः पराणाः ने ने सुन्तुरा हो ना वे सिर्देव सुसा ही सान्दा सुता सर्द्धरमार्यदे नेमारारे प्यरास्त्रमा सास्रात् तेमारस्य राष्ट्रा रेप्यरायिया यदे भ्रिम्किन्यायाधीत है। या त्रुवायाय सुन्याय राज्य मीयार्मे सस्नि धरादश्रूरावदेरोयायादी वित्यायाधीत है। ।दे सूराव सूना यासू तुर्दे वेशःक्षःत्रवेःश्वरःषरःश्वरःतरःशेःत्रवे । वर्तेषःगव्यःषराग्ररःहेग्रयःशेः वर्चेत्र । क्रिया.स.र्टर.केय.तस्य वर्चेत्र.सुय। ।यर.क्.क्रिया.स.र्टर.केय.सस्य. ञ्चनाः साम् म्याः साम् वात्रः वित्रः वित्रः स्वरः सामा स्वरः स्वरः समा स्वरः स्वरः समा स्वरः स्वरः समा स्वरः स

या ने सूर प्यार देव राज्य या वार वा से दार के त्यूर विदेश देव वा पान वार वशः कुः हे शः शुः नर्ये वा पा स्रोनः प्रमः त्र व्युक्तः वः ने । प्रमः स्रोवे हि । प्रमः निवेद र नुरुष राया सँग्रास यस सामित्र । ह्या राया सँग्रास है सासु र हैं या सरायरावगुरार्से । सूराहे सूर्यरावहें दायते हे साद्या हसाराया प्राया प्र वर्तेषामाहिषामामास्याच्यामानिमा विर्वेषामान्यास्यामाहिष्यामानि वर्गमा विश्वान हिंदार ग्रासे है। ही साया सर्वेदान दे ही में हिंदिया য়৾ঀৗ৵৻য়৾৾ঢ়৻ৼ৾৾য়ড়৻য়৻ঽঽ৾য়ৢ৵৻ৼয়য়৻ঀ৾৻ড়৻য়ৢয়৻য়৻য়ঽঀ৻য়ৢ৾৻ नेशमञ्जे नहेशसुन्येनायम् वयानम् त्यूमर्मे । वर्षेयाया उत्रेति रं अ.मी.स्रे. प्रमायान्यायान्यायाया व्यामी. ज्यायास्रे मान्यायायाया उद्दुःचद्वाक्षेद्रात्रस्थाक्ष्यः उद्दार्धेशः कुःद्दात्रद्वशः तुःवा बुदः चदेः ध्रीदः दे। दिः क्षरावार्ष्यायात्रात्रवारात्रात्र्यायात्रात्रात्रेवायायात्रात्रात्रेवायायायात्रात्रेवायाया ध्रेर्या व्याप्त विष्युत्र विषयुत्र विषयुत्य विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र ध्यायानितानुत्रीया पुर्यूरायायमायह्या यरानहें दायमान्दी।

हेशन्तवाची नेश्वाच्ययय उन् ग्री खन्य विवास मुख्य विवास के स्वास क

ळॅट्र सर प्रश्नुर विद मावव प्य प्रश्नुर प्रश्नुर पश्चिर प्र स्थित स्थित हैं । विश्व स्थ्य प्रस्ति विद मावव प्य प्रश्नुर प्रश्नुर प्रश्नुर प्र स्थित स्था स्थित हैं ।

ह्याया ग्री भेया याळ दाया धेवा यदे खुवा दे । इया यदा द्वी वदर वर्चियःश्रात्रचीत्र विराहेशाश्रात्रवातात्रः वे.क्रांश्रात्रवातात्रः वे <u> थ्रु सर्वे अम्म अस्य अस्य भी निर्वे निर्वादियु निर्वादियु निर्वे स्वाप्त</u> स्वार्थाः त्यायः वित्रः स्वीतः स्वीतः स्वारः स्व यावित्राम्यायासुसार् विद्याराते। त्यायासुसायावहित्रायवे सिरारे तिया यदे देश प्रमान बुदान दे प्यान मेगा शासा सामित है। । हे सान्यमा बससा उद्दर्भाग्रास्त्र्याची ध्रायायायह्या स्री द्रभाग्रास्त्र्याचे देश विभाग्रेद् यदे भ्रिम्भे । दे स्वानुर्दे लेश यदे भ्रेन्य शाय है त्र हे त्य वा सम्बन्ध या से दार से धिरम्बर्धाराम्बर्ध्वार्द्धे स्वाकायायाधिदार्दे। । देखादेखाद्वीर हेकाद्यमा गुर नग्राग्रास धेव दें। वि व्यास इसस व रे वि वे वि वे व्यास तु प्र कु: ५८: वर्त्रेय: य: ५८: ५ व वियाय: वर् वर्त् वर्षः रे द्या दे स्वायायया श्रुट पर्टे विया ने स्वाय है या स वर्च अ.चे.चीच.स.सुटी । रुवा अ.स.२४.ची. ई अ.ट्सवा.ट्वावा.सदु. सेच अ.शे. য়ৄয়৻৴ৼড়ঀ৻য়৻৴ৼড়ৣয়৻৴ৼড়ঀ৻য়৾য়৻ড়ৢয়৻য়ৢয়৻য়য়য়৻য়ৢ৻ हे अःशु:न्रेंग्।यदेःग्वन्रक्षंग्रअं सेन्नें वियानहें न्रें। विशेषःयं वे द्वा ममिष्ठेशके खूर्यान्द्राचेत् । देष्पराभे न्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्र क्षुनुर्दे वेशर्भे । ने या रे विन । ध्व प्रदे हें नश्य मानुन या से न । ध्व प्र स्र्यं स्राच्यं स्रे स्राच्यं स्रित्यं स्रित्यं

मे 'दरक्ष्य मदे दु न दी । क दगद विवा प्रमास भी व मम। । दु नदे ममम उदार्गे होदाद्या । से प्याप्त म्यापाय वसार्गे हिमाय हुन। । श्वर प्रदेश दहीयाया क्ष्र-रत्ते। अदेरेर्हे नन्दरम्ययानायार्यम्ययान्देरहे ज्ञाह्यस्य ग्रह्मेन धरादशुराहे। वस्रशाउदाशी पद्माहिदाशी शास्त्र साधितासदी से । दे'नविद:र्'षट:र्'नवे'ह्रश्रायाश्चित्राशास्त्रश्रान बुटानवे'नद्गाकेटादे' वयाग्राम् से हिंग्यायम् ने द्रायम् वर्षुम् हे। दे ह्याया से ग्राय दे द्रिया र्रे निर्ध्वारायाधीवायावीयाधीवार्ते । हिःसूराय्वायायार्भेवाधीनाया हेः निवेत्रः नायार्शेन्याया देखायान्याया मुख्यायान्याया तःसेरः∃वःवःसँग्रयःपदेःहेःच्याःग्रदःह्रयःहेर्व्यःसँग्रयःपदेःहें सःर्गेः नरत्यूरर्से । दे क्षर्रेत्यां हेवायावर् नायावर् ना हो त्वर् सर्वेद र्ने । विवाय न प्यार है : श्रेन प्रवे : श्रेन । है : श्रून : श्रेन : यह न प्रवास न क्षे। गर-र्-अर्देव-र्-अ-ग्रुर-धवे-वर्गुर-व-प्यर-ह्वाअ-र्-र-ह्वाअ-उव-र्-नहें नियम् हुर्वे । ने निवेद्यम् अरेद्यम् स्थायायायम् हे स्वाप्तम् हुर्या यव र्द्धं व ह्या य प्राप्त विया या उव प्राप्त हो प्राप्त विया यो र दें वरायायानते साधेवायरे भ्रम्भे । यदान्हें दाया ह्याया भ्रम्भावतः ह्यायाधेताबेटा । हो ज्ञान्स्यया ग्राटाह्याया उत्राधेता । याव्राही भूराता वस्रभाउन्दर्भ। मिं गुर्ने गुर्ने पुर्ने प्रमान प्रमान में प्रमान के प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प शुःनठन् पर्दा । व्यवःयः हे सः शुःन्येषाः यनः होन् यदे हुः धोवः व दे न्ययाः याह्रम्थारुवः भीशायिः वुश्वायाः सेन्यायः स्त्रीयः मिन्याविवः न्यायः स्त्रीयाश्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्

ग्याने वित्र र्त्र राम्या से दे व्यान्य राम्य रा वशुर्विरार्वे भुरार्वे । दे सूर्व से साग्रदात्र प्रवसासे वे हैं नाया से वासा मायाधरानेशानुनाधराभीयनुरारेनिना नेप्श्रम्मनेनिमानस्यानि र्धेग्रथम् विमाम्बरक्षेम्यस्य स्वाप्त । देवे स्वीरम्बर्भ वार्य ह्याश्चाराह्याश्चार्याञ्चरायश्चार्यात्रे साधिवात्ती। देवाग्यारासेदावासे प्रमुद् निर्ने तथ्यार्से । ध्रियन्दर्त्यायार्द्वेयासुरुष् । दिर्ने ध्रियायार्द्वेयाग्रद बेन्द्राक्षेत्रवृद्धानिक्षेत्राचे इत्राक्षेत्रविष्या श्री विषया श्या श्री विषया श्या श्री विषया श्य वर्जुर-वर-दक्षेवाश-पवे-धुर-र्से । द्रश्वाय-क्षेत्र-पवे-धुवाश-व्य-प्य-। गद्धनःनिरःगद्धनरुःमद्भग्न्यस्य । हिःश्चेन्त्रःसेन्ग्चेन्सनेः श्रेन्द्र्द्र्या श्रेष्ट्र्या विष्ट्रिया हित्र श्रेया हित्र श्रेया हित्र श्रेया हित्र श्रेया हित्र श्रेया हित्र क्रुरः थ्रवः यः व्यद्भावः विवर्षे । वर्षः वः व्यदः वो दः व्यदः वो दः विवरः विवरः विवरः यदे कु अ भी व है। अर्दे व शुअ या अ भी व यदे ही मार्से । विशेषा या भी द दि विव ग्रीता कु वि वित्त कुत्र कि त्युत्र । विवेष व सात्रीय साम सम्बर्धन यरम्बर्याययानरा हो दारा दे । ये दे दे दे प्राप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्व त्शुम् देवाश्वार्थायायद्र, यावे म्यायाष्ट्रेश्य हो । त्र्यायाय्ये प्राप्त स्थायाय्ये याव्य स्थायाय्ये प्राप्त स्थायाय्ये स्थायय्ये स्थायये स्थायये स्थाये स्थाय

दॅवान्डिमात्यावर् नामहिषाधेरार्द्र चिवायाराहेमायायावे सेरावासे वर्जुर-निर्मित्रव्यक्षासर्वेद-निष्पेद्वी विदेर-प्यदावा बुवाका ग्रीकारेवा ग्री नविवा |रेगानुसाग्रदाना तुग्रसाम्राया यस ने दुर्पर प्रमुद्र है। यने या स हिन्यरसेन्यवे द्वेत्र देवाचेवा यावन्तर्ते हिन्य वे हिन्यर वे अधीत्रम्याग्रेगाय्यायव्यायम्यार्म् न्यान्यवित्रः प्रत्रेयायाय्याग्रहः कुःसधिदःसःहेर्-रु:चयःनरःवशुरःनःधिदःदे। ।गरःर्देवःगठेगःयःवरुः नंदी महिशामिं दर्रे विशमहें दारादे या मवदायर श्रेन श्रेन महिशस लुरी कि.लट.कि.टट.वर्चश्राचे.ज्ञा विर्चश्राचेतु.हूर्याकुर्याकात्वरी.चतु. हैंग्रथार् है अर्वेट न हैन्द्री नियम्ब अ शुराया है या श्राया स श्रीया यायमानेमानहें न्याक्ष्मानुदें। निवेष्ट्रीमानेमान्यायप्त्रामाने गिहेशहिन्दिं वेशनेशस्य व बुन्य वे ने ग्राया सामित वे विवाय व वे क्यापानिके से यर्व सुयानु सुरापाययाया सुरापरि वे या गुनाने सु नुःषःश्रेम्राश्चर्देःबेश्वारायदेःष्यदःत्रस्रश्चरःदुः गदःवेगःदग्यायःनःदेः ह्वार्याधित्। श्चित्र न्द्र हुन्यो श्चित्र न्याद्य कर व्यव व या वे व्यव व या व यायाने ह्या अवि हिंया अप्यार्श्वेत प्राय्ये पाया उत्यापित प्राये श्रिमा अर्दित र्अः शुरुषायाः स्वायायिः हिंग्यायाया गृत्वः क्षेत्रायायायी वार्वे विया गर्हेरः ह्वार्था श्री ह्वां त्यां वे ह्वार्था उव प्राय्ये व्यायाया व्ये प्राया व्यवे विष् वयः वरः वशुरः वरा दावेयः प्रवेरे देवः द्रा सर्वे खरा वरे दे वरे वे वे राष्ट्रीयः र्शे । प्दरे वे हमार हेर र्रे रेमार या सप्तर हैं। । हे वे हि र वे दा हमार यशः वृद्दः नदेन स्वरं सदेः स्वरं । । द्रामा स्वरं नुः ने सः सः सद्यसः तुरक्षे त्यूरविरह्ग्रायार्वे द्रायते द्वाया द्यायया यह विद्रुत्यर वयः नरः वशुरः र्रे । देवे धेरः वेशः शुः नः यशः नश्वनः पशः वः द्वाराः यः वेशः यदे ह्याया ग्री ने या या हे दा ग्री ह्याया यया ग्रूट वर्षे वे या धेवा ग्री दे ह्याया वे अप्येव वे । पाय हे कुर ग्रु अवशह पाय शुर में दि रा है। वरे हिर नेवे कुवे हो ज्ञा ल ह्या य छी श्वायर र हुय वयर ने सूर वहें दायर वया र्शे विन्ता ने प्यम् साधित है। याम यी श्रीम प्रमे वस्र साम साधित स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्व न्रहें न्याधित्। विनेत्राचे न्यासे न्याया स्वयं ख्नराहेशासुर्नियापातेने ने नहें न्यायशास्त्र स्त्रुटारें। । ने ख्रासाधेन न वर्देरःवद्वाःद्रः श्रदः यः श्रवायः याष्टः वर्हेदः यरः ग्रुः वरः वशुरः रेषि ।

ह्यायाशी नेयाया हे या न्यया मी न्देर्याशी कु ने या धेव हे न्व प्यया नर न् कॅर्नियंत्रे भ्रीत्रे में विश्वान रिश्वा में कि के निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा के कि निर्मा के कि निर्मा कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्मा कि निर्मा कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्मा कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्म कि निर्मा कि निर्म कि निर षरःहग्रभःतेःहेग्रभःमःश्वेतःतुःवर्शे नःउतःषेतःमवेःश्वेतःवेशःग्रानःन्हेतः यने या निर्मे श्री इव या प्रमेषाया उव दि प्रमान । प्रमेषाया उव श्री । हैंग्रयाययात्रे ग्रुवायायाय्येवाते । दे भ्रुद्रात्यायायायायाया । या ग्रुवा यदे ह्वारासाधित दें विरामन्द्रायम् हुर्वे । वाय हे वहेया या विवाहित यशः हेशः द्यापी क्रुरः द्युरः रें वे व दे भूर वे पश्वापि स्था न्हें न्यं के न्त्रे व्यक्ष मुख्य के वाक्ष स्ट्रेन्स सके वा वान न्या वस्त्र नर्डेशःशुःकुं हेर्'र्रा वन्नशःतुःहेर्'र्रा क्यायर'वयुर्'नहेर्'ग्रीःश्चेर' वेशनन्ता देनविवन्तर्षेत्रमायाकुः अधिवन्तरे धेरावेशन्तरा से ह्यान दे'द्रवा'क्र्य्ययाय्ययादायद्द्रद्द्रद्द्रवा'द्रव्ययःतु'यःश्रेवायःयःश्रेद्र्'यदे अधिवर्ते । हिः क्ष्रराधे श्रेन्दे विद्यान वाश्यावर ग्रुवान द्याश्यावर वेत्रम्युवासने हेत् कु त्रायव्यय वृते द्रिय से देवे वा वार प्रे स्थर ग्रथयःवरः ब्रेट्यः इं अः क्रुरः वर्देट्यः देवे व्ह्ररः व वि । व अः ग्रथयः ब्रेट्यः भ्रात्युम्। क्रिक्स्यराग्रीः श्रास्थ्रत्यायार्थे वार्यायाराधिताराने वार्याया बेद्रद्भारत्युर्दे कुल्ययात्रद्भारते विरामे ।

ह्याश्राणीः नेश्वारा हुदाबदासादेशासरावश्यूराहे। देवाहे ख्रानावे सा धेवर्वे वेशाइन्यर्न्य इति द्विराधेराधेराधेराधेराधेर्या हिमासे। यदेव शुअ ग्री श्री रुषायय देया पर्या स्वाप्त व्याप्त विद्या में स्वाप्त स्वाप्त यथा त्रे त्रयामी हैं या या प्रमुद्दे प्रायम् या यह दे दि या स्री । दि स्था तु पर्दे द पर व्हर्त्रायर अर्देव शुअराय मुहेमा त्यश्च विश्वास है। देमाश्वास साधिव है। मार गी भ्री र अर्देन शुरादी र र र्देन र या यथा था या विष्ठिय । या यर या श्री पाया के के जिया तर्दे न में जिया अधिव है। इ.च.या के वाका सदे पहुंचा साम्रक्ष उन्देश्यर्देवर्श्ययाधीवरहे। देवर्द्देश्वरायाधीवरपवेर्धेनर्दे। निवेर्धेनर ने हेन हे ज्ञा हुन हैंन प्रमाह है। प्राविद र ज्ञान प्राविद्य प येद्रमानेयानुमानायार्थेवायाम्हिः सूद्रम्द्रम्याननेव्येष् । वायाहे यर्देवः शुयाची पत्रयान्य या सर्वे शुया वे या में दि पर्वे भूर सर्वे शुयाना याद्यभानु त्यू रामाद्वे रामाद

ध्यानावन या अर्देन शुअ ग्री मा सूर ग्री र पाने रेना या पाने से भी दे वर्षायदे अद्भाद द्वेयाय उदासदेव सुसाय गृहेगा हेराय द्वायायाद गी क्षेत्र संभित्र विश्व स्ट्रिंट सम् सुदे । याय हे वें म हे द त्य श्री याश सर्वे वे वः अधिवः है। ने हैन वें र उव निर वर्षे वा प्रवेश हो र रें। विं र वे वें र निर्मा <u> ५८.५चेष.स.४२.लूट.सश्राश्ची विस्तिरेट.ल.श्चीमश्चाये हेश.शे.५वैट.</u> नवे इत्र भर्दे त से द स्मर विश्व र देश । वाय हे वावत हैं वे वा दे वे स न्रहें नित्री । पाय हे ह्या अप्यहें व स्य स्था स्था व स्था व स्था व हो हे वे वर्त्रेयामारुम् हैन्न् से विदेशमाने से महिषा शुन्नमा सम् सुन्याया व्यूट्रेन्स्य अ.ज.र्ट्रेन्या ज.ज.श्रुच्या अ.च.श्रुट्रेन्य ब्रेट्रेन्य स्था श्रुवा स्था अ.च. र्शेयाश्वासासीन्य से प्रमुद्दान्य हेन्द्र् इत्यास्य होन्द्री। हे स्नून्द्र यहेन्यदे र्वे र-५८: वे र-७व-वाः श्रीमाश्रासदे विद्योवाः नाचिमा व्यश्र खूमा सः ग्रुनः सः वे ः हेशसुर्पन्यापर्देविशप्यकेश्चेत्रेशस्यायात्रे। याद्योधिरवेदा देशस्वेश धरदीः हें प्रश्नित्र वित्र प्रत्ये वित्र प्रत्ये क्षेत्र क्

त्र्वेयानायहित्यात्रेहेशस्त्रेहेशस्त्रान्धेतायि क्रुप्ताचेत्रेत्रेत्रे विश्वास्य क्रियायात्रे क

याते ह्वाराप्टरह्वारा उत्राचे प्राया धेताते । विदेशहर श्रुवा कुषा वाप्टर वेदुःये सम्मान्यायावे त्यायायायामे द्वी । दे नवेव र् मावव पर देया सर्वित् । वाराधराहेशाश्चार्यवासर्वेत्रास्ते कुते त्वेतास्ते ते प्वा क्षेर्-र्रे-वेशन्यरम्य बुर-वर-वेर्-ध-दे-व्यवार-वी-ळे-ब-द्र-ध-द्र-हेशः शुःदर्वे नायार्शेनायायार्हेनायायरा हो नायाने वे के त्रवेतायायायायया थेता कु: ५८: कु: उव वें वें वा ५ इ५: यर ग्रु है। वें वर्श्वे ५: यर ग्रु वः ५८: हो । यर होत्रय धीव वया दिव हे ग्रायय यर हा न दर ग्रायय यर होत स्थालिव ज्ञारा जाया हे स्था क्ष्रम्य दे पदी क्ष्रम हे या पर्ची स्प्रमाया स्था स्था है। र्रें र्रें र से न्रें न प्राप्त प्राप्त विष्ठ हैं प्राप्त के वे नार्रे ने धेव प्रश्हेश शुप्तों न मन्द्र संयय श्रेंद्र प्रवे नाह्र के नाय केन् ग्रे-कें कें राजा हैन्य राधी ग्रिके

हेश्यः मं ने देशे में हिश्यः श्राः पर्वे ना व्याः में ना

ळव्यायाधेवर्दे । १ १ ५ ५ दे से ५ ५ ५ ४ व्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स वर्गुर-र्रे । वार्रें 'र्वे त्य श्रेवाश ग्री 'वाठेवा श्रेवाश । वाद्य हस्य श्री हेश वर्त्ते हिन् । या स्वासामाना यस व्यवस्था स्था । ने व्यो श्री मान वा स्वास्था होत् सेत्। । वार वी हो र व र त्र स्थय ही हे य सु दर्शे न र तें र सें द य र्शेवार्थायश्यार्थे ते दिराञ्चेशातु हैवार्थायर हो दायश्वर दे हिटावार्डवा स्ट्रा ठवःग्रीःदेवःनश्चनशःमशःह। देवेःश्चेरःगर्छः वेःर्धेदःमःहेदःयः वेषाश्चाराः हैंग्यायायर होत्रयदे यात्रवाहें याया धिवा हो। यक्केत्र हा क्केत्र होत् हो प्रदेश वर्ते निया स्था में में स्था स्था न सुन स्था ने निवित में मान में मान स्था निया है। ने निवित में मान में मान स या । अर्क्षेत्र त्र भाग्यया हो दार्थ व रहे दा । वहीया नाय भाग्य दे अर्क्षेत्र मुन्। विश्वेषासेन्छिन्न्। प्रदेशाम्बेषाम्बेषायादेषाम्बेषायादे का वयावःवियाःयशःहयाशः ५८:हयाशः ४४:५:वयुरः श्रीःयादः र्वेरः ५८: र्वेरः ४४: यःश्रें न्यायायावे साधिवाते। यदे सूराह्माया वस्या वदा सुवा स्व ग्राबुद्दान्द्राद्द्रित्राच्याद्राक्ष्यात्राद्वी । वित्रात्यार्थेषाव्यायाद्वीः कार्यादायीः क्षें त्राग्यान्याया होत् हेत्या अर्वेट हैं। दिवे हिर वहेवाया याव्य हेत् यशर्देव नहें दाराधिव दें।

यावन प्याप्त वित्र मित्र के का वित्र प्राप्त के प्राप्

इवार्ग् न्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्य व्याप्त्रान्त्रयान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्र्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रयान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्

नेते महिन्द्रमास्य स्त्रीत् स्वास्य स्वास्य स्त्रीत् स्व

श्ची मार्थि मार्थि स्थान्य मिल्या स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

ने अन्त्रा पर श्रुमाया वर्षेयान नत्त्र न्त्र नम्भन मन्ता हिमासा न्यायादायी विद्रार्श्यायकी विषया है । व्याया है । व्यायादि । व्याय धिव विदर्भे र वे ग्रुप्त अ धिव वे । हे अ शु ग बुद नर ग्रुप्त द्वार पर होत्रयंक्षेत्रा होत्र देवे वा देवे या धेव हो। यहे या या व्यव यो दाया या वयःवरःवशुरःवदेःधेरःर्रे । वससःउरःर् लेसःधरःशुःवःदरःलेसःधरः <u> बेद्रायक्षेद्राद्राप्त्रयाचे वास्त्र बेद्रायाचे वास्त्र विद्रायाचे वास्त्र विद्राया विद्राया विद्राया विद्राय</u> ध्रैरःर्रे । १२:५म:वे:महिश्रःश्रें:वेश:देश:घर:व बुद:व:दे:५म:देश:घर: ग्राबुद्दान्य क्षेत्र व्यक्षातु क्षेत्र प्रदेशित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यक्ष प्रदेश क्षेत्र व्यक्ष क्षेत् गहिरार्श्वे अप्रदे के मानी प्रत्य राष्ट्र है विना धेवा नाय है मान्वर पा धर क्रयायाष्ट्रियार्धेन्याने स्थान ने क्रयायाय स्थान में किन्न ने विद्यास्य <u>हे भ्रद्दा स्थाद्दा ध्रदायदे हे या शुद्धाया या दे । यहिया या ३ द्राप्त</u> स्था न्रहें न्याने व्यवस्थिता स्वाधिता हो। व्रह्मेया स्वाधिता बेद्रमदे भुर्मे । क्रुप्यदे नोग्रवा होद्रम्य विवास सम्पर्दे द्राय वर्चश्राचे.श्रुट्रायटावर्चेट्रायदुः ब्रुट्रायविकात्रश्राच्याश्रायाः धीव हीं । पाय हे कु हे द हे या शु द्यापा यर हो द यदे कु धीव यदे हिर हेशःशुःन्यग्रायःहेःनरः नहग्रयात्रयः नहें न्यरः नुदेः लेखा ने व्हरायरः रैग्रायायायीताने। ग्रामी धिराग्याने प्रह्वियाताने। दे ह्यायायीत्। हेरी धिरावेता देत्यश्रावे देव देव ह्याश्रासाधिव हे। बे केंस्य मुद्दे द्वारा के

धेव्यवि: धेर र्रे | दिवे: धेर वदेर हे या शुर्मिया या हे यर या न्याया या यर देग्राय या या ये वर्ते । कुं या यत्रया नुते क्राय दे यह र त श्री द ग्रार ह्यायायविकासरार्ट्राचेयासवे हिरार्ट्रा विविकासराय हैरार्ट्राचे दा रेजे अधीव है। देवे के देवे कु अधीव भवे श्वेर में। । वार वी के देर देव है। ख़ॖॱज़ॱख़ॱऄढ़ॱय़ढ़ऀॱढ़ॆॺॱय़ॱढ़ज़ॗॖॖॖड़ॱज़ॱॸॆ॓ढ़ॆॱक़ॆॱॸॆ॓ढ़॓ॱॾॆ॒ॺॱॺॖॖॱॸय़ॹॱय़ॺॱऄढ़ॱ र्द्री विषयः हे स्पर्क्ता स्वर्धः स्वर्धः स्वरं स्व माल्वर प्रमार्थे अप्याधिवा । पे स्थान विभाग स्था से स्थान स्था से बेन्द्रक्षे प्रत्युत्त्वर्षेत्रन्। ने हे बाख्य न्यापिये कु प्येव की प्रव्यव्यव्यन्ति वर्त्रेयामन्त्रे साधितर्दे । गायाने क्याममान् र्रेत्याम उत्ति भूगा साम्मान्य राक्षेरके हे अरु र्यायाया है याव्य र्याप्य के या अर्केर या है अरु र्याया यरकेष्यर्वस्वस्वस्वस्वस्वर्धित्रं वेषा देष्वविद्रं देषेहेस्स्युद्धान्यवायः वस्थारुन्या नुर्देन्द्राचरुशास्यार्द्रन्यरात्वा ।सर्देव्सुसाग्रीया श्चे र्डं अप्त बुर प्यर पदी प्य दें त्र श्चे श्चे श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त अन्दरः धूवः भाषिं वः इस्राधरः दुर्धे दः भाष्ट्र । व्यवः । अन्दरः धूवः भाषिं वः इस्राधरः दुर्धे दः भाष्ट्र । व्यवः । यदरः नृश्चित्रः यद्यात्र अश्चित्र । ह्वा अः व्येत्रः यत् व्यात्रे व्यते । यशवयुररम्अदिन्देशेष्ययुर्वेशस्यापरदिन्दिर्धरेर्दे। यदे सूर कु सूर वार वश्व के यह या न के द धे व विर ह्या पर न्धिन्यान्द्राच्यायाधिवाष्यराष्ठ्राचान्द्राचेन्याययावे याधिवाने। येन् व्याप्य विद्या क्ष्य क्

म्बित्यान्। माईमासुन् उत्तर्ने स्मित्रे मित्राने स्मित्राने स्वान्य स

दे 'क्ष'व'वे 'क्र्य'यर' क्ष्व'य' क्र्य' क्ष्य' यहें द्र'यर' क्षे अ'तु वे 'क्र्य' यु वे 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु वे 'क्ष्य' यु वे 'क्ष्य' यु 'क्

हेशासु प्रमापाप प्राम्हेशासु प्रमुद्धार प्रमुद्धार प्रमुद्धार । यात्री त्यी माना माना हें नाम स्थान न्यमात्यः श्रेम्यायायन्। । नगमायायाने नविवाने त्याना । विनेत्रास्यामी वर्देन्'मःहे अःशुःन्ममा'मःवःश्रेम् अःमःश्रुनः वन् ग्रुनः नश्चन्यामः स्रोनः दे । वर्रेषामान्वम्यान्रह्मामदेश्वेरम्या ।वर्षेराद्धाः वर्षेत्रम्ये हिःसन् यदे पर्दे द राष्ट्र के वा प्यक्ष के विकास में विकास के व नगमासररेगासर होरी दिन ही में नगिरेश गास दममासर ने हें र धराश्चे र्रेव में इस्र अवे समय पिष्ठ । दिसाम दर समय पिष्ठ । सरेशर्स्ति । देखान्यारस्वयम्बिनाः हुरेशः हे। हेशः द्यानाः नादः दुःसवदः गडेग', हु: देश'य' उद: श्री: में 'न' दे 'न से र द र ने 'दर्कें न' य' खश क्रें न' न र हे द खा र्शियायायि देव त्यहिव या सुरत् स्री देवे त्यहिंद्र या ते हियाया हिदाया विद र् कुर्यर हेर्यं धेर हे अ शुर्यायाय यश्चर प्रायाय से व वि

स्वीत्राम् स्वार्ण स्

ग्वित में देव में हे या शुर्मिया सद से हा है मा शुक्ष मा

क्ष्र-खूट-व-द्या-ग्राट-पेटिश-शु-श्र-श-चर्टिद-ध-हे। दे-द्या-श्रुव-धर-द्रश्रासंदेर्ट्स्ट्रिंस्याईन्यस्थ्रानुद्रि । यहान्दर्न्यत्युर्वेशः श्रूरामः वर्देशके स्टर्मे नश्रुव नर्देश लाहें श्रावशाम् शास्त्र स्ट्रा प्रमुव पाणेव र्वे। । ने प्यम् अयानिया । अर्देन शुअर्देन नम् हे अन्यमानमा । प्येन क्रेशः ज्ञानाशः प्रशः महोत् । नारः श्रुनः प्रमः वर्षे दः प्रवेशः श्रीः चितः धर-र्-तुश्रासदे के शाउद-रे-तान्सून धर-तु-वदे के शाद्र दिन्याया वदे सर्दिरशुस्तरमा हेस्राशुर्द्यवारम्बर्मा खराद्रमा व्यवस्थान क्रिंशःवाववःग्रीश्राःशःवश्रवःवर्षे । देःश्रूरःवःवश्रुवःयरःग्रुःवःविवःशःर्षेःवः बेन्यम्यक्ष्र्ययाधिवार्वे । निष्युः साधिवावार्वे नेष्युमः सून्य से। निम्यः श्चायक्षत्र, से दुरारे । वियायाह्यामें । क्ष्यायावयायर ग्रायदे देवा श्चरायर भे हो दार्दे विश्वाया भू तु द्वाराय उदाया उदार द्वाराय या दार । ग्रान्या मुन्ये द्या थे व भे में में मार्थ प्राप्त मार्थ के स्त्र मार्थ के स्त्र मार्थ के स्त्र मार्थ के स्त्र श्चरः ग्राम्यायः प्राप्तायः प्रवित्ते वित्र श्चे रामाने वित्र वित् ल्यान्यत्रिस्त्रेम् स्विमान्यान्यस्त्रास्त्रे। नेप्त्यानीमानिस्त्रे स्विमानीमानिस्त्रे नर्यानिक्षेर्रिक्षान्य स्वापानिक्ष्यानिक्ष्या

र्श्विम् अप्यति अप्ते । विष्य अप्याप्त । विषय । वि

ने भ्रान्त के नाहे अगादि स्टानी हैं के निर्मान के स्वान के स्वान

नश्चन गुःषेव नः क्ष्रव नश्चन गुदे के या गुः यश्वन वेय दे श्व र पु यो यहन ह्रे। भे ह्या परितर्शे किंश समुद्र परि दिसारी उद शी दिये से परि हिर र्भे । क्रिंश उत्र नश्चन जुदे ह्माश र्ने द सेन । क्रिंश उत् नश्चन जुः धे द स क्ष्रवर्वे अने नुवर्णणेवर्षेवर्षे अन्तर्भवर्षे अन्तर्भवर्षे वर्षे वर्षे वर्षे धर भे नुदे । वाय हे वाहेश गा धेव व वे भ्रुव धर वाहेश गदे । वरे य नश्चनः ग्रुःनश्चद्रः पः न्यः नडदः नः हेनः ने अः ने यः परः न शुनः नरः देवाः हुः र्श्वेरःग्रदा देःवश्चः देरःवश्चरा गेरःदःर्रश्चात्रव्या डेगा में अप्रमान पर्देन से प्रमुम्। । गाय हे न सून ग्रुम सुन संहिन हैं विश देशन बुद में दर् शुर्व दर्व शुव चेद दर्व प्रदेश हमा शर्थ श्रिमा शर्थ वयद्याचेत्राचेत्रचे स्वीदानु देयाच बुदा गुरुषाया व्यया देवा के देवा विष्टे नश्चनः ग्रुनः मेहेतः यः नयः नवदः नः हेनः ने सः ने सः न वुनः देगः हुः श्चे नः न वेः ह्याश्राभी द्रोत्रान्दे द्राप्ते देव द्राप्त स्वाप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्र प धेर-५मः नरुवन्य-रेग्यायान्य-सी प्रमुद्देशि

देग्वित्रन्त्रभूनः ग्रुन्देन् र्याययम्। ।देग्वित्र हेग्यं स्वायायः वतः स्वय्यायः भूति निहेन् र्यादेश्वेतः हिन्यायः व्याप्तः स्वय्यायः स्वयः वर्यः वरः वर्यः वर्यः

द्युर्रात्रास्यस्य न्युं त्ये स्थान्य न्युं न्य

वस्र अरु दिन्न स्वर्धि र विश्वास्य विश्वस्य अरु स्था धेत्र स्या से द धिर वेश र्देव र्वे । नि स्व व रे के श्री स श्व परि द मे श न श्व न श्व र परि यशमान्त्रःक्षेम् अस्ति स्वरंत्रः स्वरंत्रः स्वरंत्रः स्वरंति । ह्रमः हेरः यह यः श्री अः यदि रः नश्चनः ह। । अप्पेता हे नर पह्यानशहे पर्दर श्चाया वस्य उदा हे या हा नश्राम्यस्य उत्रासाधित संदेत ह्वासासु नहें त्राचे साधित हैं। । ने दे सा गुन'रा क्षेत्रस्य उद्'ग्री विद्या शुः क्षु प्यट वर्ष या देश ही र रस्य द्रा नरदानदे सुन्या वार्वना धेवा धेव सदे सुन्दे । वाया हे सम्रा स्वा ठेरायायात्रस्यारुट्यो सुर्यासुन्दान्यरुर्यासे नहें दाने दे दे सुरान्यस्य उर्-ग्री-विरमासु-सु-पर-पर्मायि-द्वीर-वसमाउर-साधिव-माहेर्-दे-सेर र्ने । हे सूर से द दी वार वी के त्दी हिंग्य वारे वा धेव पदे हिर बस्य उर् अप्पेत्र मर्दे ले त्र दे भूत ते माल्य या पर हिंग्य राम्डिम प्येत माहित र्ने । वस्र रुद् संधित स्र रेने । दे स्र त ते वस्र रुद् संधित संसे वर्देन्यरविष्ट्रर्से । के क्षेत्रे क्षाव ज्यानकवानवे क्षेत्रं दिव्यूरा है। । श्रेन्याय हेन् ग्रेश ह्याय हेन् यस्य यदि श्रेम वे स्थाय प्रिय क्षेत्रक्षेत्रान्तरादशुरानाने साधेनामदे भ्रेत्रान्नात्रार्धितामराने हेत्रायाधेना ययाते किया थे यह वार्य दिये हे स्वारित है राम हिन् हु स्वार्य है है है <u> ५८:ज्ञयः नः वस्र अरु ५: क्रुं के ५: वस्र अरु ५: या प्रेस् वे ता दे । या ५ वस्य अरु ५ वस्य अरु ५ वस्य अरु ५ व</u> नरुवानवे देव श्री श्रीम्यामिर मार्थिन स्वीत स्वीत स्वीत स्वीत द्वीत स्वीत स्वी ह्या क्षे के ह्या प्रदे ही र वे र प्रायविव हैं। । श्वावे र प्राया या या प्रदे रें व हिर क्षेत्रण्यः श्रुन्द्रित् श्रुव्या विष्ट्रम्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र

ईन्। प्रस्ति स्त्रीय स्त्रीय

प्रतिर्म्वाह्म स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

गिरेशाग्वसाम् प्यान् स्परास्त्र द्वाराया चे केंसान् सुराया से प्रमेराम स्त्रान् निक्तिने के किया वात्राय्य राष्ट्रे व्याप्त विक्रा नःयःश्रेष्रभागःत्रस्रस्यः उत्रिंद्रान्दिः भ्रेत्रः निष्ठाः नित्रः म्रान्ति । नःभुःतुर्दे। विदेष्यवदःसुम्बर्गाःस्त्रेन्द्रा । स्रेष्ट्रेन्ष्रस्य उदःसुनः वर्चेत्र-त्वरा विदेश्वर-हेगा-वेंश्वर्शनिक्षणार-स्वानुः ग्रुवः वर्चेत्रस्यसम्बन्धस्य । वाराविवामहिकागायार्म्स् स्वास्ति स्विवाका ग्रे के रायाधेव पावे प्राये रावायी गा बुर ग्रु हे पृष्ठ से पे वे खुव वर्चेत्रसर्वे । श्रुवःसदे द्रोत्रत्वेत्रः क्रुवः क्रे त्रचीः चे त्रवाः वी श्रः श्रः द्रदः स्वेत्रः नु न भू नुर्दे । ग्विव ने परे भू र भू न प्राया थे वा श्व पर्ने व पराया था धेव'राया'देर'ग्राट'मेथ'ह्रग्या'रा'रासुन्। ।ग्रावव सीयासुर'प्राट सुर्या वःवर्रेत्। विवाधः हे सिवाधः शे रहेन र न सूनश्वर वे र सून होन धिवः विनः કે 'શ્રે' શુંવાયા શે 'કેં યાયા બે વાયા છે વાય કે र्ने॥

र्श्वाश्वाश्चित्रः के श्वाश्वाश्चित्रः के त्राधित्रः के श्वाश्चित्रः के श्वाश

रेग्र राया अप्येत है। दे त्या से दे प्यें दा सामें ग्र राया से सामे विकास के त्या से स्व वेशनिर्दिन्यर होन्दि। । गाय हे ने र नुन्य न्य विषय न वश्च न हार वेन्द्रनेन्यानरद्यत्रेन्द्रम्भः मुज्यान्य विवास्त्रम्भः स्तु द्युरः देश हेशासु: न्यम् प्यरः ग्रु: नः नु: नः यः से सर्वेदः न्यरः यदः देवा सः यः यो नः ने। हेशा शुः न्यवा या से न्या प्रस्थाय स्वयुस्य विष्टि से स्वि । ने विष्टि से स्वि । यर्दे विश्वानित्र भे ज्ञान्य स्था द्विनाशान्य ज्ञूट न्य र जुः क्षेत्र है। दे प्यट के शास्त्र र १९८७ वर्षे । वर्षे रःधेव प्रवादा प्रेच प्रवादित । विकास क्रॅंश ठव ग्री इस धर प्रविषा पर ग्रीत पर दे साधिव दें। । ते स्ट्रिस व रे विषा केंश उत् मी केंश उत् नश्चन पर मुन्य पर साधित में। किंश उत् मी केंश श्रेश्वान्त्रः श्रुवान्यरः होत् 'दें' ब्रेश्वेरः दें। विश्वेरः देवाश्वान्यः ध्येवः हे। वर्रे यहें लेश ने हें द रावे ही र स्र र निव हों। । याय हे रे लेग रेग्र र र हिन्धिवाही न्यावस्थारुन्यासे सासर्वेन्यदे सुरार्ने । सार्सेन्यासी नश्चनः ग्रुः १८ । भेदः भेदे । ग्रेनः ग्रुनः ग्रुनः ग्रुः भेदः पदे । श्रुरः भः धुँग्रथः नह्रम्यार्थः भेर्द्रस्थे न्द्रभेष्ट्रा । द्रयः नडवः नवेः धुँग्रयः माडेगः मी गान्तः क्षिम्यायाधीवाते। येदे ग्रेज्ञान्यस्मन ग्रुप्ते प्रति श्रेप्ता स्थित स्य क्षेत्रायाधीत्रायवे स्वीर र्रेतिष्ठा येवे त्रेत्र त्रात्रम् त्रात्र स्वीत्र त्रिया त्रात्र त्रेत्र त्रेत्र त्र शः श्रेंग्राशः ग्रेः वित्रायरः ग्रुशः पदेः तुः पदेः त्रुतः ग्रुतः ग्रुतः वित्रास्तरः ग्रुदे देरःशः ध्रिन्यशः ग्रेः हो : ह्याः वः केतेः हो स्टाः अतेः हो : ह्याः व्यादः नी यः वर्टे श्रुट वर्र छेट्। यह द्यार्टे श्रुट से श्रुट है श्र

नेवे श्रेम कें भागवम हे न न भून प्रमा श्री । वेवे श्रीम वे व नेशाह्यन्तरम्, वुःनवे केशाउव नश्चन वुरःनश्चव पाःश्वे। यानः वी खेराने क्षु'धेद'रा'देदे:धेद्रा गहद'क्षेग्रर्गेशे केंश्रर्दर'न्यून्यद्राद्रदेशे बेद्राव के त्युद्र नर निष्ठु न प्राचित्र के प्राचित्र के का के दिया का प्राचित्र के कि कि कि कि कि कि कि कि कि नशुःनदेः ध्रेरः ध्रुरुः या न्यानउदः ह्वारुः ग्रेः न्वार्योशः वादा । यो दर्देनः यः यात्रयानार्हेम। १२ दे यो दावे या वे या गुरु। १२ यो क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या विकास न्येरव्यक्षाह्यायायाधेवाहे। यथाह्यायरावयानरव्युरावदेधिर रमा ह्या. हर्ना हर्ने यो या स्वया यर विद्यूर यदे भी रही । भी या यो स्वर ने प्यत्यान्त्र के वार्य के दिन्ता वान्त्र के वार्य वश्चर होते हे राय हो वाद्या वा बेर्'ल'बेर्'मर्म्स्इर्'मर्ग्य ।रेर्'वे'ख्'मदे'स्रवर्'ह्र क्षेप्तरोर्ज्ञाक्षेप्त्रमाक्षे व्यापाक्षेप्त्रमान्द्रे वियापद्या ह्वाक्षेप्र चुरासदे भुरत्वेराचुराय कृत्वे । विदेश्य भुग्ने गर्छे राष्ट्रेर दे विद्राय याधिवाशी निषेत्रायळन्त्रिन्न्याधिन्यायाधिवास्यावी ह्यायावी हे वरःश्वरःयशःदर्ग्। वर्षरःश्वेष्यशःशेःक्ष्यःवःशःवयःयश्वरःव्यःवश्वरः यरःश्वःश्वे। देःश्वःशःषदा श्वःश्वर्थःश्वेषःयवयःयःश्वरःयःयश्वरःदेः वेषःयःवविदःह्ये। विदेरःश्वेष्ययःश्वेःक्ष्यःवयःयःश्वरःयःयशःवश्वरः

त्री | द्रिः न्या वर्षे न्या वर्

हर्त्रस्थर्था । इर्थाह्र्यास्थर्भराम् वर्षान्यः वर्षान्यः धेर-रें वेशनु नरे हे क्षर नशय हे दें रश्य पाये व वहे हे नशय हे दिन्यामायाधीताते। यानायी भ्रीमा वयावसूम भ्रीयाया स्वयावता स्वीमा। पिशः ह्यार्थः र्श्वेदः दुः श्वेदः यथा ।देः चिवेदः ह्याशः दूरः द्याः च ठदः धी । भ्रुविन्यहेन् श्वाद्यीवन्त्रं लेखा । त्रिन्या हैं तें व्यन्या हैन् ग्रीका नाहवा क्षेत्रायार्थेव निवास्यया ग्री हे या शुरवर्षे निस्त्र स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स् क्षेत्रमात्रव्यक्षम् अःश्रुम् इत्र्री विदेशंष्यम् स्त्रम् स्त्रम् मात्रम् नवे र्र्धे न य र्रेन्य रायवे व्यवसात स्री दे प्रिंत हत ही हे सार्य वर्षे न हे र निवेत्र-त्र्व्यात्र्यार्थेत्यार्श्वेत्रपार्थे प्राथित्वयान्य प्रमुद्रानिये श्वेत्राया देशमंदी । प्रश्रासेन्येन प्यट वेट्र सं हुँ द्वान सं पेन मं ने पेन प्रमास थेव'रादे'हीर'इ'रादे'गानव'क्षेग्रायायायायात्रेन्'थेव'र्वे । इयायार इया हेर्र्र्य्यरायमाधेवावेरारे सेर्पावमात्वरमाये खेवाहवाइसमा ग्रम्स्राहित्र्र्विम्हो ध्रम्याधित्राम्राहर्ते विश्वाध्रम्याम्या धेव है। व्यव परि वर् नाम हैना परि ही र र स्था वस्य उर् र र सिर परि धेरःर्रे । डे.रे.र्वा.करःइशःहेर्र्व.वयःवरःवक्रुरःर्रे । इशःहेर्क्यः वृत्रायवस्थावत्रायाम् स्थाकेन्द्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रे। इसासाधिताया <u>षदःह्रुगनिवर्दःह्रुगर्षेदःसरःदशुरःर्रे विश्वाद्यःनवदःस्र</u>ुवःषेतः है। इसइसायापीदायाहेटाग्रीयानययानदेग्वीरार्से । हेग्स्रेप्पटापेदा हर्त्वस्थर्था ग्राम्स्य द्राप्त्र प्रति श्रिमाह्य हिन्दु प्रति ।

देशमंद्रिन्दुम्र्रेन्वा देश्चन्द्र्या नु प्रशुर रे विश्वापदि प्राप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्या हे<u>ि र ग्र</u>ी मान्द कें नाश यश पेंद रुद या श्रे नाश रा नावद इस्र श या पर वया नर दशुर रें लेश वया दशुर शुना शर्के वा में । शुना शरी रहें र यान्त्रः क्षेयाश्राः श्रायान्त्रः क्षेयाश्राः श्रूरः त्रमः त्युमः ने। ने प्रयाः इसः समः में नित्रं ते समुद्रमुँ वार्यायायायाँ दासे दाम वार्षे राष्ट्री या सम्मानिक विराम् ने पार्षित् पाश्चन पाने निश्चन पर शुन्न दे के अभी श्वे अभी नाम पान्य য়য়ৢয়৽য়৾ঀ৾৽য়ৢ৾য়ৢয়৽য়ড়ৢৼয়৽য়৾ঀ[৽]ৼৢয়য়য়৽ঽৼয়ৣ৾য়ৢয়৽ঀৢয়৽য়ৢ৽য়৽ৡ৾৽ঢ়৾৽ लट्यस्य चित्रः क्रिया स्था । स्थान्य स्थाने स्था । स्था । स्थाने स्था । स्थाने स्था । स्थाने स्था । स्थाने स्था । क्रेंत्रयर होत्। । समुत्र संदे सिंग्य त्य पेंत्र हेया की । पाय हे पदि सुरा समुद्राभुग्राबेश्वासामुग्रायशाहे। ग्रायाहे मन्द्रासे दाराहे हिदाया समुद्रामुनाकालेकानाईन्द्रादे प्रदे प्राप्यम् समुद्रापि मुन्यायादे लेका गु निक्षेत्राधितार्वे। । यायाने ने स्क्ष्रमायने त्यान् हो नासान हें ना का निमार्थिता र् कुवार्सेन वुस्रायासेवासायाधेन्यासेह्वायाहेन्दे वसूना वुस्रा धेव हो नेवे भेरा वर्ने खवर मन्दर हे रासी वर्ने ना नेवे भेरास मुक यदे द्वित्रामा व्यापेट्र हेमामा देवामा ना प्रेत्र हे । वित्र से समुद्र प्रदे द्वित्र मा ग्रान्धित ले त्र इस्य या ग्राव्य र् सुर् र य के र वे प्य र य प्य र ये र य वस्रभासाधिवायावेशाचेईदायाचिवादी।

र्षेत्रमान्यामान्यस्यायेत्रमाधेवर्ते विश्वान्तर्ते वित्रमायाधिवरि ने या ने विवा । ने वालव नि विश्वाय ने । । श्रे अ श्वर श्वें वा श्वर स्थाय गहिरायाण्या ।ह्यारासेरायराही त्यायायासे। ।ह्यायरान्ध्रा वशुराधेवा । वायाने प्यरासश्चरायि श्वीवारायार्शेवारायशायाव्याने। श्रे अश्रुव पदे श्रिवाश पेंद पर्देश व वा प्रव श्रेवाश से द पद्म प्रदेश । वर्रे सूर्यार सञ्ज्ञायि द्विष्य राया वित्र स्वे नुराय हेर्या स्वाया सार् दे श्रे म्वा याया श्रेवाश्रायायश्याववर पुर्वा वस्याया श्रेवाश्रायायायाया ल्रिन्यः धेवः व्याव्यः विष्युवः प्रदेः स्त्रिष्य अपन्यः व्याव्यः यः स्रे अस्त्र स्रे स्रे विष्य धेवर्सेन्ग्रीर्याग्रह्नेर्याग्रह्ने त्यासेन्य हेन् इसायर न्युन्य राज्यून गुर्नो नर ग्रेन्दी । ने सूर र प्यर यह र ने से वे हैं न पें न हैं ले स स्था ग्रह रेगा से ५ : सर से वे : इॅं न : एका में निर हो ५ : दें । इं : हे : हे ने मा साधि द : सा स म्द्रियासाधितासासेदासायाध्यदासाधितार्ते। ।सम्बद्धम्यासायासेदासेदा महित्। । सळवहित्याहेनाहित्येव सेत्याता । दिवर् सायायह्या सदि रेग्या ।ग्रारक्रेक्ष्ररस्र मुक्राये स्मित्रा स्राये रामे अनुक्रे स्वाया बेन्यकेन्दिन्देविषासम्बन्धित्रेष्यायासेन्यस्थित्यादे समुद्रायदे र्धेग्रयायार्थेन्याक्षे नेयाह्न क्षेय्रयायायेन्ययान्य स्था हैन है। ख़ॣॸॱऄॱढ़ज़ॱय़ॱढ़ऀॸॖॱॻॖऀॱढ़ज़ॺॱऄढ़ॱय़ॱॸऻढ़ॏढ़ॱॸॖॱॸॸज़ॱऄॸॱय़ॱख़ॱऄॕज़ॺॱय़ॱ यापराश्चरानरानुदे।

वर्दे सूररे वर्षा सेर्पाय सेष्य साय सेर्पाय से

रायान्त्रम्यास्त्रम्यार्यिन्यायेवार्ते । के स्रेयान्तर्ने के स्रेया र् प्रमुर् न भेतर् दें ले वा इश्या है र हैं भेतर भर हमा य पर निमा से र रायार्सेग्रासाम्स्रसायातुसारायार्सेग्रासायविदानु हेर्सेसानु वर्गुराना वे अप्येव वे । श्रु प्ययः हे या पर्चे त्तुव र्ये क्षेत्र । श्रु प्रयय उद शे कें या छी । कुःसधिदाने। नुसामन्ते नुसामन्ते नुसामन्त्रे न धिदायानुसामासाधिदामायाधानः सर्वेद्रानाधीत्र वे । इसामा हिन् से ह्या माया स्वासाया धारा से दासा सर्वेद्राचाने साधिताने। वस्र राज्य प्राचित्र स्वेद्राचाने स्वर्षेत्र स्वरंत्र स्वर्षेत्र स्वरंत्र स्वर्षेत्र स्वरंत्र स्वर्षेत्र स्वरंत्र स्वरंत् थ्व'रावे'धेर'इस'रार'नडर्'रा'यश'गानव'क्षेगश'पीव'र्वे। धिंगश'ग्री' क्रॅशने हेन इस या मुख्य नु न् हो से सबुद यदे हैं मुराय पेंन या न् बेन्यन्यस्य विकासिकात्राम्य विकान्य विकान्य विकान्य विकासिकार्य रे ला पर मा शुरु मा शुरु नु ने निर स शुरु मा रे । से मार स शुरु मा ळॅर्नरने हेर से सबुद रावे से वाका व्या केंद्र साम्या केंद्र बेन्यहिशाग्रन्ते। ।नेप्तविवन्त्यस्त्रस्ति स्त्रायाकेन्यन्यहिशा गायाधरान्त्रे नाने हिन्दी । यार यो के प्दी क्षूर से ह्या स हिन्दस स्वापद यःश्रेष्यश्चित्रेष्यश्चित्रभाष्यः वित्राचित्रः स्वेष्यः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः मुंग्रायायायेत्रपाहेत्रचे याते प्रायमेयायम् हि सूमाय हिता देवे धर्मार्भेनिने सेन्सिनेनि । श्रिम्या श्री के यान्ता में निमानी निमेरा

नर्हेर्देशमानिवर्त्त्रभूवर्यमानुः भेष्ठ न्त्रास्त्रेष्ट्रभाष्ट्रभेष्ट्रभ रेस्रायानविदान्नेसाद्यान्नेरामीयाम्चेदासन्तर्मासन्तरम् विवायामीया र्वे । प्रसेट या देशे अधुद से पार्थ यो पार्थ अधी से पार्थ प्रति साम निवन निवन के न गुः धेतः प्रदेः भ्री स्वाः क्षेत्र या प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः नःयशः हुदः नर्दे । हुशः सदेः हुदः हुना सदे । हुना श्वेः अद्वन हुः धेवः सदेः धेरर्से ।हग्रेहेर्यानायमा हुरानदेष्टिर्से । भ्रेह्यापदेष्टिरहेयाना यश हुर नर्दे । हैं यान यश हुर नदे हुर से ह्वा पर्दे । ह्वा से रेवा यर ग्रुप्त अप्येत प्रदेश केर रें विश्व ग्रुप्त इस्र अरे। देप्या ये प्रदेश क्षेत्रायासुः नरुद्रायादी वालया ग्राग्न्या द्वारा । ग्रियाद्वराया । ग्रियाद्वराया । त्रः क्रियायश्चात्वा । श्चान्त्रवा क्रिया क्षेत्रवा । दे प्रत्या क्षेत्रवा । दे प्रत्या क्षायाया र्शेनारायद्री । ने स्ट्रूर्न् हो न इसरा ना हत कि नारा न्याया न निष्ट्रा स देशमा हेन्द्र महेन्य महा हे ने स्वार सह्य हिंग्राय विद्या हैया । विगास मुद्र पिते मुँग राया पेर्प पारे निश्च ना मुना मुना मुना स्रोता स्रोता स्रोता मारा यदः समुद्र-पदे मुँग्राया से दादे। गहित्रा न सुन गुःसे दाया से दारा हित वे निर्मे निर्मा श्रम्भ मार्थे ।

याहेश्वःस्ति। सद्युवःस्तेः र्ह्येन्यश्यः सेन्यः स्त्रे। व्युवःस्ते र्ह्यायः याव्यः स्त्रे व्युवःस्ते र्ह्यायः याव्यः स्त्रे स्त्रे स्त्रः स्त्रे स्त्रः स्त

ख्या'स'इस'स'ख्'र्से'ते'याहत्रकेंयास'सम्रा त्याय'न'हेट्'र्'स' देशन्त्रः है। वे र्क्ष्यामी मुर्ते वेशन्य दे व र्क्षणार्मे । या हत् रक्षणारा या र्श्याया यायदी द्या वस्त्र उद्यापदा वहूर यर यद्देर यदे वार्य वाडे या हेता। रेग्र रहराह्य यथ नेया सर्ग्य हिंदि वय मुन्दि है या मिष्ट्र या स्वी । या र षरः म्राम्या विवा वेया भेया भी विषेत्र वारा स्वाया प्राम्य सुव स्य प्रिंत भी दे वेशन्त्रानायार्श्वेषाश्रामाने निह्नेन्यमायर्नेनायाः हेते हिमावेषा नन्त्रात्याचे र्कें अधिम् । नाया हे नाम धिमायायायाय क्रव हिना नहिया हु। नर्हेन्यन्वात्वराम्बर्गान्यस्य विवासम्बेष्य विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद् गुरुष्य हेन्द्र अहत् गुर्मा यहत् गुर्माय हमाय हेन्द्र हे के के या व नःधेवर्त्वे वे वा ने निविवर्षे कें अरह्मा अरहेन खर्या विषेता हरे अरमर सर्वेद्रासाधिता । द्रमेर् त्र श्रुप्य सेमामी म्बुद्र ग्रुस्य धेव प्राद्र सर्वेद शुराराकित्र्त्वायश्रभुदि ह्रागुर्साधेदाय। यश्रागुर्साधेदार्दे विश देश्याधिवार्ते । देशिश्चित्रावर्दे द्रायत्रावर्दे द्रायाचिवा छे दार्दे द्रायाचिवा छे द्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायाच छे त्रायाचिवा छे त्रायच छे त्रायाच छे त्रायाच छे त्रायाच छे त्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायच छे

यदे र में कें या मी अर्बन हे द है ने वा प्याय न से यह या नः ठतः वे । ने विगामिडेमान्य वे ने कें असी अक्व हैन सेन संवस्था ने कें स मी अळव हे ८ ५८ व्यव याया वय ५ या थे व या हे व हे ५ यो व वि ने^ॱ१४'त'ते'सेग'गे'ग्र्डर'तुःस'भेत'संहेर'र्रःसर्देत'सुस'स'भेत'संहेर' <u> न्यान्नाक्रम्यदेःयान्रम्क्रियाश्राण्येः अळ्मान्नेन्ये मुन्यहेन्याः सूराधिनः</u> क्री विष्यम् निष्य के संस्थित हैं। विष्य है विष्ट्रम विषय विषय निष्ट्रम विषय के निष्ट्रम विषय के निष्ट्रम विषय वियायान्द्राक्षयायाः श्रीः सक्दरहित्र र्ने यायाः श्री दिने राद्र स्वराह्य स्वरी धेरसे ह्यायें । हैं यायायया हुरायदे धेरसे ह्यायें वियाहाय सुत्रुत् याययाहे सूरादेयायर क्रें विता र्यायेय प्यायायाता विवाह नरः धरः महिनाः यः बहुना । विदेरः वे : तुः स्राधेवः धरः देवः महिनः हो तुः स्रवेः यर वर्दे द राय में इससाय रे वर्दे वा वी वि वे रि व वा वा हे वा या धी व वे रि वे सा न्रहें न्यान्न विवर्ते । वायाने वानान्य प्रमान्य प्रमाने वा विवर्ण विवर्

गुरामाने प्रमानम् निमानम् । स्वाप्तस्य प्रमानम् । स्वाप्तस्य प्रमानम् । भेर-र्रे विश्वानु प्राप्ति । दे व्याद्यायान भे विद्यायान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्व क्ष्यान् प्रयानम् त्यामार्भे लेखा ने ने प्यान प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त गुरर्देवर्र्भा होर्प्य होर्प्य स्ट्रिंग्स्र प्रविव पार्डिया संप्येवर्प्य प्रह्या परिवर हुः धरः देवार्यः र्वे विषयः हे वारः दुः पदे स्ट्रूरः वर्ष्ट्रवार्यः व्याप्तवः व्यवार्यः वर्त्रा के अर्थे वर्त्र स्था के स्था के स्था के बार के वा कि का विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के व गल्व भित्र है। वे कें अप्र प्रामृत्य या से न सामित्र ही मार्च का ग्राम सुर्वे वेता ने या पर सव र इं व र र नहेव र या वे के या विका मार्थ विषय स्वरं गविव 'हे न महिव 'के मार्थ मार्थ मार्थ है न 'थे व 'वें। । न सूर्य व 'वे 'गहिव' क्षेत्रायाः ग्रीः यक्षवः हेनः न्याया हेयः गाः सूनः याया व रहेयः या सेनः र्दे। विषय हे इस्य प्राचित्र में बे केंस्य में विषय के विषय सुरद्युर परिषय बुवर्सेट संभीवर्यते धुरर्से । वाट बुवर्सेट संभीवर्यते वर्स्नेय सर्वे । नदे के अन्दर् के पार्श्व अने अन्तर् प्रदे प्रदेश में निस्त्र अन्तर् प्रदेश प्रदेश ध्रेर्रे या बे र्कें अ भी जाहत केंग्राया है। दे प्राय्य स्वाय है या प्राय्य स्वाय स्वय स्वाय स्व र्रा । नारः अवदः गाँउ ना त्यशः ग्राटः अः वे ना सः हो। व्रुवः वे रः नुः क्रायः सः सः नडर्'यदे'ग्राह्रव्रक्षेग्रार्थाने वे दे 'द्राक्षेद्र' खर्दे 'बेर्था ग्रहेर्था ग्राह्र्य वयावान्यस्य ने कें अपी पान्त कें या या है न ने । या न वि म या है या या ने क यारेश्वाराक्षेत्राप्तव क्षेत्रायारे जावव यथा वेत्रा पर्वे वेशाया वर्षे । हिन् पर

म् । विष्यक्षेत्रास्त्री । विष्यक्षेत्रास्त्राचिक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विष

वर्दे । यद दे हिंद देश पा दे हे श शु कें वा न में इस श ही सदे त शुरा न्द्रभ्वास्ते भ्रिक्ते । त्रेते त्रम् निर्दे के वास्त्र स्था निर्दे वास्त्र स्था निर्द बुव-सॅट-सेव-म-८८। भिःदिर-प्याय-मःसेव-पश्चिय-मदी । स्थानस्य वस्रश्चर्न्, देन्या विः व्यानभ्रेत्रायदेन्द्रवासः इस्रसः धेता विवासः ग्रीः क्रिंश-८८-१२वरमार या नियायर्दे ५ मर्डे मानयाम् ५ मान्या विक्रिंश हेर्र्युर्ययाविवा । वाह्रव्रक्षेवार्याष्ट्रर्भूर्येर्ययाधेवा वायाहे वर्रे सूर वर्रे र संया वार्रे र सं हो र संवे ववाय न रे न हैं वा संवे वा हर क्षेत्राश्राश्चिश्राहे सूरावहेंद्राधराग्चाले वायाने वाल्याने वाल्या के स्वीता विश्वासी कार्या के विश्वासी के स्वीता वाल्या के वाल्या के स्वीता वाल्या वाल्या के स्वीता वाल्या के स्वीता वाल्या के स्वीता वाल्या <u> बेर्प्स हेर्पार धेव व पार में भ्रेर</u> के प्रयुव धर प्रमुत्र वाय हे पाववः ग्री-र्नेष-ग्रेन्-प्रदे-मान्य-क्षेम् अप्येन्-प्रदे-श्री-र्नेष । ने-प्रदेव स्त्र-प्रदे-ध्रेर्भे ह्वार्वे विश्वायाया ग्रुश्यायश्ची ह्वायाय वश्चायाय वश्चाया है। ह्वाया हेन्-त्-भ्रुन-भवे-गान्द्र-क्षेग्रस्थ सह्द-भर्ग्नान-हेन्-धेद-भवे-धेर-र्रे-वे-द्रा म्लानायेंदे से से नवदायमानमें दाया है। दे लादे ह्या या हेदा ग्री या हता कैंग्रभः नृदः भ्रवः याचे गाया बुदः नवे श्री रः श्रुवः यरः हो नः या ध्येवः यः छेनः त्रत्युर्र्स् । वायाने यदे स्वर्मा विवार्षे दे त्याया स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्

त्नै : श्रुम्म निव्यत्त निव्यत निव्यत्त निव्यत्

गहिरागायम् नाम्यानम् नाम्यानम् नाम्यानम् विष्यान्यम् म्यानम् विष्यान्यम् न्यानम् विष्यान्यम् न्यानम् विष्यानम् विष्यानम् विषयान्यम् विष्यानम् विषयान्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम

द्वीत्रः त्वावायः नः हित् त्रेन् त्वावायः व्यावायः व्यावायः नः विद्वायः वि

यरनिह्ना केंग्रन्तिका उदान्ति विष्या । देखे हो निष्ये ने यटः स्टा धिवः हे वें वा हु क्षुवः प्रदे धिया । दे व्यः वार्वे दः प्रश्रः ववायः वः वर्षायाकेरावे सेवात्यार्थे वाषायावरावी केरार्टा ख्वाये वाह्रवाकी वाषा शु:नर्गे द्र:मित्र किया शा शी: अळव हे द्र द्र द्र स्थ सामाया सा हे। दे ख्र-रवादेश्यादेशः याः सञ्चतः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्व वे मान्व वस्त्रस्य स्टन् ग्री देव ग्रीन संदेन तु न मान्य स्टान स्ट ग्रीवित्यासुवित्यास्। ।देकित्वाययान्य ग्रामवे श्री सदे द्वाकित्र देव गवर ग्रे के त्र नहें द ना व्यव के त्र नित्र मर ग्री विकार है। नश्चनः ग्रुःयः गृहेशः श्री । ग्रान्यश्चनः ग्रुदेः र्केशः ग्रीः ग्रेन्दे ने दे नाश्याहेनः

यन्त्रांकेन्न् से नायम्यास्य स्तिन् न्याकेन्य स्थित् सम्यक्षित्र सम्य ने याद्रासे विदेश है किया । दिर्देश से गुरु ही स्टार्स वी ही ह्या वा वाद्र यायार्श्वे प्रमाह्य प्रमाह्ये के शास्त्र महिला है वा कि महिला है वा से कि साह्ये प्रमाहित स्व होत्ती र्मेरत्रश्चाह्याययस्य से ह्यायर ग्रुवायायावया हा धेवायरे धिरावेशा ग्रामान्या देग्नवेदार् अष्ठ्रा ग्राधेदास्ये धिरावेशामानवेदार्दे। ञ्चा'अ'र्हेअ'त्र्यम्ब्य'ग्रिअ'र्रुष्टे । न्यून्यचुर्यक्रियात्रहेर्यात्र्यादेरळ'या वे प्यटान्यायान्टा वेयायम्हेयायायन्त्रेयायान्यकेयायान्त्रकेयायान्त्रकेयायान्त्र रु:धेवर्दे । वि:धरक्रु:वारःवी:धेरःवे:व। दरःर्यःविश्वः अववःवविवाःहः बेर्व्हें अप्तुप्रयुप्तावीयि यदी सूर्या प्राप्ति वाती विवास विवास विवास है वा कु वियासन्दर्भ वियासन्य वियान्दरहेसन्य युन्य युन्य वियास धरागित्रात्यायनायाप्यरायापीत्रायाने ते हे याशुरवर्ते वादरार्थे गायाद्या यश्राधेवाने। नेप्नावेकालश्राम्हेनारा र्शे। । वाय हे 'हे 'क्षेत्र दे 'वाडेवा'य 'हे सामर (व्यास सम्हा) वे वा सदर श्रेव पाइवाश शुप्तशुरा विदे सूर विदेश गादे काय विदेश पर व्यायायायायीतावेटाहेयायुःव्यायायाद्याद्यायायाद्यादे यादेयाया महत्रक्षम् राष्ट्रम् स्त्रात्या स्त्रात्या मान्द्रम् स्त्रात्या स्त्राहेर ग्राम्प्रकृम्प्राम् अप्राचित्र । विष्ट्राम्य विष्ठाम्य अवस्थित्र । विष्ट्रम्य गडिगात्यःह्रगाः धरः प्यदः त्युरः श्रेःह्रगाः धरः त्युरः वः वे श्रेःश्रेरः हैं। । देः नवित्र नुः र्योद् निः हिन् हिन् हिन् स्थान्य स्थान्य

नेते क्षें त्रान्युन गुते ने ग्रायाय या या संस्था या वेता या ल्ग्रायान्यान्त्राद्वात्रायान्त्राचित्रात्राचेयायान्त्राच्यायान्त्राच्यायाया नर्हेन्याधेवाते। । नियेन्त्र श्रुत्थात्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रित्य श्रेत्र श्रेत् क्रियानायमानुदानदे भ्रीमानेमान्यानुर्ति। दे निनेन दिन् पुष्टायदे दे निर्मा नक्षेत्रायश्चान्तेक्षेत्रात्रा व्यवस्थाने व् हर्मा प्रमानित्र विकास के नित्र के नित् मसेन्ययाससर्हित्ववे हिर्मे । ने सुस धिव है। वाय हे ल्वायाय नविवः ग्रुनः वा । नगरः गञ्जगराणें वः हवः नहेवः यः यशा । देयः यः नविवः र् नर्ज्जेन ने अप्या निर्धेश महिना निर्धेश महिना है । विद्या मी किया हु क्रें राय दे या हेया हु साय क्षुयराय वयायाय से विद्याय हर धेव मश्चे र्स्ट सामी मिन्द स्मिश्हेन र् नेश सम्मिश्चे पदि । ॡरःश्चे:ह्ना:धर:पिर्यायेद:ध:य:याअद्दा:हिन:न्दा:श्वराध:हेन:ग्री:श्वराय:हे: यदी ह्या या भी वा विश्व क्षेत्र क्षेत

ने दे न र्सून र ते स्वाय वा ने दे देन महिरागदि कर क्यायानिक्यासुरवेह्नाक्षे देःक्यायरानउद्के नक्षुनायराग्रानदेःदेवादुः गव्रायः व्यायः प्रतेः धेरः नर्ज्ञेना यः श्रुवः यः धेरुः हे। । प्रयेरः रागहरः क्षेत्रायाने निया होता त्या स्वास्या साधित हैं विया सूत्रा सम् होता पदि यायरह्नायायायायदेश्चित्रित्वरावर्ष्वेतायाञ्चरायर्भेत्राया विने विने से विने से के से विषयान्य विष्यु स्विष्य हि स्वर्थ स्वयु स्वेष्ट विष्य विषय विष्यु स्वर्थ । रेगानानग्वामान्यान्यम्भाभिकार्द्वे न्यान्यस्थान्य । स्वाप्तिन्द्वे न्यान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थ नर्से नश्चन पुरक्षान्य पर्मार सेना संभित्र परि विद्यान परि । । दे क्ष्रवर्वे निर्मे के से शर्दे रेगा संधिव पवे प्रायाय न सून परि गुर्मे नदेःरेग्'सःगुनःसरःन्र्रेन्'स्रार्नेदःग्रीःश्ग्राराग्रीयःग्रदःरेग्'सःधेदः धरः ग्रुवः धवे : श्रुव्यावः वरः वर्हेत् । धः श्रुः ग्रुषः ।

हेन्दे कें यानायमा हुन्ना न्या हुन्न वाहे माना न्या से न्या धेन वा वि.शु.८८.वश्रश्र.१८५.वश्र.श.सूची.सर.विचीश.सश्र.भेची.स.कुर. हेशसु (व्याय प्रति भीय प्रयाय के ह्या प्राय ग्याया प्राया के व्हिंय प्राया प्रेत के वि वा गयाने गराविया गराया व्याका सारे वे हे का कु व्याका सदी के का सदी <u> चे च्या ने इस पर पाविया पवे क्षे वस चे न पर वृश्व त वे ने क्षर प्राप्त</u> र्रे। ।गर-र्-ल्ग्रथान्त्री देवे हो ज्ञानाय सेंद्रश्य वर्षे। ।द्ये र-द्राह्यश्य हेन्ॱहियानायसानुदानाद्वा सानुदानामहेसामायात्मासाने स्रीता गिहेरागार श्वापा ने कें या ग्री माहत कें मारा पित है। माया है ग्री साम है स क्रियानायमा यूटानर्दे वेमासूनाययम यटान्यमा यटान्यमायी क्षेत्रायश्राण्यवान्वव्याण्यवान्वायाण्यवान्यस्थ्यवान्यायान्त्रीत् । वावाने दे क्ष्यंत्रे नुरुप्ये से स्वार्मे । यद्या से दुर्दे विरुप्त नुप्य से से से सि गहरुक्षिग्रासुप्रमुरहो गहेरागायाधिर्प्रदे धेर्रे वेदा ग्याहे से ह्वायान्द्राच्यानवे नद्वायो सेदायाया तुर्याया विष्टायर वित्तर स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्रपुरार्स्य । ने क्षेत्रप्रवास्त्र स्वास्त्र वास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र वर्गुरर्से | देवेरधेरक्षायाग्रमारहेर्से ह्यायाद्रायाया देशमध्यान्त्रक्षेत्राश्राधितर्हे । यत्रक्ष्त्रख्यायायात्व्राश्राद्वे शेर्केश ग्री मात्रव के मात्रा धिव विं । हिमा या नामा या श्रूट रूप यदे से हिमा या है द

ग्वित दे 'पेंद 'रा' स'पेत दें। । ग्वार देग्र सम्बर्ध सम्बर द्या 'यस 'रेंग् रा' नेदे क्षे न्यानक्ष्या चुःषा नेया प्रत्वा प्रमाचेत्र प्राप्त क्षा क्षा विष् वर्देरमें राम्राक्षणभागराम श्रुवार्श्वेणभाम श्रवारा पाष्य प्रिया प्राप्त विभाग है। याधित विद्या वस्र राज्य विद्या क्षेत्रायायात्री स्टार्ट्र एत्रेयायार्ये स्त्रयात्राव्य र् मुनाया उदा श्री प्रेयाया नश्चेत्रपदे तुरुष्य प्यापदार्थेत् स्याधेत्र त्री विदेत्रपदा वित्राक्षः तुरे न्नर-तु-नुरुष्त्र-देग्-पर्य-नु-क्षेत्र वदी-क्ष्रर-दग्-मी-क्र्य-पर-देग्-नेत्-ग्री-र्भुदे·गुरुपायशयःरदागीराग्वाद्यसःर्भेदानदेःलेखायासर्वेदानदेः<u>धे</u>रा दे सूर्वर्दर्भे महिराधेवरम्य महिमाहेद्र पदि व राये व राये व राये व देराधरावे के रामाववानसूर पायरा हुरान हेरा ग्रीरे रामाधिर शी देरा वे हे न् ग्री अ दे अ यर न हो न य वे अ प्येव वे ।

देते श्री र पदि र पाठि वा हि र वा श्री र पा श्री र पा श्री र वा श्री र पा श

र्देव'ग्ववव द्वय'यर'न उद्दःयदे'ग्वहव क्षेत्रयावव क्षेत्रया व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या शुर्रासदे दे त्याचे कें अर् शुर्रास दे अप्येद दें। । अप्येद सर द्याया साया यरने नविवर्ष्म राजरा होये। जियाने पर्ने ह्या याया थेवाया थे ह्या पर्दे विश्वास्त्रित्राधिताते। दिन्ध्रायाधितात्त्रात्रायार्थेषायायार्यस्त्रात्राया क्षेत्रान्त्रेत्रान्त्रेत्रात्त्र्यूरार्ते । वदी वाष्प्रास्त्रेत्रायरात्त्रात्रायाः वाष्राह्य यर-र्-तश्चर-यर-श्चर्ते त्रिः श्चर्त्रायाम्यायाः स्वर्थायर-यगायाः यर्दरः श्चर्र-यः धेतः र्वे विश्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र विश्वास्त्र स्वित्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व <u>वःभ्वःह्रणःश्वेःनेणःग्रःसःधेवःसदेःग्वेनःवेशःवेःसःधेवःर्वेःवेशःग्रःनःश्वःग्</u>रः वर्रे या वे चे कें अया सें अवश्वानगा पा धेव या स्था वे न क्रिंग पा या सें अ वर्याधेवर्दे । वारावी के ह्वा धरावरावरा हो त्येव धरे दे के धरावाववर ही रा गुर्नात्र प्रत्नेवार्याया हे राज्या की वित्र हुं सबर वाव्याया से वित्र है र्भाव भेरि नविव भरे कें व निर्धे अवस मावका स स भिव माया के हमा स धेन में ले का ने हिंदा ने कि ने मान के निष्य में निष्य

दर्ने १८ म् अ १८ व्हा वा प्रति । विष्ठ के वा सारे दि । विष्ठ के वा सारे के सार के सारे के सारे

न्ते मालव श्री पर्देन स्थान प्रमास श्री ने प्यामे लिया हिन स्थान स्थान

होत्रासदे सूरावा अववाहा धोवा सदे हो राह्मा सदे विवाहा ना पदी माहवा क्षेत्राश्राश्राश्रयान्यत्वार्ट्य । ने ने ने म्वाराष्ट्रित् से दाया स्था सक्रायनवःविगाःहग्राराशुःवशुम्। ।देःददःसश्रुवःसःसेदःसःविंवःवःसेदः यदें विश्वासायदे या विया सहसार्शे से राजेंदा सवसाधित स्वश्वा सहस्यार गुनि हिन्हिन् सार् प्राचयानि हे सामाने से निस्ति। वेत् गुनि से निमानि न यासेन्यर्देवेशनेशयम्य बुद्यानेदेवे धुराष्ठ्र सहस्र सेर्पेन्यार्देत् गहरुक्षेग्रास्युद्रहो देखान्यामार्वित्रक्षामार्गेनेद्रद्राद्यूर ॻॖऀॱढ़ॕऀ॔॔॔॔॔॔ज़ज़ॵॹॗड़ॱॸ॔ढ़ऀॸ॔ढ़॓ॱॵऄॴऄढ़ॴॸॱढ़ॻॗॸॱॸॕऻॎॗऻॸ॓ढ़॓ऄॱढ़ॴॱग़ॸॸॱ वियासहस्रायासाधीताहे। दे सेदासाधारासी ह्या सासर्वेदायदे हिरासे दि समुक्छिन हे सार्येन स्था । हे स्ट्रेन निम्म सुक्य हेन । हे सारे सा धराव बुदावरा ब्रेन्दाने प्रदास बुदाया विंत प्रदा क्षेत्र के वा कु कु वरा बुद्रा मश्यादात्रवारायम् । व्याद्वाराया विश्वापित विश्वापित विष्या विष्या विषय विश्वापित विषय विषय विषय विषय विषय विषय ग्राम् ने 'क्षेत्र' वे 'के अ'याम प्रमुव 'यम स्वाप्त के देवा अपन्य अवुव 'या वि व से न यम्से वर्ष्युम् नावे विवायामा या यम् या या या विवाय वर्षा स्थाना न्यासर्वेदा । यान्वरक्षेयाश्याचेयाययदान्यसेन्यसेन्यसे वर्ष्यस्य सम्बद्धाः ह्रे। दमेरः व तुरुपार हेद वे से ह्या य दर यद्या सेद या व सेया रासेद वासेनामाधिवार्वे। ।नेवेष्टीमानेसाममान इतामासुसामार्भेवारवाधीवा र्दे। । यर ने न्दर अध्वर यन्दर भ्रव के वा कु कु नवे वा विव के वा वा विव स्तर स्तर व

वर्षान्धन्यम् ग्रुः है। हे मे विवायने म है सूम नसूव याने नविव सक्व केनः हेनः सम् होनः नमा धरः तः धरः नवाः यवेः नेतः हेः सूमः धेनः यः सूमः धेना ने यश है र वशुर वे वा ने वे निर्मा के द शे श के व वा निर्म के निर्मा न्हेंन्यमानुमामाधिन्। विदेशके नहामामामा मुन्नून निमाना नश्चनः ग्रुः से द्वारा निष्ठा द्वारा निष्ठा द्वारा निष्ठा विष्ठा न्यां र्ने व निवान है है। यने प्यर न्या यये रेने व है सूर पेन या सूर सकत क्षेराहेरासरा होरार्रे विषा रेष्ट्रायाणया इसामानायामेशानाया विसासा नर्हेन। । गायाने नान्व केंग्रास्ट ने न ग्रीस स्वाराधीय व स्वारा गाटा वीश्वादा है। भूरावर्षा है दार्श्व स्वराहे दारी वादा दुः प्यदास है दारा से दारी नेयायम् होन्ययायन्यायनित् । नित्रही सून होन्यर्षेन । नेयायर हो दायदे या हवा के या या हो रहा यो अळव हे दा हो या या यह दायदे नन्गाकेन् ग्रीसानेसाम् ज्ञानदे नेंद्रानेसाम् ज्ञेन् प्राचेन् प्राचेन् । अगः ग्रीयान्। बुटा बुदे देश्यायाञ्चा । व्री ह्या ह्यायायाः व्याप्य । व्यापा ने ने दे प्रमा के न प्र इस क्षायळ व के न हे न प्र स्वे न के व के वा वी का ग्राबुर ग्रु हेर ग्रुट से ह्मा स हेर र्र रास्त्र के मा हु क्रु नवे माहत के माना स्रु वशुरःर्रे।।

नायाने नाराविना सानसूत्र संदे ते नाम् त्र क्षेत्रा सामा स्वित्र हैं विसा नहें ति हो सानसूत्र सावित्र नहें तामा निस्त्र सामा स्वादेश सामा नहें ति । ते सूरातु नहें तामा से सामा से स्वादा से गहर् केंग्रास्तु से त्युर विसास सुरार्सि । व्यूत हेगा कु नस नसूत गु या । विः क्षेप्तिः क्ष्रमाने प्रमास्त्र स्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द गिरेशायशायगुरानशा । ने निर्माश्रम् निरम्भ्रम् हेगा हु मुन्निर्भ ૹ૾ૼ૱ૹૹૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૹૢ૽૱ૹ૾૽૱ૹૹૢૢૢ૱ઌૹ૾ૢૺૢ૱૱ઌ૽ૢૺ૱ૹૢ૾ૺ૽ૺૣૼઌૹ૽૾ૢ૽૽ૺૢૼ૱ૹ૾ૢૺ૽૱૱ नसूर्यात्र्यान्भे माहेर्याचीर्यान्याचीन्दी । हे सूर्याहेन्याहे सूर्युः न्यायी अव न्ये अप्रवेषाय देश यम क्षेत्र या धेत के ले अप्त हेन या धेत के ग्र-विग्।ग्र-ग्री अप्त्रश्चन ग्रुप्यायात्र सूत्र पाने विश्व महिन्याने त्यान् ग्रुन् धरागुः क्षे भे हमा हेर से मारा अर्थे राज्य में । विश्व मारा मारा मारा में । न्याचे। । वायाने ज्ञाराने न्यो वान्य के वार्या ये क्षा से हवा या हे न न्यों क्षा धर हो द व वा वव के अ शुवा वाद शुव धर देवे के देव द । धर द हो र हें द । धर बेन्द्रमा नश्चनः चुःगावनः नहेन्द्रमः वे सः धेवः वे । ने स्ट्रम्य ग्रान्सः नश्रुव राने विश्वासायार नेवाश्वासाया थिव वि

रेवाश्वास्त्रव्यक्त्रश्वास्त्रेश्व स्वाधान्ते स्वाधाने स्वाधाने

वश्चरःहेः दसमायः सँमार्यः निव्वतः है। दिवःश्चेः दसः नहतः यः सँमार्यः । वश्चेः ददः दिवः स्वाः वर्षः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः ।

गवराणरा भाराक्षेत्र यहेराभारते के त्रेरास्त्र के के रास मुत मवि निमेर महिन मा हिन मह्यून हु हुन मा हिन भी वाव वे ने हिन ने प्या गुरामाप्परामाप्पेत्राविदाग्रेत्रात्र गुर्नेत्रामात्रा विदासमात्र ग्रामात्रा ५५.२.१६८.४४.१९८.४.४१६८.४४१ । २०.९४। यक.५.५६. सूसानु ग्वाद के सास मुदारा त्यसान्ये निहें नि ग्री द्वार नि सद कुंद नि मुन मदे क्वें व्याधिव है। दे नक्क्ष्य नुक्ष्य मित्र के मायाधिव कें ले वा दे क्ष्यंत्रेने। हिन्यम् उत्रुम् देवे द्वेम् लेवा केंश्यव्यापि नि नर्हेन् प्रवे रमा प्राप्त के अपार्त्र वर्षेत्र प्राप्त से मारा व्यक्ष मुहाना धेवा यवे श्रेम्। हिन्यम् उत्रम् निम्यम् हर्षे । वायाने से हरे । वि स्मा न्दर्वित्रयात्वर्श्वित्रयायाः श्री श्रीत्रयाः मे द्वार्ये न्याः वे न्यस्त्रयाः स्त्रयाः स्त्रयः वेन यरकेनमुनन्त्रम्न निन्द्रम् रायश्याम्यादित्। ।देखश्चिर्यस्त्रम् वित्रा गहिश्यापाववर्त्रपर्धितः धरावशुरा । वायाने प्रदेशायशाधीत त ते वारान्तर प्राप्त प्रदेश प्राप्त । यने वित्रामहत्र के म्या शुरद्युर में । म्याय हे न कुर्य याय श्वीत स्वराधित यार के अः अञ्चर प्रवे छत् प्रवे क्षे अः पः ने यान्त्र के या अः सुः वर्गु रः ने । यावः हे प्रवःद्धंवः नक्कुं दःवशः नक्कुं वः शुक्राः वः दे गाह्रवः क्षेण्यः धेवः प्यदः छवः सतः निश्वास्तान्ते । व्याप्तान्ते । व्याप्तान्ते । व्याप्ताने । व्यापताने । व्यापताने

त्याविद्यां विद्याः स्वार्थः स्वरं स्वार्थः स्वार्थः स्वरं स्वरं

यशुर्त्स् । देश्वेर्त्यव्याप्य क्रिंश्य स्वर्त्त्रं देशेर्त्वं स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्ते स्वर्ते स्

वुगायर वुश्वशायर वश्चर व गवाने विराधरार् विशासदीर्देशरे विद्यूरा की के शास बुदासदीर गावसका उर्दे मान्व के मार्थ संभिव के ले वा रमा गुव से पर्दे र ले व मारा पर्दे र ने हिन्यर उत्र र् की वाय हे के या बुद र वा बस्य उन् वाहत क्षेत्रामान्याधीत्रत्राधारामान्यात्राह्यमान्यात्राम्याः धेव वया देव गर द्या मी छित यर श्री रात्र हित यर त्र से होता याय हे वर्रे भूर हिन् यर ही क्वाया के क्षेत्र यदे ही र र्ने व र् कें व का यदे रेने व या वशुराने। न्यावरुवान्दानान्याक्षेत्रायायानवे भ्रेरारे लेखा दे क्ष्र-प्यटारेग्रायायायीवाते। ग्राटांगे द्वेम दर्गेयायायेटायराद्देयाग्री वै। अन्ति प्रत्यास्य पर्देन साधिव। क्रि. सक्व सेन सम्पर्देश क्री स्रीते देवायायन्यायम्भेषायायायायेवावे । निवेधिमःकेंयायम्बनायाकेनाम् यर:र् गुर्वे | र्नेवःश्चाह्यर्यर:र् गुःवःवे सःधेवःवे | रे ःक्षरह्यः परःर् या गुरामा दे हि १ द्वाना निवादा से अनाम दे सिन् मा मा निवादी । दि है। र्वे वे व ने विन्यम् नु व्यापाने या प्रे व व विष्यम् व व विष्यम् व व विष्यम् व व व व व व व व व व व व व व व व व ৻৸ঀ৾৻৸ঀ৾৻য়য়য়৻ঽ৾৾ঽ৻ঀয়ৣঀ৻য়ৢয়ৢয়৻৸য়৻য়ৢ৾ঀ৻য়৾ঀৢঢ়৻ঢ়য়ৢয়৻য়য়৻য়৻য়য়ৣয়৻ हिते।हित्रपर्र्,हेत्यरके वींपर्ये हित्र विवास विवास है। विवास है। सब्वायर क्षुनायर होताय शान क्षेत्राया दे निविद्या निक्ष्या हा क्षुनायर कैंग्रअः सूर सूर न इस्र अ हे जार के अ स्तु व स ने वे जा हव के ग्र अ सूर बूर न स धेव है। गहर के गशहेर में लेश नहें र पर ग्रुप धेव में लेखा ने भुरत्वे वित्रपर पर रेग्या या अप्येत हे श्रुर नहर न या द्येग्य नर्यार्थित् प्रमःश्चित् अप्येत्। । वादःविष्यः यः यः श्वेषार्यः विरहेशः सञ्जतः यः इट र के अर थे र श श्रुव र या हे वा हव र के वा अर क्षेत्र स्थूट र या धेव र शे र ने वा हव ध्ययाया श्री रामहरामदे में भूमका क्षेत्र मदे श्री रामें

स्राद्धेनाश्चा स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्र स्र स्र स्र स्र स्

त्रुवः सः तः श्रेन् श्रम् श्रुवः सः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वद

त्रे त्रवास्त्रस्य त्रित्राचार्य क्षेत्रस्य क्षेत्रस्य

नःवर्दे वः व्याप्यदः नश्चनः वर्षः न्याः श्चे कित्रः श्चे कित्रः वित्रः न्यान्तः क्षेत्रायास्य विष्ट्रास्त्री । विः क्षेत्रे क्षेत्राधीत् विष्ट्रीय विष्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय विष्ट्रीय व भे भेर्रि । रे भ्रे के शरुव पोव व वे रे प्यर भे प्यत्र रे ग्रुव पवे भ्रे र रे। भ्री ह्या मा हिन् न भ्रुन गुः धेव दिं वे व साधिव हो। भ्री दिन न भ्रुन गुः धेव मिर धेरःर्रे । भेरहगराहेर्ग्यः भुलेश्या भुभेरहगराहेर्र्ने वेश्या श्चा भी मित्रा मित्र मित धिव पिते धिर र्रे । नि क्षेत्र श्री वि रेत्र केन नश्चन श्री । केंशन्दरकेंशरुव नक्षुन गुरेव । दिन्यानक्षुन गुरके भेरिदी । क्रेंबि ८८. यक्तास्त्र ही मही लिए साली मही स्मान हिंदी स्मान हिंदी हैं देशवःश्वेदःधेवःक्वः ५ शुरः १९५ वे नश्चनः ग्रुरः वर्षेवः नरः वश्चरः है। दे'याश्चित्राः केंशाउदाद्यापावदायापादापादादे दिया वशुरान से दारे के सामी मिना परि विश्वान सुना निर्मा सुना निर्मा सुना निर्मा निर्मा निर्मा सुना निर्मा नि ने न्या भु छिन ने निर्ध्व सर्वे ने यान ने वे के याने पान व के पाया थु वर्गुर-र्रे । देवे: यर बुव-र्सेट-ववे: दर्गु-पर-ग्री: वर्भुव-ग्रु-एथ्व-पवे: क्रूश्रायवीर.धे। विराधरायश्चियाचीर्यराज्ञेयाची क्रूशायक्र्या यश्चिया धरः ग्रुः चः नृदः धृदः धदेः कें सः केन् देशः देशः धरः च श्रुदः चरः ग्रेन् धः देः ग्राट्या अन्ते । दिव श्री के शास्त्र प्राया प्रमानि । वि वे निश्चन गुन्द थ्व पाष्ट्र शिक्ष के स्था के साथ है वेशनायान्त्रक्षियाशसुरव्यूरम्

नश्चनः मरः ग्रुः नदेः के सासकुर सामा हेरारें वे तासाधिता है। देवे ह्य-पर-र्-हेर्पाययाव्याव्यायाद्वेयासुपद्वार्गे वेयापादियासुर बॅर-र्-पावन यः यह्मा या यो वा परि दी स्था सह सामा या यो वा वे । ह्यायार्थ्याहेर्न्यञ्चरायराद्यायाहेर्न्याधेरात्राचीत्रवाहेर्न्या यायातुस्रायार्सेवासायवे केंसावाहत केंवासासु नाईन प्रमासुमायवे से मा श्रेमामिशमा बुदानर ग्रुप्त हेट्र ग्रूप्त महत्र क्षेम्य शुप्त हेट्र सर द्यूर दे। ग्वर पर अरेश राया देश रावेश तुर्ग ते हे के के आ ही ग्वर के ग्र रा है। विश्व सदि या हव के या अरे । धर या हव के या अर शु विश्व स्टें । इसे स्व ह्या है। खुरु उद साधिद पदे हिर लेश हा ना धर है । दूर ह्व पर हैं यूरा धरावश्रूराहे। इसाधात्रस्या उत्तु सावहोत्या वा हेता देवे हिराहें सा सम्बद्धारिते निर्ध्व राजे विद्याय विद्या ने निर्वास्त्रे के अन्तरम् सुवास के अस्त्रुवास धेवास के अपाववा स्रम्यायम् वर्षुमाने। सन्दायमानु नाने निष्याया उद्या है । स्र दवा'स'विवय'वर'विव्यर्'रे'वेस'रेस'सर'व बुट'व'श्वस'सवे'धेर'रे| |

श्र्यायावे हे अत्यह प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र

दे त्या से विवा वार्षें के व्या दि त्या या स्थाय मास्य स्थाय दि स्था स्थाय व्या स्थाय स्य

तश्चुतः च्रितः र्रेशः यहः श्चुतः च्रितः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

नसूर्यापित नाने प्यत्या हत् किया या शुर नहें त्या या पीत है। सूर्या होता है त वे 'यव 'यग 'वस्र अ 'उद 'वर्हे द 'यं पीव वे । । दे र साम मुव पये 'यु द पर 'वे । में नर्जुन्यसाधिवार्ते। । द्रमे प्यराम्याने मारायान्युन जुः सूनायायार्देन धर हो द र प्येत के दे प्या के मान्य का के कि के कि के कि के कि के कि कि के कि वर्ते निर्वे स्वरं सेवा । भीरावी भीत स्वरं स्वायाय स्वरं वायाय स्वायाय स्वरं वायाय स्वरं वायाय स्वरं वायाय स्व कुगान भरासान सून पाया ने हे सा सु पर्वी ना से ना परि ही मान्ये पूर सून ना धिवर्दे। १दे निवेवर रुक्ष्य सम् छेद सदि देव महाधार धिवर्दे। न्रह्में न्या निवास का क्षा के निवास के गयाहे निहें न्यर ग्रुप्ताय हे या सार्वे न्या या धेव स्था ग्राम निहें के यर हो द र र दे र दे र ले के ले का दे र अ भी कर है। दे र व है द र य र हा कर है द श्चेंत्र'न्रन्यरुषायां दे साधित हो त्री सून्। न्या ग्रामा न्या पीता प्राप्ति । न्मे त्य ने ने हिन् र्भेन न्म न्य राय राय वित्र है। न्या वी रायी प्रति स्था राय यः श्रीवाश्वारायावार्षे निति दिन्देशस्य श्वार्यो नामस्रवास्य श्वीरा ぞ 」

ग्वन्था । प्रमानी प्रमानि । प्रमानि

योद्गानाः भेत्तः हित्ताः स्वातः स्वात

ठे स्रे भे प्राम्य स्वाद् र्रेन प्राम्य प्राम्य स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त स् गडिगाछेन्द्रे अप्पेत्र है। यन छेन् ग्रेन् ग्रेन्द्र लेखा महत्र पर्वे भ्रेन्द्र लेखा हिन मासेन् भ्रेम् रिन्मासेन् मिन्मासे भ्रिम् प्यान्य स्थान् स्थान्य स्थान् धेव है। ने अर केंद्र य से द य वे से देग राय है द दें। विवव द वे विवा हेन्साधेवाबेना वेन्डसासेवा वेन्साडसायरान्सूना गुःसाधेवार्वे वेशनईन्द्रि । नने न्याया स्वाया प्रति देवा सान्तर हे सासु वर्धे ना साधित है। इन्दर्भिर्भुद्रायम्भूयामानिद्या । पायाहेर्देवर्भेषामाग्री कु गठिगामिक्षेत्र निश्चन होर्दे ले तरि देशे साधित हो। इति इससाय देगारा गठिगामकिट्राह्र शाशुष्टर्शे पाये प्रति । हे शायर्शे प्रस्था वर्षे श्चराडे वा । याधिव हो नये से न परि श्वर मान से मान से न मान से मा वर्चर्यानु हिन् त्यः श्रीमार्था प्रवेशहे साशु श्रीमानवि छिमानमा ह्या प्रमास्थ्र प्रा ग्वितः इस्रश्रायः पद्यायने यानितः स्रीतः । ग्वित्तः स्रीव्यायः पदः स्रीतः

गर्गायाञ्चरमञ्जूनायाद्यायाचाद्यायाचाद्यायाच्याचा रेगाविगाः अञ्चनः यात्रे रेगायां गाउँगान्दा हेया सुरदर्शे न सेन पदे छिर रेग अधिवाने। वारावी श्रेरावाद्य स्थायत्र साम्याय विवास देवे श्रेरा देवा सा गडिगाहेशासुपर्मे नाउदारेप्ट्रायारासर्घरास्री गवदार्पत्रसानुगडिगा महित्। । सेन्यम् प्यम् व्यवस्य त्या विवास हिन् स्वेन स्वाय स्वाय स्व यदे वज्ञ शन्तु ने न्वा ने वहिया हेत यदे श्रेया वा श्रेया शायदे ने शाया वा नरःलेवःमवरःनेरःवशुरा ।हेःनरःलेवःमरःशुरःमःवःष्परःकुतेःवन्रवः तुःषेवःमबःदेवेःदेवाबःशुःहेबःशुःद्मवाःमवेःदेवाबःहेःखुवःद्गुक्रःमवेः मुत्यःसँग्रायःयःवे सःधेदःर्दे वे व सःधेदः रुक्षादः षटः भ्रेसः रुषः <u>षर खें त्र तृत्र गार्थ संहे सार्थ प्रमाधिय स्थाप स</u> नेशमने दे अवस्र्रेन्य अविश्वास्त्रे विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्त्रिस्त्रे ।

के हे हे से स्वाक्ति हु न्या के वाक्ष्य निष्ण के निष्ण है से स्वाक्ष्य है निष्ण के से निष

म्बिर्द्धेम्भ्रिः न्यः विद्याः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्य

र्शेग्रथायात्रस्था उद्गानि नाया श्रेग्रियाया प्रति देग्रया प्रदास्य प्रताप्त प्रतास्य र्थेवर्र्यात्राचित्राच्यात्राचित्राची ।रेन्ध्रम्यरेनेन्विनानान्वरक्षेन्यराधीः र्भेवर गशुस्रागरि । (यदानादानी श्वीत्राना हैना श्वेत पु सिंदाना हता श्वीप्राप्त प्राप्त । नुःक्षे निरानीः तुरुः भ्रमायाया सँमाया सदिः क्रें दुः तुराया सँमायाया सँहा नरःश्वरःनरः हुर्दे । देः वेदः क्षेत्रा द्ये देः प्यरः वेदः याया विदः नुवायार्शेनायायात्रस्ययात्राप्त्रप्ति। देप्तावे निस्ता यरामुनिने पार्रे पार्श्वर्तु पर्मे पार्वे प्राप्त प्रेमिन के प्राप्त प्रमाने प्राप्त प्रमाने प्रमाने प्रमाने प यगाःभ्रमाः अत्रस्य अरग्रीः इस्राधराष्ट्रदायायर विदेशायाः हेर् र्राट्रेमा अर्थे विद्या रेगायर हुरे। ।गुरु हु रेश विवास एक रायस है दिर साम वर्ग न वि बेशनायावन्त्री पर्देन्ना स्थित्या वात्र स्वापाय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ग्राबुद्दान्तिः ग्रुप्ताने प्रस्थाने । से से द्वानाना । से से द्वानाना । से से द्वानाना । यदे वर्ष है महिष्ठि है। द्रे द्रायाय प्राप्त द्रा विष्ठ ह्रा स्था द्रायाय नःवेशःश्री।

देव् कर प्रवासित प्रियास के के राज्य प्राप्त के के जिया साल के के स्था साल के के स्था साल के के सिंद्र स्था साल के के सिंद्र स्था साल के सिंद्र सिंद्र साल के सिंद्र सिंद

दिवाश्वाविवावि। हेश्वाश्वावि विवाधित्वा स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्

बन्द्रास्त्र स्वर्ध्य स्वर्धा स्वर्धा विष्ठिया यी हे सा सु प्यर्थे प्रस्त वया प्रस् वश्रुम्याध्यम् अधिवार्वे। यायाने हेशाया सेन्द्री क्री यावशासेन्यते धेरःग्रेगिःहेर्र्वाययायरःवर्म्यः विश्वायहेर्द्वावेषा हेः अर्द्वा वःरेग्रथःसरःवे सःनिह्नः वाद्यात्रस्यसः त्यःरेग्रथः विवागीः हे सःसुः वर्तेः नः भेंद्रासाया भेदास्या वाषा वासा विद्या हे मार्डमार्हेन् त्या अवतः मार्डमार हुन्देश साय मे मार्था मार्थे वार्वे के वा अप्येवा है। देवे:लर:अ:नश्रुव:मश्रव:नर्ज्जेवा:म:ब्रॅच:मर:लर:व्युट्र-र्रे । पाठेवा: हेन्यासबदाविवा हुरेसारा यह क्षेत्र वार्स स्वार्थ स्रास्त्रेट्राच्यात्रः श्री प्राप्ते प् हे अ शु दर्शे न दर न अय हे दिर अ य द्वा ग्रुट श से द्व दु श्वय नर वशुरार्से । दे त्या अववा गाँउ गा रु दे अपा प्यें दाया आधी दाय अपा वा दूर दु हु र नरः ग्रुःनः अः धेवः वे । देवेः भ्रेरः मान्वः कैम् अः अः नश्रूवः यः उअः ग्री अः देः नर्ह्मेनास्य प्रस्तिक स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप रैग्रायाधिवार्ते। विरीक्ष्राविष्ट्रात्रे प्राची विष्ट्रात्रे प्राच

र्शेट्टान'ते'स्रवत्यां देवा'तुंटेश'स'धेत'सदे'द्वेर्ट्टायश्च ह्वेंवा'स'व'द्र्ट्ट् वयः वरः वर्गुरः र्रे । दे १२ १५ व । इसे १५ व । व । व । दे १५ र त् शुर्वारात्राधारारीयात्रायावेयाः यावता सम्मारा श्री स्वार्वा स्वार्थाता स्वार्थाता स्वार्थाता स्वार्थाता स्व क्षेत्रप्तः हे सासुर्दर्भगायायार्थेना सायसासेत्रपार्श्वेत्रप्तः सेत्रपार्थेन प्राया र्शेम्थायाक्षेत्रावे मान्त्र न्यायमायम् विष्याते । हे शार्वेमा सायशायिमा हा र्शेट्ट न उत्तर्हेश शुन्द्रमण माने साधिन हैं। । दे त्या पट मान्द्र द्वार नर दशुर री । नर्हेर परे ते न पर्म सम्मार मार्थ पार्थ पर्मे । नःठवःतःन्देन्।यदेःश्चेरःवदेःह्यःयरःथ्वःयःययः वर्तःतःत्रेःनरःग्चःनः धेव वें। विंद्र न पर पर पर प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय गठिगायशः भ्रेष्ट्रायाधीदादा भ्रेष्ट्रायादशासेदासवे स्रिया मार्या प्रयास्य वशुराने। रेग्रायावेगायावरायेरायरावयावरावशुरारेवियागुरावेर र्नेनर्जे।

यदे स्वर देवा श्राचित प्रचित प्रचेत प्रचेत

विश्व स्वर्त्त्रात्तां भीत्र के विश्व स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त् स्वर्त्त्र स्वर्त्त् स्वर्त्त्र स्वर्त्त् स्वर्त्

देवे भ्रेर श्रेर प्रवेश्मळव हेर सर्व पर साय हे या है विश्व हु ना दे <u> न्या यो श्रादे । या न्या रहत इस्य श्रायी या नृद्ध यो श्रायी स्याय प्राय प्राय विया हुः </u> गहरुक्षेग्रायार्हेर्द्रयागहरुक्षेग्रायुर्ध्यायात्र्युर्धा देः यारे विवार्से दायासून यात्राचारा द्वारा विवायानि र्देव वे नाप्त्र के नाये भूर सूर नार्दे वे या नेराया नि त्याया नु नाया स र्शेम् अप्यानि निर्मेर ग्राबुद्राचुःधेत्रायदेःधेर्यः क्षेत्राक्षात्वेत्राचुः वास्याच्यायः व्यासायद्वायः धेव पदे भ्रेर ह्या में विश्व द्वाया स्थान स्थान है व्याप सहस्था है प्रवास हिस्स स्थान है । र्रे यश तुर वदे श्रेर भे ह्वा में विश्व तु च व्याय व व विवाद । व्याय वयायायायाहिकायदि ।

प्रशासन्यान्य प्रति । वर्ते प्रण्य । वर्ते प

 वन्यायाः इस्यादीः वाह्नदाक्षेवायाः सूरास्य वियाने रार्दे ।

दे त्यायहिकारा द्रायक्षारा दे सारे शारा है। दे त्रुर दाहितारार र्धेर् भेता गर ए अ देश मा धेत ले ता गलत ए श हिर् पर र सा भूत्रश्चात्रत्रश्चात्रश्चित्रश्चात्रश्चित्रश्ची भूते श्ची प्राप्त विष्टि भूते श्ची प्राप्त विष्टि । गिहेरागित प्रिंत प्रति हैं विश्व श्वाप्त स्थित । विश्वेष्टि स्विम श्वेष्टि विश्वास धेव हो गडेग हिरेश यायोग्यायाधेव यदि ही र दर्ग गर देवे नश्चनःसरः ग्रुःनदेः रेग्रामः हेर्द्रः दशुरः हे। देः षरः दर्दे ग्रिष्ठेगः हः रेग्रामः वमेग्रासाधितर्वे लेवा वरे सूर्य पराष्ट्रिय सराधें दासाधितरहे। दे क्षुत्रःष्परःनक्षुत्रःग्रुःसेदःसःद्दः। देःत्रसःमाव्यःसःदः। देःद्दःसमायःतः यापदावह्यायरदेवाग्रीयार्चीवरदेयायर तुर्वे । इयायात्रयया उदार् विविधारा उर्व साधिव हैं विका क्रमान हैं निर्मा विवास है सब दापका सुमका व'वे'ने'न्रायाय'न'धेव'म्रायम्य'न्याय'न्यायुर्ने न्रोर्न्व हे'न्याय'स्री ख़ॖॺॱढ़ॺॱॴॖॺॱॸऻढ़ॱॿॖऀॸॱॾॕॺॱॸॸॱॻॖ॓ॸॱॸॱॴॵढ़ॱॸॖ॓ॱड़॒ज़ॱॿॱॸॸॱॾॺॺॱ निवन्तेयात्रानाक्षात्रेत् । ने निवनिन्न निमास्य त्रानायात्रानायि सम् र्टायन्यायान्यान्हें न्यराद्यानान्ते स्वायानाः ग्वितः धरादर्वे नः स्रे। ग्वितः क्षेत्रा श्रास्त्र स्थरः नावनवः विगाः पुः सः वर्षः ग्रीः वर्रे त्यात्रे सुर्वा उत्राधित प्रवे भ्रित्र विकाश्चाना वा स्वा मित्र विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास क्षेत्रायाणी भ्रेत्रान्दा केया नरा हो दाया या धेवा वे या हा ना द्या न करा न दे हो त लर.लुच.हे। क्रूर.विश्व.धेरश.स.र्टर.ख्याक.यह.हीर.सू । वि.क्रे.लट.टे.श.

गुनःमःहेनःन्दःवनायःनःहेनःमहिषःगानःवगुनःवने। न्यःनउवःनवेःश्चेतः <u> ५८.त्याक.य.क्षेर.र्या.लुच.धे १ क्षेत्र.य.क्ष.य.चु.र्यक्षेत्र.या.क्ष्या.क्य.र्र</u> वनायानरावश्चरायादे। यदानेना विकाशी हो दाया से त्या सूराया वदेनका धरावशुरार्रे वे व दे भ्रान्य राश्चरायार या स्त्री याया हे हो दारारे वे श्वेरा न'नबित'र्'वरेदि'र्केश'गवित'वगवाय'न'हेर'ग्रेश'र्झेत'यर'ग्रेर'त'ते'रेर' षरः सः गुनः पंते दः दः निहें द्राय द्रा भी द्राय उत्य वि भी वि । नवित्रः भेता देरः गुनः पर्वे अवदः यश्या गुनः पर्वे देतं हेरः नविता दशः र्धेग्रथः न्दरायायः नवेः श्रुवः गाव्वकं केनः गाठेगाने नाईनः नुभेनः ने । छिनः यः र्रे त्यः क्रें अः वाववः स्टः द्वरः ठवः द्रः वाववः द्वरः त्यः श्रें वायः यः त्ययः धेवः नयायायायायायार्थेवायायायेत्रायाचेताः वियाग्री श्री राजादी द्वीरादायाया नश्रुव रें प्दे ते नश्रुव रें बिश ग्रुप्त श्रुप्त । याद प्दे प्य ग्राद्य रहत ग्री श वे पर्ने अन् न् नर्हे ने । वार्डे ने वे कु यथिव हे। ये यय पाउव यथिव यदे हिर्देखेश हु न सुर्वे । दे या यह न स्था न हे मार्डे में यस मान्त याधितामवे भ्रिमा शुक्र सें मास्य धिकामिं विश्वा शुम्य वे साम हिना धिकार्ते॥ *য়*ॱ८८ॱয়য়ॱয়ঀয়ॱৡ८ॱ५ॱॾॕ॒८ॱय़ৼॱॻॖ॓८ॱয়ॱवेॱख़য়ॺॱয়ॱৡ८ॱ५ॱख़ॻॖॗৼॱॺॱढ़ॕॿॱ ग्रम्। दे निविद्यस्य दे दे दि दि व विष्य स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य स्थाप स्याप स्थाप नर्ज्ञेन'मञ्जून'मर्राचेर'मदेरिष्ठेर्रार्चे । गुन्रामदेरस्रवदर्गदावावानदेरिष्ठेर वेशमार्वे संधितर्दे । वारायाञ्चनशासुम्बन्धार्मन्याम् वाह्र धिरके नर वर्गे द्राया के अन्य द्राया सही द्रेरक नद्रा के ह्या

राधिताहे। सुराधरामाव्यायाव्यायावेतायात्रीमावेतात्रीमावेतात्रामा वर्देरः पर सुरायरा ग्वित साधित राष्ट्रेर यया नित्र मुर्देर सादे सा धीव हो तदी भूमा अदेश सम् त्यूमा नाम नी श्रेम तदी भूम हना सव्य यविद्यायः स्वीयायः प्रद्या से ह्या प्राचुस्य प्रायः स्वीयस्य प्राचित्रं स्वायः प्राचित्रं स्व यशग्वत्याधेत्रमाहेत्यार्वेत्रम् वित्रित्रम् विंद्याने से हमायाधीय विश्वान्य हिंदा स्थान होता हिंदी है रायने सारे शाया यश्चन्त्रन्त्र्नुन्यः धोव्रार्वे । विश्वनः ग्वन्तः ग्वन्यः स्वेन्यश्चनः प्रवेः धेर्न्यञ्चन गुन्द्रस्य द्धर्याय हे। देरेर्न्य ञ्चन्त्रा हे रेगायर गुन्य स लेव.सप्त.हीर.धू.यहोव.वू.एक्.ची.य.के.ची.व्यी विरीय.लट.सू.क.प्रेया.सय. ग्रुन्यः अधिवः यदिः या प्रवाद्यः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः बेद्राया होद्रायी अपन्यू न निष्ठा निष नश्चनःग्रुन्दः अर्द्ध्दंशः धरः दशुरः र्रे । याववः रु. हेंगः धरः ग्रेनः रो र्रोः यद्रायान्यस्य विष्याद्य स्तर् स्याच्या स्तर्भे यात्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त हिन्यरसेन्य भेत्र कें लेखा भरान्य स्वाप्त हिन्य हैन से के या के समुद्रायाम्सस्यायनु सराधे । । वस्य राउट् १५ देवे वा पाने साधिदारें। धरसेन् प्रदेन् भे दे साधेव दे । दिव ग्राम् पर्ने प्रमामा पर्ने सामा प्रदेश पर्ने र्दे। ।रेदेः ध्रेरः अः गुरायायवादः विवाः अः धेरः ग्रीः वाह्र विवाशः क्षेरः सूरः वः

यात्रा हे 'दे अ' सम्मान्ना निवे 'दें त्र दु 'हे अ' हैं द 'सम्माने द 'हे 'दे 'हे 'हे 'हे अ' हैं द 'सम्माने द हैं प्राप्त हैं द 'हे ह 'हे ह

धेव धर र दूर है। गानव के गाया गी देव र दें ते या गुरा वे वया वे या इया षरःनश्चनःसरःग्रःनःहेरःसःग्रुनःसरःनाईरःरें लेखा देःस्वने नाहनः क्षेत्राश्राभी में तर्रायायायर प्रमूरा मुनारार्श्वेत्र न् पर्मे तर्रायाया नश्रूव पर जुर्वे वेश जु न पर्ने पाने प्रजेष परि त्राव र र न र त् जुन परि विश्वास्त्रित्यम् नुर्दे । वित्यायाधिवायावी सेत्याये से संस्थाय साधिव दे। *ॸॖॱ*ढ़ढ़ॱढ़ऀॸॿॖॸॱॳॵढ़ॱय़य़॓ॱॿॖऀॸॱॿॖॸॱय़ॸॱॼॖॺॱढ़ॺॱॸ॓ॱख़ॱॸय़॓ॸॱॿॾॕॸॱ या गयाने मुख्य भेता वादी हत्या नाय नाय वादी माधिव के विश्वा नाय होती डे·श्लेप्पर : पॅर्न : या प्येत : यदि : या हत : क्षेत्र या ते : पॅर्न : या प्येत : या श्ले : प्येत : गिहेश उत्र ग्री गिहत के ग्राया है है के अन् र व्यू र रे है त्र है है ग्राया है है वि ग्राया है है है अ'भेर'मदे'गान्द'ळेग्र अ'भेर'ने। ॲंट्र'स'अ'भेर्द्र'स'र्द्र अ'र्दे से हेंग्र अ र्शे। ।दे सूर वेदाया अपने साम क्यूर न के से दा में कि मार नर्ह्हेग'स'धेद'दें।।

दे निविद्य नु त्यायाया नि त्या ने स्थान स्यान स्थान स

यदेन प्यान श्री न स्यान स्थान स्थान

न्ये न्दरन्ये स्ट्रस्ट्रस्य निम्वा यदे खे तु स्ट्रे निवा

यात्रस्थात्र्वात् । याद्यात् । याद्यात् । याद्यात् । याद्यात्रात् । विष्णायाः स्वात् । याद्यात् ।

कैंशसबुद्राधरागरिदाक्षेत्राचारार्क्षियानायशा बुद्रानारे के ह्या र्वे विरानभूत्रत्ते के राधि समुद्राम्य गुरामित्र से ज्ञानरानभूता गुःसेरा यायासेन्यराङ्ग्रेत्यरावयुराने। यान्त्रक्षियायाने हिन्यसूर्वा स्राप्ता यासेन्यम्यस्वायाधेवार्वे। ।साधेवान्यायार्वेनान्यायायाः निवन्यक्ति केन् सेन् त्यापन्। । ने सूर स्याने सापिन पर निवान पर ह्या पर के राया सुर्यापर के राये या सुर्यापर में युवापर धेर हैं। या या हे । धर हे न भून हु न्दर थून भने नाहन के नाम नाहे ना न है न भग नहि साम कैंग्रां भेरामरान्युना गुः भेरामा ते साधित ते ले ता रे सूरागाहत कैंग्रां सन्तर्विः स्त्रिम् राविष्ठात्वः विष्ठात्वः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः सन्तर्वः धर-त्राग्री पर्ह्मिण धायाया है साधित है। । वाया है पर्दे भूर तुसाया द्येर निर्देन'म'ने'क्ष'न'ने'हे'क्ष्रम'गहन'कैंग्रान्त्रुन'ग्रुन'क्ष्र'म'ने'क्ष्रम नश्चन ग्रुन ग्रुन केंग्र न्द्र थ्रुन प्रमायगुर में लें न साधित है। नहें न प्रमा

भ्रान्तिः भ्रान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यानिः न

गवराधरा अञ्चर्भारायाह्याययम वहेवाराययावहेरावन्य क्षेत्रत् । यदेरके हे अःशुःनहें त्रु अन्य । । अन्निन यदें त्र अव अस्त अ हेशवर्वे । पायाने केंश्रासमुदाराये क्षेत्र वारासाम्याम् सामाने हिना में विका वर्गुर-र्रे । दे निवेद र् केंश्रिश्य श्वर्यं से देश मार शे ह्या य दे श्वर मदे लेशमाधेत्वत्ते ने स्वापर हो ह्या मा हुशमा है द द न हुन सर वर्गुर-र्रे । अ। विन पदे हैं यानायश वुर न हेर या गान्त केंग्र यो हैं त ने न्वाः वेन्यम् वर्षम् ने । श्लिषाः वर्षेषा वर्षः म्वाः संकेन्यः । वर्षः वर्षः वर्षः र्थित्-तुःक्वाःस्त्री गायःहे न्यूत्रुतः चुतेःमें न्यः चुत्-स्वे ह्यास्य ह्याः स्त्रःस्य क्रेंत्रत्रते त्रे म्ह्या प्रायमायाव्य प्रायाप्य स्थित प्राप्ते हिताया स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थ गुः सेन्याया सेन्यिति सामित्रा मिन्से प्रिन्यित् स्थिति स्याति स्थिति स्याति स्थिति स् उयाधिवावावी:तुयायायी:ह्यापारेट्राग्यादार्हेत्यावायया ग्रुटावायेट्रावायी: वर्तुर नर वर्तुर नरावा दे ही रेवा ही देव वा है राय वे नाई न पर से नुर्दे । विन मं हे न ग्री मानव के मार्थ न सुन नु हे या शु सुन र्ने लेश नाई दायर मुद्री

वदेवे मान्या भूनया शु ने 'दें न ग्री 'भुगया मिं न्या न भून ग्री ये प्राय यागित्रक्षित्रायास्य स्ट्रिंग्यालीयास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्य र्श्वेर्न्य दे से नुर्दे । याद मी के दिये या है राग हो राज दे है के दे तुः सेन्यायाः सेन्यानकृत्याधेत्यायाः वित्राम्यायने क्ष्मन्त्राप्यायाः स्वर्षेत्रायाः स्वर्षेत्रायाः स्वर्षेत्रायाः स हो ८ . राष्ट्र मिया अ. क्षेत्र अ. स. शुत्र न्य ५ . राष्ट्र न स्था अ. राष्ट्र न स्था चुर्वे । ने सूर पर गहत के ग्रा ग्री न भून ग्री में सारी भून परे त्योग्रा मित्रे देव द्वा प्रश्ने देव प्रमेषा मित्रे देव देव के स्वा प्रश्ने विष्ट्र के स्व प्रश्ने के स्व प्र के स्व प्रश्ने के स्व प्र के स्व प्रश्ने के स्व प्र के स्व के स्व के स्व प्य के स्व के स र्धेग्रयायाप्पॅर्पार्पात्रयाहेयागालेयास्यायाये स्रीत्राचे प्राप्ति । वर्षेत्राचे गाह्र ग्रीशनसूत्र परे भ्रीम में । दित ते गरित से । अन्य स्मान स्वीत परे भ्री ग्रामित याः प्रिंद्रिक्षा स्थान्य विद्या स्थान र्वि'त'य'र्धेन'हे अ'राअ'क्षे'अ बुत्र'रादे हिंग्य अ'या अ बुत्र'रादे हिंग्य अ'क्षेन्'रा क्षेत्राचमामामा विवास स्वयुक्त निष्टित्र द्वा त्ययुक्त स्वा । दे से दारा वा से दारा बेद्रायाक्षेद्रायाबेद्रायाधेदान्त्री के सम्मन्त्री वासान्या सेद्राया सेद्राया स श्रॅमश्रामाने साधित हैं। । ने निवित नुवित मामिन स्वामान स्वामाने से निवित निवित निवित स्वामान र्वित्रसेट्रप्राधेत्र श्रीमाव्रवायात्रे साधेत्र हैं। । से समुत्रप्रे से से सिम्सान सुन वुःर्वो नरः वेदः दं दे राषाः दाष्ठ्वः केषा यः दुः यः द्यायः चः दर्दायः व ह्रे। थेन्-निव संदे द्यायान निव के या अ हेन्-नु दकन साने न्या हेन्'न्'न्यः प्रक्ष्यः प्रश्रुम् प्रवेशक्ष्यः स्र श्रुवः प्रवेश्यहेन् प्रवेश्यः स्र स्र प्रश्रामः । हेन्'न्'न्यः प्रमः प्रश्रुमः प्राधेवः क्ष्यः स्र श्रुवः प्रवेश्यहेन् ।

दे खासुका उदाका धीदाया है दाहुवा या खाकोदाया धादा धीदा यदे दिका र्रे प्यमार्भे विमानसूत्राचरा गुवि गाव्या पार्टा विमाया ना हेट् सेटा पवि न्देशसंख्यार्थेवियामनेयाधिनर्ते । निःसून्त्र्याय्यार्थः वर्जुरर्देखेशजुर्जा है सियानायशा जुरानादर्। के ह्या या है दाहेशा हु। वर्त्रेवायविः श्रेरः भ्रेष्ट्रवाः या सेर्प्या वा प्रवास्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र गुर्दे। किंशासी समुद्रापदे प्रदेश देश हुना याया पें प्राप्ता प्रदेश सिद्राया १९८७ वित्र के विश्व के प्रमुद्ध की विश्व की विश्व की विश्व की स्था की स्था की स्था की स्था की स्था की स्था की स ह्यार्चे विश्वास्थित रुष्या विदेश्यस्य स्वायाय स्वास्थित स्वास्थित रुप्त न्यानरुयामानेन् ग्रीयाया ग्रुयामानेन् न्यूनाया धिवार्वे । निःश्वान निःगनेनः য়৾ঀ৾৽য়ৢ৾য়৵৽য়ৢ৽ঀয়৽য়৽৸ৼৼয়৽৾ৼয়৽য়৽য়ড়ৢয়৽য়৽য়য়ৄ৾ৼ৽য়ৼ৽য়ৢ৽য়৾ঀ৽য়ৢৼ नर्हेन्यरक्षे नुर्दे । रेरेर्य्यहेन्यने अधिन ने । देरवयानर वसूर नशःश्री । दे भ्रान ने प्रदेगा हेन प्रदेश हैं रान हे शाशु न हु दान शान है दा छै। नश्चन'नर्-नु-नदे कें राहे सूर-नदे ना हत कें ना राग्ने अकत हे द ते या पीत है। अरेशस्य वयान्य वर्ष्य राज्य विष्य विषय म्याया विषय ग्राम न्मेदे के मा मुन्य स्था देव में मालव के न मालव यात्रवरक्षेयायाध्येवरमदेरश्चेररह्मयायात्रेयरहेटर्ने वियायहेटर्ने । । ने क्षाया धीव'व। श्रव'र्केट'दर'वे'छिद'सर'हेद। ।वमाय'नवर'श्रुव'हेद'हेद'र

वशुरा ।रेररेरमिष्ठेर्यामायानिहरम्। ।रेर्यात्रर्मरमहेरमिष्ठेरासुःह्य गयाने कें रास बुदायां हेरा हेरा सरा होरादा है। सेरायायर प्रयूरा से लेखा . बुद्रार्सेट न हेट पाठ्य के पाया शुर्ने पाया पाया है के या या बुद्रा राक्षेत्राह्म्त्रायरा होत्राव्या विश्वायरा हा विष्या विश्वायरा होत्राय बॅरासाधिवासरावश्चरार्से । विःक्षेषाविषायाः हिनासराधीः वेतावादीः नेषा समुद्र-पदे-भ्रिन्। साम्याक्षे विश्वास्य स्वासाम्य सम्बद्धाः स्वासाम्य सम्बद्धाः सम्बद् नदेः ध्रेरः वनायः नरः वस्य रार्से । देवे ध्रेरः नर्देन से अः नर्याहेन सेवेः र्द्धेग्रथःग्रेथःदग्रयःतःत्रःदशःदेथःयःग्रहेथःगःन्हेद्दःयरःग्रहेष् । प्रवदः विगाः हुः इट वन् युन राष्ट्रिन न् र्यक्त्र ना धेन हैं। । या ना स्पन सुन ना विगाः नर्हेर्यश्यायम्भूना होर्र्ययुरिते। भ्रानिवर्र्रेन्याहेशहेंग्रायदे धैराग्राण्यार्द्राचाविवायीयाविश्वात्रिश्या वश्वराधिरादेवाची श्वाया ग्रेशमहिशमहिन्यधिवर्ति।

र्देश हे अर्थ द्वा प्राप्त प्राप्त प्राप्त के प्राप्त

त्रे भ्रम् मान्न भ्रम् भ्रम् स्वरं म्या स्वरं मार्थ स्वरं स

ने भ्राक्षेत्र के विश्व के वि

दे: द्वा की शक्ते द्वे कि स्व के स्व

क्षेत्रभाराक्ष्यां अध्याप्त स्वाद्य स

यर त्युर्र्से ।

यर त्युर्र्से वे व ने वे या प्रवे के ने या प्रवे ने या प्रवे

श्रुदे रेश सर नमूत्र रास गुन प्यार है। वि से नुसरा या र्राम्य निवरभे ह्या संधित श्री वयायानिय निवर मुल्या सर्वे वेया संवे या धीत हैं। वेशनश्चनायरात्वातार्वभाहे नरावहत्यानरात्वेदादे। देशावावशाया वःश्रेष्राश्राध्यश्चरान्त्रश्चरान्त्रेत्रविष्यः। स्ट्रास्त्रेत्राच्याः स्ट्रास्त्रेत्रः स्ट्रास्त्रेत्रः सप्तिन्ते। वे से नसून हिते हो ज्ञा हे नर वहवानर हो र पदे स्वा से ह्याक्षेत्रयायायार्थेवायायाविवार्वे विष्ठा दे क्ष्रवायारक्ष्यात्रायार्थेवाया यायमार्येषायदे तुमाय हेर्न्य इर्म्य विद्युर्मे विश्वत तुः इसाय वस्र राष्ट्र प्रतासिक स्था निया निया स्थान स नः अधिकाते। अःह्याः पाकेन् उसान् अन्य विद्यान्य विद्याने । विष्ट्रमः के नर वहवा नवे दें त इससा बससा ठ८ ५ से देवा सार्शे विवाद है । पाया है । पार *ॻऻढ़ढ़ॱख़ऀॻऻॺॱढ़ॆॱऄॖॕॻऻॺॱॻॖऀॱख़ॕॺॱढ़ऀॸॖॱ*ड़॔ॺॱऄढ़ॱय़ढ़॓ॱॺॖऀ*ॸ*ॱॸॗऄॱढ़ॆॱॻऻढ़ढ़ॱ क्षेत्राश्राभुद्भितायश्रास्त्राश्चाराभ्यायभ्यात्राभ्याः देव्हान्या

न्तुः अत्याक्ष्यः भूत्रः भूतः व्याक्ष्यः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्ष्यः व्याक्षः व्याक्यः व्याक्षः व्याक्य

न्तर्ति।

निह्न क्षेत्रायान्य स्वार्ति स्वार्ति

चीयःतःश्रःश्र्यःयाद्वःयाद्वःश्रः व्यायायःयःश्रः व्यायःयः विश्वः श्रः श्रः व्यायःयः श्रः श्रः व्यायः विश्वः श्रः विश्वः व्यायः विश्वः श्रः विश्वः विश

याक्ष्यात्र । क्रिंश्याः सम्वाद्धः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विषणः विषणः

गायाधेर्द्रदे दे द्वरहें या नायश तुरानदे हिरा भे ह्या में विश्वास निवर र्अःहण्यिःधेरःईवारायमानुहारेविमानुपरावन्तरार्वि ।देवेधेरा याह्रवरक्षेत्रायाने हिन्न सुर्वा ग्रुप्त विष्य प्रमास्त्रे वाया धिवर्ते विष्य प्रहेन नर होत्। क्रिंश सर्वित द्या हो श खेव हिना ही। क्रिंग र क्रिंव रा प्या स धेवा । शे ह्या याया यहेव या उस हे दारी सामा हवा के या सामी से प्राची या व नश्रुव पर तुरु पर वे साधिव वे । दिव श्री शामानव पर नहें दि हे वा वि ख़राग्रारार्क्टियानायया तुरानारी क्षेत्रमानी बियानहें नामिता क्षेत्रमानी क्षे ग्रीशहेंगारायासेन्दें विश्वासर्हेन्याधेवर्वे विता ने क्षिवं वे पारा ने क्ष्र-भ्रे अश्व शुँग्राय ने निह्न भ्रे न्या । निव श्रीय में व वे निश्चन ग्रु ग्रु न स् हेन्'भेन्ना गहनक्षेम्र न्य से सम्बन्ध से से सिम्र न्या में सेन्द्र से स वर्त्यात्रात्रेयायाले यात्रात्रात्रात्रेयाचे वित्रात्रीया वित्रात्रीया यन्। अःसम्भन्भवःम्। विश्वनःमःम्भनःस्यः भेवा १८९ १६८ ह्वा पा हैया न त्य अ सा गुर हैं विश्व सून प्रवे से विश नश्रव राः हैं या नायश तुरान हे ना शे न सा हिना या है नाया तुन या है। दुरा बन ग्रारा यर्देरर्दे।।

म्यायाम्यान्त्रः स्वायाः केन्द्रा हिंयान्य स्वायाः स्वयाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्वयः

क्रियानायमामानुरानाप्राप्ताप्यम् क्रुंनामेप्य स्थित नरः परः वशुरः र्रे । देः क्षरः हगः यः हैं यः नः यशः शुरः नः सः धेवः वे रायः नवित्रः र्रें व्यानायश्या सुराना ह्या पर्वे विश्वाने व्यून प्याप्त हो दे र्भे ।दे सूर पर वर्षे द या साधिव हे दे दर से समुक रावे में वा राव गा हु बेन्द्राक्षेत्रवृद्द्रविष्ववेषावाधिन्द्राक्षाधिवादी विद्यापि विद्यापि याते से नात्र से प्रतृतानि प्रतेषाना से नामाने वे से माने प्रता से सुतानि र्द्धेग्रथःदग्राग्रीयःवर्द्रेवःचर्द्धेयःचर्हेदःयरःधेःचुद्रि विदेःभ्रदःद्य ह्येंद्रितः <u> ५८:तुस्रामाकेन के सामुजनाक्षामुजनामिके दिन के ५ के ५ के सामिक स</u> नर्हेन्यया वर्नेरव्रोययार्स्य नर्हेन्यवेन्ने धीत्रवे श्रीरदेशयर नश्रुवाराञ्चवारावे देवातु धोवारा देवावात्र मे स्वारा श्रुवारा से वार्ष याधिवार्वे।

त्रीः अतः तुः वातः हवाः याते सेवाः यतः श्रुः वाः याधिवा है ति याते हितः यतः श्रुः विद्याः यतः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः विद्याः या विद

याव्वराधरायात्याते दिये अर्थे वर्ति । श्वर्ताय स्ट्रीत स्वाप्ताय स्वापत्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय

ने यस ग्वन पर्वे के स हे हिंग्स पर हिन्दे से न हैं। । न में क्रिंस पर पर गुनःचवे के राने निर्ध्व पर निर्दे निर्धित मिराया वहे गा हे व पर नन्ग्रायायि क्वेंन्ट्रिया अध्वायाये निया भीता के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के व हेट्डि:रेग्राय:याथेव:हे। इयाग्रद्यायाग्री:श्रेरःयव:यग्राव्ययाःवययःउट्गी: नश्चनःयरः ग्रुःनवे र्के अ हैं ना अ य छे द । इस ग्राद्य र अ जि य अ व र दे 'हें न यर र वुर्यामायाधीवार्वे। १दे छिदाग्री श्री स्थानमार्थमा छेना छेता छेता स्थान स्थान श्री स्थान श्री स्थान स्थान स्थान धरः गुः चंदे रे के शद्रा सम्बद्धा के शद्रा सम्बद्धा सम्य सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा केन्-ग्रुचःमवे-<u>भ्र</u>ीमःत्यःने-त्यसःगाव्यःमवे-क्रेसःने-हेन्यसःमकेन्-वे-सेन्-सवेः धिरःर्रे। । यदान्युनायराग्चानवेः र्क्ष्याद्दाः समुन्याययाः र्क्ष्यादेवेः विश्वास्त्रीत्र मुन्ना नुति के शं उदार्दे विश्वानु निष्य ने प्राप्त निष्य ने प्राप्त निष्य ने प्राप्त ने प्राप्त <u>พราทุธิพาทานพาธิพาธสาธิราราวฐราฏารัสาธิทพาราฐีพารานพา</u> वे अ भिव के । वाय हे हिंद ग्री अ न सूच पर ग्रु न पर सुच पर ग्रे न पर क्रॅंश-८८-क्रियाचे द्राचे त्या अन्त्र विश्वेष विश्वेष गाये क्रिया द्राप्त प्राया गुर-रगानी अह्या नरू अन्य अभन श्रुवा पर जुनिये देव हैं वा अन्य से त्यःशं वियः सूरः नहें र विवः हैं।

मालवर्त्रुः वर्ष्यिरः के अः अश्रुवर्धिरः निष्ये र निर्मे द्राय्ये । मालवर्त्रुवर्षिरः निष्ये अः निर्मे वर्षे व त्रुः अः धेवर्षे । मालवर्त्त्वाः विः के अः निः हिंगा अः यः छेन् र निषेत्रः निष्ये र निर्मे र निर्मे निष्ये अः धेवर्षे देवे अः ख्रोन् र निर्मे निष्ये ।

दे'ल'णर्। नश्चन ग्रुदे केंशन्र श्चर शे ग्रु । नर् गे श्चर हे नश्चनः नर्भः निर्मात्रे के सान्दा सम्मात्रे समात्रे सम्मात्रे समात्रे सम्मात्रे सम्मात्रे सम्मात्रे समात्रे दे में निर्मे हेर्प हेर्प अर्थे रामिर के मिर के यार विया प्रश्नुय प्रस्त शुर्विक राष्ट्र श्रुर प्रस्ते श्रु विष्ठा यार रहे श समुद्रामितः निर्मेर निर्मेन स्थान स्थान स्थित स्थित स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स् नश्चन'मर'तु'नदे'तुश'म'हेर्'य'र्सेग्रामश'र्केश'र्र'स्र शुद्र'मर'श्चर' नर्भः नुर्दे। । नुस्राम्यादे निस्त्रुनः नुस्रामाया सैन्याया सेस्राम्या सेस्राम सेस् समुद्र-पःतुस्र-पदे-नङ्ग्व-पर्य-तुःनदे-केंशःहेन्।सःपःहेन्।से-तुःन-न्निन्। रासेंद्रियन्ययाययाधे दान्नी कें याविदार्धे दाया से वायायया न सुन हुदे के अन्दर अश्वर या दे अप्येद दें। विद्या यहि अप्येप्य दें । नर्हेन्-न् नसूत्र-भवे-सेर-न्या-यी-क-न्या-हेन्-हस्या-भाषीत्-भयान्धेरः नर्हेन्ग्यरम्भाषायायाधेवार्वे । द्ये नर्हेन्यायार्थेयावयावी । देनविवा र्वे विश्व हेर हुँ र न। । नश्चन ग्रुप्य पर दे नविव विश्व । हे नर हुँ र न रेग्रायायायीत्। । पर्ने प्यायराने निवेदार्वे विया ग्रयायि श्रीते हे परार्श्वेर नवसनेवे हो ज्ञाणीव पर रुट हो। देवाय या या यीव है। । वसय उट ही। श्ची ने ने निविदार्ते विश्वान्य स्वाप्य स्वाप्

माया हे 'हे 'ख्रु' द्राया हो 'या से 'बिमा हु सा सा दे 'हु सा सा ख्रुं हु से 'ब्रिस सा ख्रुं हु से 'ब्रिस से 'ब्रिस

ने त्था साथित त्या हिन्य साथेन स्थित स्थि

देः यानाया हे द्वाचा पाना है सामा साम है साम है साम साम है स

राधिवाने। न्रामी श्रुश्चिमाया त्रुयाया हिनाधिन । या वार्षेवा से विश्विमाया ॻॖऀॱॺॊ॔ॱॾॣॸॺॱख़ॕॸॖॱय़ॱॺॱॺ॓ढ़ॱज़ॸॱॸॖ॓ॱॸज़ज़ॱय़ॸॱॻॖॱॸढ़॓ॱॸॕढ़ॱॸॖ॔ॱक़ॕॺॱऄॱ सबुव माने नरार्श्वे रानरा हो दादे । साहु सामा दि । सुव । से ना पुर हिना माने दा <u> न्यायाः सर्ग्यः निवः निवः निवः स्वारं स</u>्वारं स्वारं स् गहेन रेंदि हैं गरा ५८ ख़न राधिन हैं। किया समुन पदे हैं निया हुया रा हेर्गीयाधी ह्या या हेर् हियायाया है। यो देवे या हेद्र से देवे से वा स्वा महिद्रदर्भ्वरम्र विद्राम्य विश्वरायोग्य स्तर्मेत्र के स्रेष्ट्र स्तर्भ गुन पवे भ्रेर ह्या प हेर या के रा से समुद पा रंस गुर ह्या पा हेर वमोग्राश्चर्तिवा ने स्वाप्ता हिन्स् स्क्रीं वश्रामाने रावसूना गिया ने·ळॅंशःसबुद्रायायाचेईदायराष्ट्रदायराष्ट्रीःक्वेंद्रशायदाकेःदेवेः महेत्रसेति स्मार्या स्वाप्त क्षेत्र किया हु कु नायनी मार्या धित समाय कुमाहे। <u> नियम्बर्धित स्वर्धित स्वर्धित श्रुष्टी स्वर्धित स्वर्येष्ठ स्वर्येष्ठ स्वर्येष्ठ स्वर्येष्ठ स्वर्येष्ठ स्वर्येष्ठ स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्ठ स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्</u>

तुस्रायाः सँ वास्याः से हिं वायाः स्थाः सहत् यायाः से द्वायाः स्वायः स्वयः स्वयः

याध्येत्ते। वादादे स्थेद् साथ्यस्त्र ह्यास्य स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्य

ने त्याधान स्वायत्त्रे स्वाई न्यते हुँ स्वयः विष्णं विष्णं हुँ न्या विष्णं हु

यायाने नियास्त्री सुन् श्री भिवास्त्री यान्त्र के यास्त्र श्री यास्य स्त्री स्त्र श्री स्त्र स्

र्द्धत्यागुरुष्यान्त्र्याय्ययान्ते प्रत्यास्य क्ष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्य

ग्वित्र शेषा नह्या मदे खे तु हे खु मा

देवे श्वेर हे शशु द्यमा य त्यश्य प्राप्त स्था वित्र हो । वाद त्य त्या वे प्रस्त स्था वित्र हो । श्वेर प्रस्त क्षेत्र क्षेत्र

नर्हेन्यम् नुर्दे | मे लेगामेग्राशाश्ची श्वाणित्याया श्वाणित्याय श्वाणित्य श्

म्बिन्यान् विष्यान् स्ति हैन् हिन्द्र हिन्द्र

स्राप्त विकास के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य क

वर्त्रेयामन्त्रे मिर्देवास्य निर्मात्रेयामन वर्ष्यम् निर्मा स्त्रेयाम स्त्रे प्राप्त स्त्रे स नश्चर्यायार्श्वम्यायाविवाम्बन्धीयोग्यास्त्रेत्रास्त्रीत्रि ।देवेरिधेरा वर्त्रेवायारा उत्राची के या चीया वर्त्रेवायाया नहें दायर ग्रामाधित यदे भी रास्टाची केंशाग्री है प्रत्रेया प्रदे हिंदा प्रस्ति होदा प्रदे हुदि है शार्षेदाया साथित प्रस् अर्कें द्रायश्वा वर्ते 'धे 'रेग्रथ' ग्रें श्वा धेश दी । नर्हे द्रायर ग्रुं न हे द्राये वन्। ।वावान्वाने। विन्यम् की श्वान्यम् विन्यम् विन्यम् मुन्द्रा वर्षेयासराक्षानवे मुन्द्रा भे विषयासवे मुन्दिराने मार्था द्र ख्रुन पार्ड अपि हिंद प्रमानु दि ले अपे ने में प्रमान के <u> व्यवः भेवा । ने व्यवः अराह्यः श्रीः स्टावीः दे से संयोधः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वर</u> न्नुयादयाद्यावेयान्द्राची न्द्रयासुन्नेयाप्यान्यान्य वःश्रेष्यश्चादेः बन्दन् श्चे न्त्रेद्वाद्यदे श्चेरन्ते क्षेत्रः बन्दन्यः क्षेत्रः वाविः समुद्रायाधिदार्वे । सेदायाद्रायाम्याद्रायाद्रीयाविसमुद्रा यक्षेत्रः व्यान्यः व्यान्ते । प्रदेश्यान्यः स्यान्यः स्यान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्व नर्हेन्यर ग्रुज्य ह्र अ ग्री विद्यम्य त् ग्रु अ त्र अ नर्हेन्य वे श्री र से । विद्य मश्राह्मश्रायासदरायायार्श्रेषाश्रायात्वे स्रीयमेवार्वे। १दे व्यूप्तश्रायायदेर

मान्वराधरा हे न्यरायहमाशाधिरा श्चाने स्टाने स्वाधारीयाश शुःचर्हे न्याने त्यायहमा हे न्यरायहमाशाधिरा श्चाने स्वाधाराधिता ही । मान्विमामाराखा हे न्यरायहमाशासदी र्दे स्वादे स्वाधारायी स्वाधिता र्वे विश्वान हे ने विदान प्यापन से से नि हे ने ने नि स्थान प्यापन प्यापन हर्त्रा विश्व त्राच्या व्याप्त स्विश्व त्राचि त्र त्र त्र त्राच्या व्यव हर्ते । ग्रीसम्बद्धान्त्रम्यास्य प्रद्यान्य प्यान्त्र स्थित् । स्थित्र स्थित्र प्रदेश स्थित । स्थित्र स्थित । यनित्र । र्ह्निः धे रहेषाया मन्दर् धेरार्से । द्येरादा ग्राम् भेरे दे प्राप्त रहे वेशः त्रवः यः रदः में भूरः वर्दे दः यं वे कुयः ये द्राः त्रवः ये त्या क्रें सक्दर्यः यरः क्रें। प्रति संस्थित हैं। । देवा श्रा श्री क्षा दे 'द्र स्थ्य संस्थ है 'वर वह वा श्रा संस्थ । रेसाग्रीशाहेर्प्यराग्रेर्प्यादी ।गुद्यप्रप्रस्थिताश्वर्षायाराधीयविद्या ।गुर् यानेशामासद्धरशामाहेरायाहे देशाहीशाम्हिराममास्राहेरास्री द्येमाहा बे हिंग ग्रांव ५ ५ ५ दे हैं वा ग्रां खु ह ५ द वी ५ ग्रम से दें बिया हु न नविवार्वे । विवारवरानापरारेग्रायारे न्दराय्वराये यहारा हो। वियायायर्थे नदेर्न्नराने भेर्न्स्य भेन्ने । भेर्न्न्नर्शेश्वर्न्न्न्या । र्ह्में सेन्यम् प्यम्प्रम्य विषय् ने स्वर्थन्त्र विषय् विषय् यव निर्माय साम्य अधिव निर्मा श्री निर्माय निर्मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत धेव व वे ह्याय वह्या प्रवे क्वें धेव हव या वह्या प्रवे क्वें या के क्वें या प्र वशुरार्से । भेषान्सरारेविः क्वितिन्देशारेविः हेतायाव्यास्याधिताने। इस्रायम् साञ्चाम्याया इस्रायायाया वात्राये हिं से दाये हिं मार्थे ।

ग्वन्थायम् वहेश्याये क्ष्याम् व्याप्त क्ष्याम् व्याप्त क्ष्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

वयाने द्वाराम्य नक्ष्म्य प्राप्त हो। देवे हिम लेया निव र लेया प्राप्त मार्थ र र र्देव है ख़ु न अ पीव पर प्रमुस्रे । मावव पर । क्षे र्से माया यह से हि । ८८.वी विवायम्यहेव.स.इस्रायायमा विवायहेवारासंवीयवाया वरत्युर्व विराधरायरार्वे वहेवायरावयुरावादे द्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व <u> ५८१ विक्राम्य अहराम्य दे विक्रामा वेक्राम्य के वाक्रामा देवे </u> कें खें ब हुन में अप्यन पर्दे गा अप्यायाया यस प्रमुस में । दे वे कें खें न हन ॻॖऀॱख़ॖ॔ख़ॱढ़ॺॱॾ॒ॺॱॸ॒ॸॱॺऻऀऄॺऻॱढ़ॹॗॸॱॸॸॱक़ऀॱज़ॖॺॱय़ॱख़ॱऄढ़ॱॸॖ॓ऻ<u>ॼ</u>ॸॖॸय़ॸॱ बेर्'यदे हिर्दे । धुयाविषाय इस्राया धेर् नित्र ही द्वाप द्राय अस्स्राय शुर्द्धेरः नरः भरः तुषाया साधिवार्ते। । यवः हेगाः तुषाया या सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया से न्रें अर्थे हैं गुरु के लिया में त्या मी की भी विर्मे विरम्भी विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे वस्रकारुन्तुस्रायाधीदायदे धिरावेशास्रादी रेपा उरान्त्रायारेपार्थे। र्शेर-सव-वर्देग्रथ-सर-ग्रेट्-सर-वशुर-व-तुय-सन्य-श्रेग्रथ-संदे-द्रिय-से-यावे मा बुदान से दाये ही मा बेदे । वा बेदे । व र्भे महाराज्य के किया कर र में मिया पा पी कर में।

ने न्वा शन्त्र ह्या व्या प्राप्त विष्ठ विषठ विष्ठ विष

यहम्यायायाये वियाने प्रतायायाया महिन्यायाये विवादी श्रीत्र मध्या १८८ । यहिन्यम् सुद्धि।

न्ह्रीं स्ट्राचित्रे देवा श्राद्या त्या प्या स्ट्राचे स्ट *दशःह्रशःशुःनिर्हेन्'राधिदार्दे'विशःश्चेन्'राशःनेषाशःन्रःखृदःरान्नःनेषाशः* ग्रे-दे-ते-लेन्-प्राया-स्वायान्य नार्देन-प्रायीत-ते । विनेन-प्यन-स्रुत-दे-स्रून-श्रेन्यः स्ट्रम्य हेन्य म्हर्ति। ने स्ट्रम्य मन्द्रिन्य हेन्य । ने स्परः स्ट्रम् नर्या निया की मुन्ति । नर्या विश्वा की सूर मन्त्र स्थरा ग्री-देग्राश्चा क्षेत्र हेत् प्रमान्ति है अपने प्रमान्य मान्य स्वर्धा स्वरंधा स्वर्धा स्वरंधा स्वर्धा स्वरंधा नर्हेन्याधिवार्वे । विःश्वेष्यरानेयायावे नेयायान्याय्वायार्व्या श्रीयार्हेनः यर हो दःय धिव हो । बाददाय दे दे दे दे साथ व दे ले या नहें द दे ले व गयाने ने स्था ने स्वराह्म स्थापर वर्षेया पर्य । पर्य न साथित विशास्त्रा यम्पन्त्रम् । ने ख़्र रं अ ले अ या या ने प्रमा ख्र या प्रमा प्रमा या ने प्रम या ने प्रमा या ने प्रमा या ने प्रम या ने वसायवेषायवेष्प्रवाह्मान्याद्वार्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र वेत्यन्ता देखासवायाम्सस्यायाववेषासरस्रहेवासरावहितादे। म्बर्यायाम्बर्याच्यान्यात्रः व्यवस्थित्रात्रे स्वर्धात्र विष्यायः स्रोत् स्वर्धायः स्वर्धायः स्वर्धायः स्वर्धायः यशर्शे विश्वाराने त्यापाना नेवाश्वार्थसम्बर्धश्वार निर्वायः र्शे स्ट्रेन् हेन् सेवा विश्व नहेन् हेन् हि

तुयामार्थेषायाण्चीमे प्यूनमें त्रा अयामार्थे श्री ने प्यमायाम श्री महास्वासीय विश्व क्षिया विश्व क्षिय क्षिया विश्व क्षिय क्षिया विश्व क्षिय क्षय क्षिय क्षेय क्षिय क्षेय क्षेय

तुस्रायाः सेवासायाः सूस्रातुः याः सेवासायः यह वाः याः यो त्रात्यः सेवासायः सेवासायः सेवासायः सूस्रात्यः सूस्रात्यः स्वास्य स्वासायः यो त्रिः सूर्वे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्ट

देवे भ्री र गार्देव के अन्य र श्री वे देव मिर्या ह्वर न र मुन्त है । पर र्देन त्यः धेन स्याधेन स्यादेवे से स्यादेन त्या विवास प्राप्त स्था । दे दर्ध्वर्धित्त्र्यायायार्थेवायायात्वे व्येद्रायदे सुर्यायहेद्रायर ग्रुप्तायेत् यदे भ्रिरने प्राथ्व यार्षे प्राय्य हिंदा है राज है स्र र द्वा बदा ग्राय हुन स येन्नि ।ने प्यन्कु सळव येन् प्यन्ति । भ्रु मन्नि स्यापाने मधी ५५ मी मु अर्द्ध पाव्य अर्थे में प्रिये में स्टेश में स्ट ब्रिं । ने क्षेत्रम्भ न विन्यम न् विन्यम न् विन्यम न विन् यदे श्रुप्यमार्थे व पृत्र स्पेर्प्य प्रायाव्य साधिव साधि हमाया यह वा साचे निव हिर्मे न ता र्रे न रा निव न दि न दि सामा रा र्रे न रा ना ता ता निव न न धेवायाष्ट्रायम्तु छेन्यान्याष्ट्रायम्तु छानम्यस्य मायाने गडिगाययर र्श्नेर्सेग्राम नविद्या । यद्येय प्रदेश्यें तर्म र प्रदूर र प्राप्त । दे स्वर्स्याधेवा र्वेन्सेदेश्चाने नेन्त्र मुंचे प्राचार्य माना स्वर् ग्रीशादे 'द्राष्ट्रव प्रमायवर प्रायाधीय दे।

र्थेव से हिन निर्वाय माने सुदे में वा साधिव में विश्व महिन में

ग्वितः धरःश्चे दे विश्वास्य ग्रहा दिवायायः देवायाये से दायादे से स् ঢ়য়য়ৢঢ়য়য়ৣ৾৾ঀয়৺ঢ়ৼৄ৾য়ৼ৾৽য়য়য়য়য়য়ড়ড়৾য়ৼ৾ঢ়ৼঢ়ৼৢৼয়য়য় यार:तुस्र:स:हेर:य:सँयास्र:सदी:रेवास:र्रः:खूद:स:रेवे:छुर:सर:हे:बर: <u>त्त</u>रकारावे भ्रीराङ्कायावह्या प्रवे तुष्ठाया केराया वेषाकारावे । ह्या प्रवे वर्देन प्राधीन विं । नेवे श्रिम वर्दे । धरा नहमा समा से श्रुवें । ने व्यव ने श्रुम याष्ट्रित्रायस्यदेत्रायस्यकुस्याधेवारे । तुयायायार्थेवायायदेते प्रा ग्रीसप्यदस्यायवरास्रादेशायदे | दिन्ग्रीसप्यदस्यायानेसाग्रानदी यारायार्देवाग्री: भ्वायाग्रीयारेयायराष्ट्रीतायाष्ट्री द्येरावाहेतायराधी वर्षे वेशमायश्वात्रार्थाः वन्तर्भे वात्रार्थाः विश्वात्र्यं विश्वात्रं विश्वात्यं विश्वात्रं विश्वात्यं विश्वात्रं विश्वात्यं विश्वात्यं विश्वात्यं विश्वात्यं विश्वात्यं विश्वा <u> २४.२३,४.५.७.४ूव।४.२.७.४.५४.५५.३</u>४.३.४ू४.३.२.७१४.५४.५ू४. ग्रीसायम्यायार्थेन्यायार्थेन्त्री । निवेधीरानेग्रामायार्थेन्या मदेःश्चे देवारान्दाक्ष्यामदेः ह्नामरा होनामाय्य त्वादापदा श्चरानरा शेः गुर्दे।

र्सेन्यान्। श्रिण्यान्यान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्ति । श्रित्रायः स्वान

ख्रुव्यः मुद्रः ययदः यापीतः है। विश्वयाया वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः वर्षेत्रः याचे ८८.शिष्टेषपुरस्थात्वाताकात्राचु.र्.शब्दार्यातास्त्रीरायराचीयपुरस्या न्यात्यावे साधिवाने। वाष्यरावावे। वार्नेयाववेवान् र्नेवासे विस्ता क्षरकेते क्षर्रा सेर्'स'रे'नवित्र'र्'त्ररे'ख'लर:र्ह्य । यात्य'हे'वि'र्ह्यान्ह्रेर्'स'ख'दे'र्र्र् धेशःदुरःविगाः ग्ररःर्देवः ग्रीः हैंगाः यः शेः न क्रीटः रें विश्वः यः देः नक्षयः विदः नह्नाः मञ्चरन्यः ह्री मिर्ने मानी ने वा दुर बर्ग ग्रम्। बिव वयर के मानि वा या रे धेश विह्नित् नुःह्रेन्य स्वरंदे त्या प्यदा । प्यदाना स्वरंदे हेन्य सामिश्व । हिः ख्र-देवे:श्व-८-ववे:श्व-८वा:वे:ववे:श्वरःश्वरःपःने:ववेव-५:ख्रुद्धवः८८: र्श्व सेंदे श्वान्य यह तर् रायदे श्वरा सेंह से। हे भून न् वे नह त्यदे श्वर इट वर ग्रह देव शे हैं नाय के न हो हैं ने का या न ने का मश्रापार्देगार्देव श्रीशार्श्वेदायां हेन् प्रविव प्राप्त्र साया प्याप्त स्थून पे गे नरःगुःनःभेवार्ते । श्वःमः ५५:ग्रेःनाई ५:मःभेवावादे देवाग्रेः १वायःग्रेयः र्देव मन्दर्भे लेख नहें दिन प्राप्त के विकासी स्थापन के कार्य के कार कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य याज्ञित्रस्त्रम्। हिन्यम्न् हेन्यन्नहिन्यम्न् हिन्यम्न राधिवार्ते। दिवागाववायावे श्वादे दिवाशे प्रमन्दि।

मावराधरा दर्भामार् सम्बयानमात्मुम् । दर्भामार्वे र् सा यशमाव्रस्थित्रयदे भ्रिम्प्रस्थित्र द्वामान्य विष्टा । विदेशिष्ट्रीरायरार्वित्रायायवित्रहे। वित्राप्तित्राष्ट्रीत्रार्भित्रार्भित्रार्भित्रा वर्षामानमा अङ्ग्यार्थेवार्यवे ने निमानामाने अञ्चनमा के से निमान वर्रे सूरा गरेगाय वह्या य द्या य द्या य दी। श्चि द्या रूट दें दें श्वें ट स धेव।। यार प्यतः यार या र वा र वे तर्रे प्रदा । अञ्चल वे सु प्या यो पे तर्पे व व वे प्रदा <u> ५८.५५,४.५.५वा.७.५८५,२वा.वे.५७,५५५,७</u>४.वाट.जश्रावावे.सर्वर धर दश्रा गय हे हे अ ध हे 'दग दे 'यो दे 'ये हो है हे 'वित्य सु हो ज्ञा श्चेतिः देव त्ययाधीव प्रयादेव श्ची श्चे श्वमाद्द श्वव पा नेयाप्य श्चा प्रयोधीय गहिरागितः सुदे सुँ र र प्येव दें। । ने सूर व गहिरागा पर गवि स शुव सर वशुरानाधेवाने। वर्षायवेर्नेवान्याध्वायाधेवायवेर्धेरार्नेविव। वर्षे

यारे विवार्श्व रेवि श्रुभाव भे प्रान्त र्यो रिवाय वे साथ वे साथ वे साथ व इस-८८-५ग्रास्ट्रिं सेवि-स्वि-सेव-से साम्हिन-सानि साधिन न ग्राट स्या है। चनान्दरह्रभान्दरनेवायाग्रीविद्यासुरद्यासरामहन । नायाहे ह्या र्थेव से निवेद दु श्री राम हें दिन वी हो हा निवेद के लिया निवेद के लिया हो हा निवेद के लिया है कि निवेद के लिया हो हिन के लिया है कि न्राधुव्यान्याः ग्रापित्राः सुः वर्षः स्राप्त्याः स्याप्ताः वर्ण्यः स्राप्ताः स्रापताः स्राप्ताः स्रापताः स्राप्ताः स्रापताः स्राप वे देग्रायायायायायात्रा हेदे ही स्वावा स्रम्यहें द्राहिमा देरास्वायमा नर्हेन्यायाने स्रमानेन्त्र स्रमानेन्त्र स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमान व्याप्तर्भासदे ध्रिम्में विभावहें दास दे प्यम्मेया सामाधित है। यद यशक्ता वे कें कें या वित्र केंद्रिया या वे वित्र बन्दर्भिष्ट्रियादायश्चे केंस्याबन्दिश्चिष्ट्रियास्य वित्र र्वे। । त्युर-५, द्वान प्यर-देव श्री श्रे त्राया मी श्रु व्यय पीव है। श्रे हिंग्य य यात्री विद्यायात्री से सामा प्यान विद्या स्था से विद्या स यदे विश्वास्त्र स्त्र स् नः परः सः पेतः दे।।

यदे भूमा मालव शेया श्रेवा यदे भूम श्रेव शेव श्रेव शेव श्रेव माण्ड या श्रेवा शाय श्रेव शेव श्रेव शेव श्रेव शेव शेव श्रेव श्रेव शेव श्रेव श्र

व्यामी देव दु ध्येव व वे द्रमा वाद्या प्रवे श्रूर व्या र है। या वे या व्या स्था <u>न्ना न्निन्यायाधिवाग्रीः स्रमाग्रीन्निन्ने केन्निनासायम् ग्रानवे भ्रीमाह्मः ।</u> म्बर्याम्बर् र्रें रायाधेवर्ते । निःश्वरावर्ते इयाम्यायाया से स्वर्या क्षेत्रात्री यात्राह्मसायात्रसायीः क्षात्रेसात्रेदाते नाहेत्रात्राधीतः यो किया करात्रादेश याधिवार्ते। । ने भूमावाधारार्थेवारे विश्वादेन मुक्ता अध्यक्ष मुक्ता विश्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य व्राह्यन्त्रप्रस्तुः होन्यान्नाह्यन्यस्तुः हान्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान न्यान्ते से विया व से न्न प्रवे सुँ या साया क्रें त न हें न प्रवे । हे सूर व से न न यायान्द्रित्याने निवेदात् वात्रात्यायाया भी वात्राया यात्रात्र्याया इस्रसायसायर्भारामाव्यक्तिरामाठेमानसूनास्य गुनारे त्यारे देरे रे प्या इसरायवसा दे द्वा इसरा की व्यद्भाया विवास सामा हिनारा गरेगात्रशत्र्वापायपरक्षेश्चेरार्री ।विश्वात्वरश्यारा बर्द्रात्यपर गहेरागासेना । ने त्यापरागिवे समुक्षेर्य रासाधिव त्या छिन सम्पूर बेर्पान्यावर्षित्रयम् र्वा व्याप्यम् वित्रायायायी वर्षे । । ते वित्रे वित्रवाषाया श्च-द्याना डेया हु त्यू र यहा देव द्व द्व द्व र या स्ट्र इश्राद्यायाया दे द्राध्य स्मार्यक्र स्थारा दे निवेदार् श्रायशायर लूच. ध्य. ट्रेंच. ट्रेंच. यं यो हे. ट्रेंच. यं र. वं वी र. वो ट्रेंच. केर:न्धुन:सर:बुर्वे ।

ने त्या र्ने व श्रीश्राह्रशन्दर्धिव प्रव प्रवादिया । याय पे रेने व या देया था

वह्माना श्चि न्द्र हो ज्ञामाने अप्येद सेना । माय हे प्येन हन सेन से न्दः क्रें तः सें खुद्दवादेः नेवा शः न्वाः ह्या या हेवा वा वह वा यदे ही नः वा वे सबुव'रा'न्र'ष्ठिन'रार'र्'हेन'रा'न्र'ष्ठिन'रार'र्'हे'रा'रा'र्षा'र्षेव' र्वे। जिन्नन्त्रः क्रेन्यं अञ्चलने नेग्रान्य थ्रन्य प्रायाणमा जिन्या अपन या अञ्चलवे नेग्रा व्यव निव क्षेत्र में निर स्व मा प्या प्य निव के । ने अव गहिरा न जिन जिन के स्वा निम्मी के स्व निम्मी निम्मी श्रृङ्गयदे ने माश्रा श्रे दे ने दाया खूद पाने दे के माने समुदाया भेरा साथित धरा वुः नवे प्रदेश में वसा महिका मा महिमा सा प्राप्त प्राप्त सा सा से विकास मिला से सा सा से सा से सा से सा स <u> ५८: व्रे : व्रमाक्षेत्रप्र अध्यायवे श्वेत्रः में । प्रे : सूत्र वरे : विमार्ने व : या महिकाः</u> श्चेर्यस्थ धिवर्ते। दिवर्यमिष्ठेशहेख्या दियविवर्त्ञा सेवार्यर्द्ध ल्या त्रित्र त्र अ विवा निर्दे न सम् त्र व्यामा । विव र तः त्र त्र ते ने वा अ न मार्थितः हराने क्षुरमहें न समायक्ष्य रामाधीय कर ने प्यान प्यान साधीय है। । ने निया गी'गवि'सशुक्र'रा'य'पपट'वर्षेय'रा'स'महेंद्र'रवे'से र्दे । देवे'सूद्रा'य' षराष्ट्ररायराचेरायां केरावेरायायायीयार्वे। ।देग्यूरायारे विवारिवायार्या ल्य भित्र भित्र स्थान हिन्दा हिन्दा हिन्दा महिन्दा हिन्दा भ्रासद्धरमाशुम्बयानरावशुम्। नियाने सेनामान्द्रास्त्र नियाने स्वासान्द्र स्वासा इश्राम्ची वित्रायराम्बिमात्यानाईत्यानेवे भीत्राहेतास्य स्वाप्तराद्यारार्द्र्या गरःगे भ्रेराष्ठ्रपरः र् हेर्पायात्रप्रे इया वे द्वारा देवे भ्रेर्थः अर्थंदश.तर.तर्थंर.रू।

देवे भ्री स्टेश संसे दायाया विषय सुतास से दार्ची विषय है। अर्द्धरशः धेरः नर्हेरः धरः शेष्टेर् छेशा विष्यः हेष्ट्रेश्वरु स्रुशः र् से विषाः हेष् नरः त्रुरशः परे विष्यश्रुतः परः अद्धरशः परः वशुरः नशः निहें नः परः शेः वर्देन्याने वर्त्रेयासम्बुर्यामा बुन्यम् सेन्द्री । वाराया र्ने सस्दर्यासंदे कुः धेर्प्य भेरामि अध्वास्य धेर्य स्य हिंदि है। दे स्य मिल्व से हिंगाम बुसारात्यार्सेनासारावे विदायमाने व्येदात् वितायामाने हिंदासमासे वर्देदार्दे वेता वर्रे हे से बर्परम्यम्य न है। गहे गाइस्य पर नस्य न हे सर् न बुद क के है : श्रेद दु दें क : व्या के दें न : व्या श्रुवे : ग्रुवे : ग्रुवे : ग्रुवे : व्या व्या के दें : व्या नर्हेन्यरपर्देन्यरक्षुर्यनर्गुर्वे । प्रजेष्ययाउत्नुगुरुयायायाजे नर्हेन् यर वर्दे द : यदे । हिद : यर : या धे व : या या हे : क्षेर : देरे या से र : व हें द : यर : ह्या यावरायरा नायराहार्ययायायायरा अर्द्धरमा नियारान्दरहायार्थेयाया राष्पराचायरहित्रीः वित्राया सेवासायस्य वहोवायर हुसाय हित्यर बेद्रायम्प्यूम्या देखादेश्चे नहेद्रायम्बे वर्देद्राया देवे द्रिया देवे द्रिया न्रह्में न्यर ग्रुप्त धोद्याय अप्तर खुद्य व्याप्त र क्षेत्र से प्राया क्षेत्र प्राया विदाय यर:दर:ह:दग:ग्रद:माने:अश्व:यर:वय:वर:वश्व:र:वःधेव:वें। ।गय:हे। नेराग्ने ज्या मुरा ने वाया हे पदी सूस्र न्याय प्राय स्था स्था रायान् वीन्रवाणी वी व्याप्त विकाले व्याप्त विकाल नश्यानदे नेवाश्राणी कुदे हो ज्ञाने र हुश्राय ने प्वापे प्वविद पु पर्हे प्या

म्बद्धायार्थेन् सर्द्धायां सर्द्धायां स्वाप्तात् स्वापत् स्वाप्तात् स्वाप्ता

म्यानि श्री श्रान्ता स्वान्य स्वान्य

अःलियाधितः तेश्वान्य स्त्रान्य स्त्

त्ते त्याके लेगा के अन्तर्हे न्या स्वार्ते । निः त्या व्याप्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्व

विनायस्त्री है न्या स्वर्धन निह्न स्वर्धन स्वर्यन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्य स्वर

श्चेतः स्टानिव के विवास्तावी ह्या श्चेतायाय स्वास्ति के ति ति वियान स्वास्ति के विवासि स्वास्ति के वियान स्वासि के वियान स्वा

त्रुश्वास्त्रम् निर्मे स्त्री हिन्यम् स्त्रीन्य स्त्रीन्य स्त्री । यह स्त्रा स्त्री स्त्र स्त्री । यह स्त्र स्त्री । यह स्त्र स्त्र

श्चितिःश्चर्यात्यात्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः स्ट

यदी स्वरंभितः विद्या व

त्रवायान्य वित्त क्षेत्र क्षे

देशवर्तेशश्चर्तवर्त्वावतेः द्रेश्वर्त्ताः व्याविश्वर्त्वेशः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः व्याव्यरः द्रेष्ठः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यः स्वर्णः स्वर्

गी श्वाप्तर देव अर्द्ध र अरधर विद्युर देश । दे प्रविव हित धर प्राविव स्थयः वै। दि'षेश्राश्चेयावरावगुरासाधेव। हि'सूर्विरावी सुश्चायायावाया र्शेम्बर्धाः सेवान्यः से होत्याने प्रविद्युत्यः विद्युत्यः सेवान्यः भे हो निया सद्ध द्या प्रमान हा नवि हो मानिय है हे या प्राय से निर्मा कुर-दु-द्र-स्यर-सॅर-श्रेय-च-छेर-ग्रीश-इ-द्र-पिते-ध्रिर-रे-वे-वा दे-छूर-वशुरावरारेवाश्रायात्राधेवाहे। देख्ररावेटाद्रातेटावादे श्रुप्तवादी निदक्षेत्रप्तरनिदक्षायक्षेत्रध्ये अञ्चे ज्ञानिक्ष्य स्वर्धित्र स्वर्धे स्वर्धे बेन्यवे छेन्। भेन ए बन्दर्य में ने हेन्य होन है। । ने ने ने ने ने ने प्रति । वाषारार्द्रेत्रसावदेशासराग्चातावत्त्रमञ्जू कुराद्यात्रस्य सेवाना वेशमन्ते देव यापर वशुर दे। । याय हे हिन्सर यावव शे देव सेया नरः हो दः सः धो वः वः वे । या दः यदे । धेँ वः हवः दः । धेँ वः हवः या ववः ही अः या वे । समुद्रायाक्षे र्रास्य राजा क्षुस्राया न्या नक्षेत्राचा न्या क्षेत्राचे हिन्दे विश्वासाने हे सूरावे वा वदी व्यावमाया नार्षे दारा साधिव है। मारामी हिरा यार विया यावि सम्रम् सुन सुन । धिन एन प्रमान । प्रे इशमिडेनायायह्मायदेधेम् । निवेयोधेस्यायायम् गुरुदे । इश र्षेत्रप्रायात्री रें सदर्याया श्रुसामा हेत्या श्रीम् शामित प्रेत्र प्रेत्र हे प्रमा वर्रेग्रथः धरः हो दःदे।

प्रेंब्राचित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्याप्त्रेत्र्याचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्।

<u> ५५'सदे देव मालक या अर्घेट माने दे से राजट से या माने दे है। पर से माट </u> गी भुरत्यसर्वेदर्दे विषान्य दिस्य देवि देव त्या वे वि वे रचा ची दा कुया उयाग्रीयार्केनायमायद्वितायदेनायायायायायदे भ्रिम्मे । ने स्वानित रदान्न द्वार्य के से वायम् । वाया हे सासर्वेदान यस से वाय र हो दार श्चेतिः श्चाः पर पर पर प्राचित्र पर प्राचित्र स्वार्थ । या स्वार्थ प्राचित्र स्वार्थ । या स्वार्थ प्राचित्र स्वार्थ । नरःवयःनरःवशुरःर्रे । गाव्रःश्रे रेग्यःधरः सर्वेदः नवेः भ्रेर् । सर्वेदः वेशमित्रभूतरायार्शेन्यायार्भे विश्वाययात्री । विश्वादेश बूरायाचे केंबा | ने सूराग्रुयात के श्रुवि श्रुपे ग्रुपे ग्रुपायी सूरायायाचे केंबा बन्दर्भग्रायाधिवर्ते। । गायाने ने स्रम्ययाध्याध्यरम् स्रम्याधिवः वित्रे से विवादियोद वात्यापदा वे कें अवाव वर्ते वा वर्ते श्रू आत् गयाने भ्रम्भवसाया सँग्रसाय प्राप्त प्रम्मेन प्रमा भ्रम्भवस्त्री गाया स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स देवे भ्रीम हे भ्रम त ने कें साम लेता देश सम प्यत याम न या लेश हे भ्रम यःश्रेवाश्वाद्याद्याद्याद्याद्यात्याद्यात्याद्यात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्रात्यात्रात्य नःश्वेदार्देश विषयः हे प्यदायानः नः चन्द्रान्तः स्वेदान्ते वदिः सुन्द्रः सुन्दे सुन्द्रः यर-त्-नुर्यायाद्वस्थायायदान्यरानासास्रेष्टिन्न्यत्वस्थाने हे-स्नुत्-त्। रेग्या ग्रे क्षु व र र क्यय ग्रे हें र हो र या धे द दें विया यहें र या पविद दें वे त्र क्रम्सर्भे त्य हे राम्य सर्वे । क्रम्सर्भे नाम्य नाम्य विषय । वया धवानरानर्देवर्ग्याहेरानाधेवरो वर्षक्रिराहेरावर्षे

वृह्णानवमा देव हे प्रवृह्ण नाय विहान धीत विभागाय माय मायूह्ण नर्दे विश्वान हैं न्यान विवादी । निर्मेश्वान विश्व मानि के निर्मेश विश्व श्री । निर्मेश विश्व तुरानवे शुःश्वें रार्रे वियायवे शे कें या गरायया धेता वेया देवे रेया यहें। वेशनायदे यनयविषायश्चे केंस्य वर्षेत्र स्त्री । वारश्य स्त्री नःवनवः विगार्चे अः अं विश्वाया व्यान्त्र श्रेन्द्री । प्यवः ग्रम् नविः श्रेन्द्रिः विश्वास्तिः हेश्यास्ति से दार्ति । हि सूर्रे द्वापावदाशेषात्र दे पविदर्शे यमा श्रुपाल्व क्यायमान्धन वर्षात्री । श्रुवे श्रु हेन प्रमाधिन । श्रुवे श्रु हेन प्रमाधिन । हे सूर तुरु पर्याय स्वाय हुरा स्वाय र त्राय प्रति हु दे से ह्या पाय से या र य में न्य होत् य नविव त् श्वामवव स्याय र तहात् य दे श्वे य हेत् यर हो नित्राय श्रुरायर हाया धेवाया श्रे ने त्यापर। निवायर यानिक्याचे विष्टु अञ्चा विष्टु अञ्चाया स्विक्षित स्वित स्विक्षित स्विक्षित स्विक्षित स्विक्षित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स गर्नेवासन्वयः सँग्रायायाये सँसा भेनाया हो निया भुगिरेवा हिन्। नुःस्रायाचे र्वेस्य नाया ने सञ्चाया से नासामा नाया सुराया से नासा धर वे कें अवा उ कुवा व प्यट दे त्य क्व धर में अ क्वे त्य प्यट क्वे दे ज्ञा व वह नरः हुर्दे।

र्देव-वर्हेद-संदे-क्षेर्वशन्दे-द्या-द्द-त्य-प्र-प्र-प्र-प्र-प्य-प्र-प्र-प्य-प्र-प्य-प्र-प्य-प्र-प्य-प्र-प्य-प् वह्यामरस्य वहेंद्री । अववस्येद संवेदेंद्र विकेषा देशे वहेंद्र संशेद यदे भ्री अभेष्ट्र याष्य्र वर्षेत्र प्रिंत्र भ्रीत स्वर सेत्र प्र वह्याम्यर्व्यायायाधेवाते। यान्हेर्पाने सामर्वेदाना उसाधेवायदे ध्रेरःर्रे । दिःकेर्णेःध्रेरःररःदरःवज्ञेषःयः ठवःदगःषयः वाववःषःयः अर्वेद्र-विदेश्विर-देश्वयायर-श्वर्पयि हे अश्वर्पयायाय वे रद्राणी देव हेंद्र यर ग्रेर या धेत के ले या में दार मा ग्रेस हैं या ग्री मा से स्वार के स्वार में प्रार्थ में स्वार क्रिंअ:५:प्रमुद्र:नःधेदार्दे । विःक्रिंअ:५:नविद:५:अ:यश:नुद्र:नविःह्रशःअः धेवन्यत्यः श्रेष्वायाया हेन्न् अस्त्याचे क्षेत्रान् त्यू स्वाया धेव है। । या सन् निरमी क्षुर्यायया हुरावाया सैवायायाया धितायायाया सर्वेदावादेवे हिर ढ़्रेंग्'राक्षेट्र'ययः <u>हे</u>याशुः द्रया पर्दे ।

त्रम्भारत्यक्ति। विश्वान्यस्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्यः स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्यः

त्र्रेयामारुवाभी भ्रियामायविवानमा भ्रुयमाह्यामा भ्री स्टामिवा निर्देश निर्देश स्वामा भ्री स्टामिवा स्

धेव है। बर्द्र प्रस्वहेंद्र प्रस्ते हेंद्र प्रदेश होता है स राष्ट्रायाये निर्देश । वित्रायायाये वाले निष्ट्रमा वे वित्राया । हिन'स'नग्यापा'सदे'हिन्। वि'न्न'र्नेन'ने'च'न्न'सेन। श्चिदे'श्चराने'यान' र्देव'ग्ववत'क्र्य'यर'ग्रथथ'नर'ग्रुय'य'रर'ग्री'ग्रे'ग्र्या'दे'स्रे'द्येव'यर्थ'व' बन्द्र-सदेः श्चन्द्र-पाविः सञ्चर्नः प्रद्यन् हेगाः सरः तबदः हे। ।देशः वः अन्दर्भेव मालव सेया नवे में वाके सामा अवे न हें न नुरे। ने स्वार मर यी दिन त्या से त्वाह्य प्राप्त से प्रमाम प्राप्त के यावन त्या प्रह्या प्राप्त से । हेशमान्त्रीयायमधेनमायायीताने। हेन्द्रमानेना नर्सेशमह्यामन् इस्रायायह्मायावे सेटार्टी । देवे श्वेराद्रामान्य श्वीप्तरामी सार्या ८८.योश्व.व.८८.या.श्व.यत्त्रेय.यद्व.केश.य.श्र.८.ट्री वि.८८.वीया.य.श्र.८.ही.र. ५८। । वियायम् वेदायायाये स्वराधिमाहेदायम् वेदायायाये । श्चेति हेश्याया प्याप्त सेत्र में विश्वावित सेवा नार्य संवेश मन्त्र सामित यदे भ्रिम्प्रा इश्यायाधेव यदे भ्रिम्प्यम्मि । दे क्षेत्र ग्री भ्रिम्प्येम क्षेत्र वे विष्णामान्व प्राप्त विष्ण वर्ष वर्ष वर्ष विष्णे वर्ष वर्ष विष्णे विष्णे वर्ष विष्णे वयोग्रामान्यां । दे स्वर्ममान्ये द्वारा । दे स्वर्ममान्ये स्वरं स्वरं से स्वरं से स्वरं से से से से से से से स धिर-र्देव-मान्वन-श्रेय-नःहेन-श्रुवे-र्देव-ध्येव-व-सहस्थ-श्री । मान-प्यश-ने-वा रेग्रथःग्रेःकेंशः इस्रयः इसः यरः ग्रम्या । रेग्रयःग्रेःकेंशः इस्रयः वेशः यदेः

गयाने दे सूराता गरायशाम्बदारोया देशाने वायाने वा बुवार्था ग्रे क्षुर्था रे त्या सेवार्था स्था श्रेषा श्री वि देवा वी साध्या सरास्य वहें द यदे ही र खूना स से व्य दु : बेद : गुरा विद : हु : च दि : हु र हो द : य धेवा गरन्यात्रक्षेन्द्रस्य ग्रा बुग्रम् हेद्रस्ट्रिंन्स्य हे हेर्रास्ट्रेन्या धॅर्यायाधेताते। र्वेतारीयार्थेन्यात्रेत्र्यात्रेत्रायार्थेन्याया धेव नश्रार्शे विषा हेश रामे वे से में ने से में प्रमा वह माहेव माना रामे हेशक्षेत्रविष्य । नर्डेस्रक्ष्यत्वर्या क्षेत्रे विष्ठे ने विष्ठे ने विष्ठे सर्देव प्रमः वेव प्रमः से ग्रुः वेद प्रदेश हेव प्रवे सेद खा प्यद सर्देव प्रमः से कुगार्ने विश्वास्ट्र श्री दिये द्वीर विर्ने रुगार्मेश दे कु सळद यश वुर-व-५८। धेर्यासु-व-१५-व्यय-वुर-व-व्हेवा-हेद-पवे-ब्रसू-५ धेवानी धरान्यायवे देवाने द्वार्थिया वर्षे ने ने विद्या हेवा से नविवर्रमें नर्राष्ट्री यहेगाहेवराया व्यावाया शुः श्रुर्वेवर्ये त्या वेपाया याययात्रुवारी। रेप्यार्थवायायादीयाधिवादी ।देप्ट्रमान्नवायादेवायादेवाया

सर्द्ध्यात्राम् वारायरानेवातुन्द्राम्यादेश्वादेशायार्थवायायह्वा यदे न् व्याय के दारे में त्या से नाया या के साम प्याय में त्या से नाया या व श्चेत्र्वाववेतेर्रे अभित्रे वार्षायायायायायायाया विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवाया कुः विन्दी अवायी या बुदः चुः हेद हैं हैं वर्षे व्या अवाया हेद दर श्री वा ने भ्रवादी भेगाम इट ग्राहेन ग्रामर ग्राह्म । भेगामी माइट ग्राह्म यःश्र्वाश्वायायावावाश्वाश्वास्त्र्यूराची रेवाश्वाम् मुख्यत्वात्रश्वे याधिवार्ची । श्रेमानी मा बुदा ग्रुष्ठित प्रासी प्रदान विशेष स्वामा बुमाय हित धेवा हे से ना बना शहर पर प्रचेता सदे कु सळव से ना नी ना बुर हा हिर नदसःग बुग्र हिन् ग्रे सिंद्र प्रम्याययान देवेन प्रम् द्युम देव । सेग मीमाबुराबुः श्रेष्ठेराग्यरासुराश्रेष्ठ मायाने देशायाधेवावेशामर्देवा श्रेष्ठा वर-१६४१में भक्ते १ हेत्र १ होरी इसाय सेवास पर वया वर प्रयुम्। इसर्राम्यारसर्राम्या स्थाने स् लेव.रामाने.रेवी.लवर.वाचिवामानेर.लूरे.त्रर.वज्ञाचर.प्रवीर.स्री विविध. <u>षदा दगरक्षेत्रक्ष्याकात्याद्यदाक्षेत्रत्यम् । श्रेयायीयात्रुटः गुःहेदः रू</u> हिन्यम् सेन्य धेव यथ क्रिं निम्ये में मिन्य के अर्थे निम्य के अर्थ बःचरःश्रेणाःगेःग्र्ड्राःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत् बःद्वःद्वःश्रेत्रःश्रेत्रश्रेत्रःश्रेतःश्रेतःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेतःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेतःश्रेतःश्रेतःश्रेतःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेतःश्

श्रुंते देव गावव सास्र हिंदा भाव साम्र है । स्वाप्त स

वयायःविवान्तः से स्थान्य स्थान

व्यान्यस्य कुरानि विराधिताया विद्या व्याप्त स्वया विद्या विष्या विषया विष्या विषया विष्या विष्या विष्या विषया विष्या विषया विषया

स्यावित्र नुः भीत्र नुः भूति । वित्र खुं त्र श्रान्त नित्र स्थान स्थान

होत्। ।ते.याववःस्रयश्यःत्रेयाश्वःस्तुरःश्रेयःवरःहोतःसवेःस्यादेःशेतः ग्री देव.ग्रट.वर्ट.केर.स्थायर.चडट.तर.घे.चढु.लेख.ल.चट.श्रेढे.क्र्या ग्रीमाधिवाने। यदीयाधारा देवामाभ्रीमाश्रुवारायामाभ्रमेरायास्व रमाग्रीसाहेसासुर्द्यामानित्वसावहित्वेदाने। वित्रिंगुर्सिम्सायाप्यर हेशसन् निमासक्रम्याने नायाने मेनायास्त्रम्यान्य सम्बद्धास्य क्ष्रवाद्यवायायावे समदापेंदायायायेवावें। दिवे द्वेरावदे क्षराद्वा ठवायेवा यदे भ्रिम्ह संधित दें विका ग्रुप्त त्यामु उत्र हिन्सा सुका सम्सास विनाने <u> इस्रायर पठन पा हे साक्षु न्यया पवे छे र हन्न न या स्याया स्थाया स्याया स्याय</u> इस्रायम् सेयायासाधित विमा यायमायासँग्रासासँ सें सायम् वायमा धेवर्ते। धिवरवण्यरर्थेग्रायर्द्रम्यायर्द्रम्यायर्द्रम्ये हेर्नेर्देश्वर्त्त्रस्य षरःरेग्रश्यःषेत्रः विन्यायावतः षेत्रः प्रमायश्येतः वा । यादेयाः हेतः र् हिर् भ्रेश्वरम्याया । दे प्रयाद्रिश में या श्रे मेयाया । याय हे यह या न्देशसंख्येन्त्रनेनेय्यान्निन्द्रम् अतिन्त्रम्यान्य श्री । नन्माम्नवराधेन्यम्।वर्षाक्षाक्षेत्रे वे निर्माणेवरम्माक्ष्यानः वृत्राः यर वशुरा गय हे न्देश से या से न्दिया से न्द्र मा से न्द्र मा से न्द्र मा से न्द्र से ग्रीतर प्रायाय प्राया मुकारा सर्द्ध र या स्टायम् स्टिश्च स्टाया स्टाया स्टिश स्टाया स्टाया स्टाया स्टाया स्टाय इस्र राष्ट्री प्रायाय प्रतादित स्थाय प्राया के वा हिन प्रीयाय विष्ठ हो । नःसेन्यम्यकुरःस्।

धेरःगर्डे में गरेगरेशरा वायायायायी। श्वाधीय हैन में तथान हिनाया। वर्रे । यद्द्रवद्दर्भित् । यद्द्रविष्ठ्रम् । यद्द्रविष्ठाः । यद्द्रविष्ठाः । वहुगामविन्त्रमार्थे स्थान्य । अर्देव सुर्या शुः पुत्य वे नसूव न् से न र्ने। । नश्रुवः नुः सेनः पद्ये व्युः वः नन्याः याववः सेनः सः नन्याः याववः पीवः वे विशानहैं नामित के । निवेशित्रामित्र अमें नामित्र का निवासी । वरी या पार विवा के वा वी निहें राय वरी । रवा वश्रे में तु हस सर नहग्रामा । दगार्देव र्से र्से र सूर नहें द ग्वार । । दे धिरा दर से हे नर नश्चेत्र । क्षिमामी नहेंद्र सायादेंद्र सेद्र तुं चेद्र ग्रामायाय स्वाया द्राया स होत्ति। । स्टामनेवात्रः क्रेवामनेवाते । शुरावयामनापाते । स्टाश्रदा ग्वित इस्र राष्ट्र से भेग राम प्रमाय देव प्रमाय है माय में मिल के प्रमाय के प्रमाय के प्रमाय के प्रमाय के प्रम ग्वियायाधेवार्वे । देवे धेराळेषाची देवाण्य इत्यर ग्रुप्यवे व्यवसार्याची र्नेन-त्रभूट-न-दर्धियार्गीययानिय्युविर्मेन-दिन्दर-वर्नेयानाधिनने।। <u> न्याक्षेत्रप्रभेदेश्चेत्रप्रयाखान्देशस्य श्रुक्षेत्रभेदर्श्वर्प्तस्य श्रेत्र</u> गुःसेन्यायाधेवाधेनार्ने । यानान्यार्थे सेनासूनायवे नेवास्ययाधिवे र्देव'ग्ववव'वय'रे'न्द्र'व्योव्य'य'र्वेर'व्यथ'र्या'गे'र्देव'र् हेंग्यथ'यर'ग्रेट्र'य ने नगागी भूरावा धराने वे त्रमायर हैंगाया उसाधेव वें । विवे श्रीरावे वा हे सूर में अरु परे प्रवादिया पर्या दिवाय से पर्रे विकास में विकास में

मेव दिन्दा से अपने वा प्राप्त का विस्तान का स्थान का स्थ

यात्याते से त्विया कु अर्ळ व उव की श्चा क्रा क्या त्या शे हैं व या ना निया के व्यापात्र हैं त्या है त्या हैं त

नशः हेन्यर होन्दी । वाय हे सेवाय न्य सबुद पदे वर्ष सम्बादवायः हो ज्ञा के प्यूर के स्वा । इंट बर ग्राट से ट ट्री । देगा या ग्री श्रुप्पट ग्रामाया यदे द्वर वीश वि हे वा मृष्य व्यवा र्शे र्शे वा वर्दे वा शासर वर्दे दि । न्देशस् हैंन्यर हेन्ने प्रेरम् वा वार्यन्य सक्व केन्नि विवया क्रिंशना से दारा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत रायाधराहेँ दासरा हो । या यस ध्यमायन यन विवाया यह वा सामा धेव हो | द्रमेर वा द्रीयश्रद्राय देंग क न्या ग्रीया । विद्रपर ग्रीया वरायह्यायाधेव। श्रिषेशरोधेरळाव्या । रवातुष्यह्यायाद्येयया अधिवा । नृष्ठीनश्राणी । ष्विन् सम्यायिम विमार्थी नृष्या । नृष्टिम सम्यायिम विमार्थी । नृष्टिनश्राणी । नृष्टिनश् <u>५८। गुःनविःमःवेशःगुःनःष्ट्रःगुःषमःयमार्यसःग्रीशःनहेँ ५:मःसःधेमःर्वे। ।</u> ने निवेत नु हि रहे र निर्मा अनुन प्राप्त हो हो है निर्मा के किया के मिल राइस्रायायराद्री । विदेवाची विदासरायावित्री दिन्। विक्रेप्यार्श्वित्र राक्षे.येत् । ताय.जा.१४ की.विर.सर.ज. यक्चे.ररा क्रूर.वे.ररायज दरा श्रुन्ता केंद्रा श्रद्धेशातुःनायार्शेषाश्रादाःधातुःयायाः इस्रायायह्यायासाधिवार्ते। । तर्मायते श्रुप्परावारे वार्से से नाया ह्रियायासम्बद्धाः स्री नियम् स् वित्राचित्राविषा ग्रामा स्वापिति । यशक्रन्यम् होन्याक्ष्यं । विष्ठेषादे वह्षायम् से होन्ने नियम्

नेरावाबवायशर्ष्वेश्वराद्या ह्रिवाश्वराद्याचीश्वर्ष्वेश्वराद्याचेश्ययाचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वरा

ळ्ट्रायां ॥ व्याप्ति ।।

स्नार्केन् नह्ना संदेखे सु हु ना मा

ळंट्र आहे गहिश्य शुप्ताहर शेष्ट्र शेष्ट्र श्रेष्ट्र श्र

विश्वार्याद्धसायास्य स्ट्रिस्य स्ट्

सः न्याया स्वरं श्री स्थार क्षेत्र स्थार के न्या स्थार के न्या स्थार स्

वर्देशः स्थित्राश्चास्य स्थान्याः स्थान्य स्था व्यःश्री हिःया बदःदरः सन्दर्नादरः द्या विश्वयः यः हवायः शुः नर्हेन पर्देन क्षेत्रा । सन निरासन स्वार मिन्य राहेन ने सा । सार्क न पान स क्षेत्राया हेयाय शुक्र प्येता । द्येराव हिंदा वायया शुर्वा विरास्त्रा से स्वा र्वे विश्वानित क्षेत्राश्चा निर्मानिह निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मा নশ্বন'ন্ত্'ব্দ'শ্বব'ৰ্ষ'শ্বন'ন্ত্ৰ'ব্'ন্ত্'ব'ন্ত্ৰী'নশ্বন'ন্ত্ৰ'ব্দ'ন্ত্ৰ্ব'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ वर्ष्यूराने। क्रुरामी कु.क्रु.सर्कें प्रदाया प्राचित के । सामुयापाया धीवाने। गुनःमः न्रः भ्रः व्यक्षेत्रः गुनः चेवः व्यव्यः वर्षः वर्षः ग्राः गिः गित्वः क्षेत्रायः थेवा डे क्षे अ स्ट्राच वे अ स्ट्राच रामा निव के नामा साथेव पा क्रमा रामा हिन्यर सेन्य विष्ट्रिर सुन्य प्राचित्र या साधित हैं लिया ने क्षेत्र सन्य प्राचित्र याञ्चन्यम्यस्र स्वर्द्धन्यायाधीवार्वे । न्यान्यस्य स्वराध्याध्यम्यस्य स्वर्देन्यम् निर्देन् ने। गणके महत्र के मार्य सुन ग्रुप्य स्ट्र सुन पर ग्रेन से न सुन

चुत्रस्य स्याचान वर्षे मार मी माहत के मार पीता हे से से से तरा न सुन्य त वे अ गुन परे भे रागहन के ग्राया भेव के वि वि वि वि वि वि वि वि वि कैंग्र भेत दी। गहर केंग्र निव दिन र भेर ने अन्य अन्ति अने। सर मी मु माध्य मार्थे व मिवे व वे विष्य चु मा सु सु दे । । ने सूम मान् व के माया स हेशःशुःसश्रुत्रःसर्वे । गारःगीःश्चिरःलेखा रेगाशःसन्दःशः ध्वतःसरेन्द्रोः नर्हेन्गी मान्व के मार्थ मध्य राष्ट्र नर्थ या निर्देश । मार विमाय रेर या स्र न्या रहे या रहे या या सुर न्य या प्र न्य रहे ना या रही । या स्र न्य रहे ना या स्र न्य रहे ना या स्र न्य वर्गुर-न-गान्य-देगाया देगाया-शु-नेत्र-ग्रीय-गान्त-क्रिंग्याया-पोत्र-मश्यक्त्रम्याधिवार्वे । नियनेवार्युम्यम्याधिकाः श्रुवायम् होन्या सूर्रं अया सार् भेग्रा रादे भ्रित् सूर्य होत् साधित हैं विसारा ता पार है। रदायाम्बित्रप्रिकेशस्य विश्वराया में प्रति स्वित्र विष्या । यदे ध्रिम्भे । दे सूम्य मे लेगा द्रा है दे ना हुत के ना शादा ना सा ना स् नु नदे गान्त केंग्रा मु अर्क्त हें द गार्य या राज्य मान्य स्थान से विवासी र्देन हैं गुरु सा गुरु सुर सुर धेरा । गुर में के र्देन गुरु के गुरु धेर स देवे के वे के वा वश्येष पीव संस्थान ग्रामा संदे ही र दे दें व वा सम्बद्ध सुर न'हेर'रे। कैंश'ब्रस्थ उर्'ग्रे'गाह्रद'केंग्य रेग्य रास'स्य पीद'स्य र्यस्य नवे भुरम्थायनिव दे।

गहर्केग्रामहिरामदेख्राक्ष्याविष्ट्राम्य ।

न्नाः कुः न्दः वज्ञ अः नुवेः न्दें अः वें स्थाः धेवः पवेः धे रः ने ः न्नाः वेः रेना अः यः अः धेवर्दे। दिग्रथरशुः कुन् सेन् ग्राम् सेया नम् होन् परि ममानिव हो सा शुवा वर्चेत्रर्रव्यूरर्से ।हगान्हेर्ध्यान्यहेर्र्यान्यहेर्यान्ये ।देर्पाक्षेःहगान्यर व्याधेवा । ध्रिंगया ग्रे क्रिंव ५८८ हे या यह वा पर्यो । ५ मे राव क्रिया हिंगा डेशः तुः नः त्यः देवे : हवा : पवे : हवा : पा : प्राप्तः । विकार स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स रदानिवरमदार्वियायाक्षे पर्देरायाधिवायवे भ्रियार्थे । दे व्हायकावाहमा मंहेर्र्युर्रे वेशन्यन्थ्रित् हे। देर्पहिर्वे मह्मार्थम् सर्द्धरशास्त्रे भूमा गर्हे दाधित है। विदे हैं दसा महता मित्रे के के सुना ब्रूट नर्दे । भे ह्या म हेट या हु द क्या बेद मदे ही म हे त्या भे ह्या म या भ ग्वितः परः ह्याः पदे वह्याः यः पेदः यः यः पेदः दे । । दर्भः यः दे दे हेदः यः द्वरः नायका हुरानर शुराय है। क्षे म्हणाय दें हि का निहें नायर होते । या हु का अन्याने प्यान्धे स्वापा हेन में लेयान में या हैन स्वापा वर्ष्य राष्ट्रेन दें विषा द्यानाय स्वामान विष्टे ।

हे अरख्य न्यान्य स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच स्त्र स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्र स्

यदेर्यापृत्रः क्षेत्रायाः भीत्रः स्वाद्यायः स्वाद्यायः

क्रियानायसासा हुरान हेराने। र्देन ही र्दन ही राजा सामिता सामिता है । वर्देग्रयास्यासारेसाराष्ट्ररास्ट्राचित्रं वित्रसातुःग्रव्तरहेटाग्रीःकाद्रसा नश्चन ग्रुम । विकि त्युम । विकि त्या सक्दिया । विकि स्था । विक स्था हमां है। विश्वराश्चित्र प्रवेश्चित्र श्वराश मिल्वर श्वराश मिल्वर श्वराश यदे प्रज्ञ अ जु 'हे प्र ग्री अ ग्री अ भारा की हमा या धीव व सु प्र प्रे दे दे दें के अ हे 'हे जु । वेश ग्रु न वे तर्वश ग्रु सक्दिश मेर्दे | ने न्थु ग्रु स्थित हु न स्थारा गश्या । गया हे श्रुप्त सेंदे तुया पदे तत्र या तु हे द श्रुप्त से द दें विया हे द वविनेदेक्ते अञ्चरम् सूर्याया । दिवने क्षेत्रे वर्षा वर्षे न्याया । र्शेग्रथायिये से म्हणायाया से दार्दे विशा हिंदायि यह तत्वाया वा सूरा सूदा वर्षे <u> ने भ्रे ने केन ह्या याया प्यत्येन में लेज के बुक्कें राया पेवाया पेवायये </u> मुन् यारेयायक्षरासूरावर्षे । यरावार्रेयायमुवायवे मुन् निर्वतः भूति । देवे द्वीता के अ ग्री भू । त्वा निर्वा के अ ग्री भू । त्वा निराम अ हे अ शुन्दें नायर होन्य धीव हो। नेवे हो ह्या प्यम हे स धीव हो। नेवे नेव र्शे र्शेर-देश्राच हित्र ग्री हेश्रासु प्रमापा स्थेर पा त्राया वर वश्य राजवे श्रीर र्रा दियानसूर से समुद र्से माया निर्देश समुद र देश धीरा ग्वर सुन मा विकास सुन मर सर्दिया ग्वर सुन रेश सुन दी नर्ह्मेनारासुनारासे छेटारासेदे क्रूराग्याय यार्थे । प्राये स्वा स्वास्ता है। हैंयानायमानुरानदेश्वेरकेंग्री सह माने प्रेश्न स्थायापरान विद र्वे. ब्रेश.ची.च.ता हुश.सर.चक्रेय.सपु.यश.सपिय.रेट.लट.धीश.क्य.श.

मानवः त्याः साञ्चाः सार्हे दावा वे हिः श्रू मार्वः वे वे ते त्याः साञ्चाः सार्वे वा विवा सार्वे वा सार्वे वा विवा सार्वे वा वा वा विवा सार्वे वा सार्वे वा विवा सार्वे वा सार्व

क्षिम् अप्तर्पत्रभूता मुद्रेश हे अरशु पर्मे प्रायम् द्राय प्रेष्ट्रे राद्रा मुद्राय प्रमुवा मु सेन्यते मान्व के मार्थ सेन्य स्थान सूर्व परि हिन्दी । हिन्य सहि साथ यर हे भून न विव र र द्विन या स्थाय यह यो व दिने भूर सूर न दे क्रिंन्यायाप्यराहेशाशुपर्वे नासेन्यराष्ट्रम् ।हेशावर्वे धेवाके विवा हेन् त्यमा । निर्मे निर न्द्रासार्विद्रान्धेशाहे न्यायेह्यान्यान्या होताने। श्वादी नुसारा सुन्ता धेदार्दे। श्चात्रसामायाः सुराते साधितार्वे विका द्वारा सुरात्रे । निराने सुरायदे कारा या द्वीत के विवाधित ग्राम हे भाशु वर्ती ना श्री मान श्री हवा माने हिंवा ना यश गुररें वेश गुरार्दा गर हैय न यश अ गुरर न रे ह्वा परें वेश ग्रानाक्षात्री | देग्क्षात्रमात्र्यायायादेगविवाद्गावेयायादमा देगविवाद्गा अधिक कें लिया सह्या नस्थान स्थान स्थान । स्थित या से स्थान निव न स्थान स्यान स्थान स ষ্ট্রিল|ম'য়ৄ'য়'ড়ঢ়'ড়৾য়ৢয়য়য়য়ৢঢ়য়'য়য়ৢঢ়য়৸য়য়ৢঢ়ৢয় ने सूर सूर न पर तबर राधित हैं। । निर्मेर न सूत राउं स है न या हैं ना स <u>ৠয়৻৴ৼঀৣয়য়ঢ়ৡয়৻৸৻৸ৼ৾য়৻য়ৣ৻ঽয়ৣ৾৻য়য়ৢয়৻য়ৢয়৸৻ঢ়৻য়ড়ৼয়৻য়ৄ৻৸</u> ने भ्राम ने नुसान या के सामाहिसामा प्यम ने मासाम प्यम प्राम प्यम ने माने माने साम यावदायापटाटें। १२.क्षात्रापटा ह्यायादेवे वर्षाकेटा ग्रीयाद्री वर्षा। विविधारा क्षेत्र स्रूट इसारा विदेश विविद के विश्व सिविश विविधारा है या सा र्श्वेर्यायार्थेर्धेत्। ।रेप्ट्रम्पिर्वेर्यायीयायहेषाहेत्यवेर्श्वेर नदे हे अ शु (बुग्राय वर्ष के अ श्रुव पा न म) के अ श्रुव पा अर्द्ध मा पर

नस्रुवः सः स्रे। नङ्गयः सम्बाः हुः हुनः नः हेनः हुं नायः ग्रेवाः हुः नेयः सः न्रें अर्थेवे यान्त्र के या अर्थे वर्षे ने स्थान से तर्थे या यो हो तर्थे या यो हो अर्थ क्षरःश्वरःवरःवर्हेरःहैं। शिवाशःश्वःशवाःवे विःवे उवाःवीशःश्वेरःवःवविवः श्रिम्याम् विमानु देया पर प्रमूद पर पेर् पर साधिद है। । दे प्रविद प्रमूद ঀৗ৽ঀৢ৴৽৳য়৽য়য়ৢ৾৾য়৽য়৻ড়৾৾ঢ়য়৽য়ৼ৴য়ৢয়৽য়৽য়৽ড়ঢ়৽য়য়৾৽৽য়য়৽ मुन्यावरहेराधेराद्री विःचनानाईरायमाळ्यासम्बन्धाना हैंगाः अर्द्धरशः पर्दे । द्येरः दश्यः पविदः द्रः तुयः यः द्रदः रहें शः अष्रुदः प्रशः भे ह्यापर गुराययाय हिंदा देखा है या के या सुदाय पेंदा दे ने साम नश्चेनायरः ग्रुप्तप्तरा श्रेनामी मञ्जूरः ग्रुप्यः श्रेन्य श्रादे ग्रेप्त्रमामी श्राप्तुश्रः यार्विक् से ह्यायर वर्ष्यूर श्री क्षुक्ते साधिवाया क्षुक्ति व ह्यायर वर्ष्यूर है। नश्चेना'सर-द्यु:न'स'प्पेद'स'द्रा' सन्द्रन्तु:हेट्'य'र्सेन्स्यास्य से हेस र्शि।

वर्त्वेत्राधराष्ट्राच्चायात्ररात्युरार्से । स्टामी र्द्वेम् शायायात्रायात्रात्वेतः ग्वित्रायासामुनायामध्रेत्रायवे भ्रीतास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास् वर्चित्रामायाते मुत्रासेंदाद्या मुत्रासेंदासाधितायते सारे सामासूरासूदानित्। नश्चनःयायाने त्वायाना से तिव्याना उत्तुत्र हिन्या सूर सूर नर्दे । इसाया वार्वेदायराष्ट्रेसारेकाराष्ट्रमाष्ट्रमार्थेदायर्थे विषयाहे वर्षेवारामा हुन नर्बेट्रायदे न इता अवा कु तुरान के दान हे दान दे अर्देन शुअ दनद विवाप्यः भेवाषी वा बुदः ग्रुः अः धेवः यः हेदः दहः अः हेदः यः श्रेवाशः यशः अः देशासाधीतार्वे । नर्वेद्रस्यासदे देशासर हो दासदे नात्र के नाया पदि । पद ने निव्यत् संभित्रते । । न इत्यास म्या तु तुर न वनव विया स वे या हतः क्षेत्रायाः श्रीः सक्षवः हित्रत्रः स्वरायः स्वराहे। देवे श्रीत्रः स्वरायः स्वरास्वरः स्वरः नर्दा । माडेमा हेर रा बयानर त्युर धेर हो ज्या सेरा । किंसास बुदारा क्रॅ्र्न्याये अन्याधित स्वरे श्रिम् ने प्रमानिया हु मार्थ सम्या मार्थ मार्थ स्वरं । <u> त्</u>चःर्ते अष्ठवः त्रुः अप्येवः प्रेवः स्वेतः स्वेतः त्रिवः त्र्यादः त्र्यादः यो अप्यः वश्चातः व्रदे विश्वार्ये वर्षा वे व्यवासे द हेश व्यव्य वे वे व्यवासे द स्वयं वर्षे । यार विया यार प्रतः हो ज्ञया धिव वि व्या हो ज्ञया से द स्मर हा स्मर हा स्मर है मुरावस्थारुद्राद्रा द्रोराद्राकेषासमुद्रायदे द्रोत्यसायसूद्रायदे *ક્ષેત્ર:*য়ঀৢ৾৾ঀ৻ৼয়য়৽৻৻৻৸৻য়ৢঢ়৻৸য়৻য়ৢয়৻য়৻য়৻ড়৻ড়৾৻৻ रादे के शावस्था वर् श्वाया वितासर त्यूर री । दे त्या वर्ष वस्था वर् सव र्द्धव र्द्ध व राज्य श्रुव राय रेटी र या हे या रेटी र या वाय र या विकास र या विकास र या विकास र या विकास र

लट. घे. चे चे. से ट. तर स्वतः चर त्यूर च रात्र त्या राज्य वितः स्वते । चे च हे<u>ि , र्यः श्रेंब्रायः लेब्राये ह</u>ि राह्मसाहेवा सक्दर्यायायया हिट्रायर केवा र्रे पिट्र रास पित्र हैं। । देवे हिर दे रावेत दुः सारे साम सूर सूर वर्षे। । मुँग्राश्राक्षायावे के शासत्रुवाया उसायश्राक्षात्राम्या नहीं दाया दा यार ही ज्ञवा से दाया खाया था था हिया समाय हिंदा या से दादी । यादा ही ज्ञवा बेद्रायर्थ्यः अर्वेद्रायः उद्याय्य अर्थेवाय्य होद्राद्वी ।देवे ही रायादेयाया सूर ब्रूट नर्दे । नश्चन गुःहेन्य या गुन् से दे भेट से दे स्थान । । सा गुन सा से दे से दे से दे से से से से से से स वर्देन । वे.चगः भेरः सरः सर्हर सः सः सः सः सः नः नः नः नः नः ने नः ने नः नः यर में शुर्श्वराश्चि । दे या इसायर हैं माया सर्ह दसाय दि हो हो मा से दार यश्ची न्या से द्राय स्था स्था ने पालक द्राय है। न सुन च न्दामाह्रवाक्षम् भारी देवाद्याया है। इया से दायदे है सार्वे । प्रये साव है सा निवन्त्र स्थायान्त्र व्या स्टूरान साधित परि द्विरान सुना परा स्वापा परि यान्द्रक्षयाश्राभी देव द्याप्य हो इया प्य दाया धेद दें विश्व श्री । । दे प्य नश्चनः परः ग्रुः नः १९८७ द्वीः नहमाश्चान्यः नश्चनः परः ग्रुः नः नहः महनः क्षेत्राश्रान्ते न्व्राया अदास्य सर्वे निष्ठी निष्ठ र्धेन्यः विवान् सेन्यः नश्चनः स्ट्रिं ।

हुँ न्या स्वर्ध स्वर्ध हैं हैं स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

गुः अ'धेव' म'हेन्' से 'द्युन' र्वे | वार' व' र्युन अ' वार्डवा' ह' रे अ' म' सर्वे र व वे मार्वे द पासे द दे। हे सूर ह्या महिरा पाते र ह्या महिमा र्थे व द र रे द पा धेव है। रग्रायाधिव प्रदेशि र तुयायाया सैंग्राया प्रदेश विसा तुया वर्षास्यासार्वास्यराभ्रेयायायायात्रेत्यारावर्ष्यायाविवार्वे । त्र्या यायार्सेग्रामाम्स्रमाग्रीःर्सेन्प्र्न्यम्यामामामामाम्यामान्यम् यव गर विग प्रिं । विश्व न श्व प्राचित्र विश्व । विर्वेत् प्राचित्र मायमायाक्षेत्रसेता । नसूनानुःयाने यदिमार्केशास्त्रसार्केशास्त्रमायमार्थे है। दे य गर्वे द स गुन द दे त्याय न हे द धे द दे। | न मुन गुन स गावित गहर् केंग्रा । नक्ष्रं र देशेग्रा र अकुर र पर्दे । गिर नक्ष्रं धरः ग्रुः नः व्ययः ग्वितः व्यदः ग्वाहतः क्षेत्रायः ग्रीयः हेः नरः नसूतः धः देः तेः न्रीम्यायायाः सर्द्धन्यायदे । न्रीम्य स्थायानिव न्युत्री स्वाप्यम्य सुनायाः यःगान्त्रः क्षेत्रायः यदे :र्स्नेगःयः श्रेंग्यः यः यः प्यदः यः यः प्यतः विदः यदे ।ययः यर्देन् शुयायार्थे ग्रायायायायी । ग्रायाने हे से दाग्राटा हे दे क्रूरविशुर्वा के 'वेर्' प्रायाधिव हों । । वावव हे 'व्ययावव हे हुई रावर होन्ने । त्रने से ह्या परे यात्र केया या या पेत्र हो। ह्या या यो न परे हो स वन्या भी भी द्वारा में दिया प्राया या या से समा प्राया दिया है। वि या सी वर्दे या प्याप्त न सुन र तुः तुः स्व न विष्ठ स्व विष्ठ स सम्बद्धित । पायाने पान्त के पार्या विद्या श्री सम्पार्य मुना ने स्थान

याह्रव क्षेया शक्ते : या धीव क्षेत्र वि । दे के की ह्या पा से दाय रास हिंदा वि । वि ग्रेन्यार्थितः कुरव्ययाव्य ग्रीय्य्ययात् अत्रात्री । निवेयात्र कियायात्री <u> नुःअः शुरुः पवेः भ्रीरः ने अः परः हो नुः भारते । । ने वेः भ्रीरः अः ने अः पः क्षरः । । ने वेः भ्रीरः अः ने अः पः क्षरः । । ने वेः भ्रीरः अः ने अः पः क्षरः । । ने वेः भ्रीरः अः ने अः पः क्षरः । । ने वेः भ्रीरः अः ने अः पः क्षरः । ।</u> बूट नर्दे । निष्ठ केन्य राष्ट्र केन्य राष्ट्र नाम निष्ठ न निष्ठ निष्ठ राष्ट्र ह्रेग्रायदे भ्रेम् । याग्रान स्ट्रिस् सूर सूर सूर नात्रा ग्रीय। । वस्रय उर्दर स्वर हु श्चरायाधेता । वारायाध्यायदेशश्चरा होतायाधेतादेशिकायाहेताया हे शैं ह्वा रायश्वावद्यापात्रद केंग्राश्ची रेंदि । श्वाया से राया प्राया धेत्रसायासेन्यरनित्रम्थासदेधिरसायुनायास्ररसूरातासे। नसूनागुः यः सेन्यायन्यायेन्याञ्चायार्थेन्यायाय्यात्रायाय्यायाः यर्स्यापीत्रित्ते। हे सूर्स्ययायार्शेन्यायार्थेन् परिस्रक्रें स्थाप्तरा क्षेत्रान्हेर्प्तर्देर्मा प्राप्त । यात्रवाक्षेत्रा वाक्षेत्र विद्या । याद्र नुःन्यःनडयःमदेःन्त्रःनन्ग्यःमयानृत्रःक्षेत्रयःमद्वियःमदेःध्रेरःवेःक्ष्यः 5.7美子子门

याहत्र क्षेत्रा शा वित्र ह्या प्रायम ग्राप्त हैं स्वा मार्थ हैं प्रायम हैं प्रायम हैं प्रायम हैं हैं प्रायम हैं

धेव हो गरमाहव के नाय है द्वा प्यय से हिना पर्वे बेय पर देवे सुवा नश्चन गुःर्श्वे नहग्रास्य देसा । १६८ सूटा वर्दे न इत्यास वर्गा हु गुरान न्भेग्रान्यत्रावहिगायाकेन्द्रम् अत्यायायायात्विगाने सूरार्भे वर्षेग्रान्य वर्षे ह्यायायक्रीत्यरा चुःक्षे तेषाणदा सारे सायाणे वायवे चित्राचे कें साणे वा र्दे। विदेश्वरावस्यायात्रम् वृत्यायात्रम्यायात्रम् यः र्रोग्रायः यः प्रेंद्रायया देशादेशाया युद्राया स्रे विष्याया युद्राया स्रे धेव सदे हिर र्रे विश्व या इस्र या पर दिवा महिर धेर सहे देवे ह्येर् सारे या प्रेर सूर वर्षे । ह्याया या ग्रुवा सूर सूर । क्रें वहवाया दया नेशायर होर्ने । वायाने वान्व केवाशा शुः श्चीं वन्वाशायर हा वदे वहारा अविष्ठिर्ने प्रति स्त्री स्त्री अप्राश्व प्रति विष्ठे के विषय अप्राया विष्ठ स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र इत्यानिक स्त्र स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त नःस्रे। गहराक्षेत्रायासुःनिह्नायिः वहत्याया वर्षाः हुः वहः नरः न्येग्यायाः दे नह्या अष्ट्रम् हु अपा अपी व प्रते हिस्से । दिव ही अपदे दिसे अव अ सब्दार्श्विमाया । नश्चनः नर्हेनः देवः में सक्दरया नरोरः दायायः हेः हित्यः नः यश हुर न से ह्या पा धेव वा देव ही श्वारा ही हैं या न यश सा हुर न दे र्त्रेग्यार्थ्यम्यार्भ्ययार्भ्ययार्भ्यार्थ्यत्वयार्य्यम्ययार्भेय्यार्थः नर सर्द्धर अ पर्दे | विदेश्वे | विद्यापाया विद्या ही न सून हु या | दि प्ये अ श्चर्या । हियायायया वृत्यायायया श्रीत्याया से त्र्याया हितायाया से त्र्याया से त्र्याया से त्र्याया से त्र्याया यः हैयः नः यथा अः ग्रुटः नः हेट् यथा ह्वा प्रवे देवः द् क्वें वर्दे वा यः प्रसः ग्रेट् प दे त्याने सारे सारा सूरा ह्या वर्षे वासारा हो दार्री।

देशवासारेशस्त्रस्य स्ट्राचा से ह्या याया प्यापदा या हत किया श विग्रायान्त्रे सालिव रायान्यान्य या न्यून प्रमान्य न्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्य क्रियानायमाञ्चरानाकेरायार्भेषामायारे प्रवासेराग्रहार्मेषायार्भेषामायार्भेष शेरह्मायामुन्यस्थार्शे विशःहिन्यम् होन्दी । नेप्यम्य स्थान्य स्थान्य स्थान धरःवर्देर्यः प्यदः । यदः प्यदः यदिशः याः यात्रवः क्षेत्राश्राः यश्रा । द्येरः वः ब्र-निव् क्षुनायायारे विवायि रात्र्यायार्वि वासी हवा पर्वे वेशायि गहरुक्षेग्रांगराधेदावेयार्थे । देवे द्वे प्रस्मासूरायावविद्या । देव्याया श्रे ह्या य गुराय अर्वेट य निवेद र प्या है द य दे निव्य निवेद र य बेर्-मदे-रमे क्रूर-बूर-नर-रेग्यामदे-धेर-रे-क्रु-तु-रे-क्रूर-बूर-न-क्रे वॅरि-५, त्व्यार्गः अर्द्धरमः यर या ५व कियायः ग्री: हे यः वर्षे वर्षे ५ वेव हे ।

साधिवावायाः स्वार्थः विकान्तः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

रायार्श्रेग्रारायायाञ्चायम् इति । वित्रायाचेता हुर्ग्याया वे हे सूर्याय रेयाप्टर धेव के वें ना निव तु प्रनाय पर सूव के ना से ग्रवसायाधेवायवे भ्रिम्भे । यदेवावायम् र्वेवासायवेवा पुरदेसायमः र्श्वेर्प्तते भूति सार्पे सार्पा से सार्पा स्वराधित । सार्पे सार्पे से सार्प यर्द्धरमायर महें र त्यार्थी । रे प्यर रेग्याय या थेव हे। नर्येग यर हा नक्षेत्रयार्शेन्राश्वासार्थेत्रयम् सार्थेत्रयार्थेत्रया स्वाप्या ॻॖऀॱक़ॗॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॗॖॖॖॖॖॖॗज़ॖॱऄॱक़ॖऺॴॗॱॺॱऄॖज़ॱऄ॔ॗऻॗॴॿक़ॱॻॖऀॴॱ वे नश्चेग्यर ग्रुप्य अप्येव य द्रा श्रेया मेश्या बुद ग्रुः अप्येव य हेद थः र्शेयायाययाञ्चाह्यायाहेरारे वियायहेरायाधेदारी । यञ्चेयायमाग्चायहेरा यःश्रेवाश्वास्थानुस्रासंक्षेत्रम् अप्ति । दे यायदे अद्भादा में यर गुःश्लेष वर्षेषा यर गुःव साधिव याया सैवासा स्वापारि वर सर्वेद नर्ने से द्यो देन ग्रम्मा सम्पर्ने लेखा हो सुमर्ने नालन ग्री हिंगका वासादेशमान्नेदानाईदामाधेदार्दे। विदेश्यान्नेदावानुनाममानेदाना थेव या हिन हो न साथेव या निव के निवास साथेव हैं।

मी। नश्चेनायम्मान्यायेवायां हिन्नश्चनानुः सेन्यम् विश्वावेषाये संविद्या वेता ने भूषी वर्त् कुमावर्त्र योष्ठे रामा हे राष्ट्री द्वित हे वे मामी राषी वर र्वे । ने सूर हेन्य गुन्य व ने येन ने हे सूर नु यक्त गुर्येन केन हम महिन्सर्वेन्यते सेन्या सहत्त्र्यास्त्रिम्यहेन्यी प्यत्सर्वेन्य नशह्यानासाधिवार्दे। यादार्केशसञ्ज्ञानदा केशसीसञ्ज्ञानया वीशायदिवे ह्या य हिटा हे शाशु प्रदेश या सम् हो द दि लेशाय हुए हैं। ।दे वर्देरकेंशकेंशसमुद्रायायायेंद्रायाहेदाद्रेरायेदात्र देख्यदेशसम् गुनिक्षित्यामिक्षित्त्र्यामिक्षित्त्र यदेन्द्रभे र्श्वे र नर्भ धेव व वे र्श्वे माह्या प्र धेव है। हैं या न यस सा हुर नवे भ्रिम् वेश्वराक्षेत्र से न्या के न्या निष्या नाय श्रास्त्र निष्या नाय श्रास्त्र निष्या नाय श्रास्त्र निष्य वयःसिवदःह्याःसः ५८। ईत्यः नः ययः हुरः नः से :ह्याःसः यः द्विवायः यादेयाः हः देशनायम्यम् निर्मे । विदेशन देशम्य म्याने स्वर्धे साम्रे साम्रे साम्रे साम्रे साम्रे साम्रे साम्रे साम्रे साम्र अर्द्धदश्यायायात्रवाळेयाश्यायेत्रायाकेतात्रः केतात्रः केतात्रः केतात्रः केतात्रः केतात्रः केतात्रः केतात्रः केत डे वें मा हे न से न से हो मा बिन में न से मा बिन में न से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में से मा बिन में मा मा बिन में मा मा बिन में मा बिन में मा बिन में मा बिन में मा मा बिन में मा अ: श्रद्र-द्र-पात्रव : क्षेत्रायाः याद्रव : याद् वस्रभारुन्। नस्यान्यते। स्रिन्या स्राप्ति। नस्यान्यस्याने। नित्रान्ते। क्षें त्रामान्त्र कें मार्थ भें त्र न्या में द्रामा मार्थ में मार् यर ब्रेन्स हैन हैं। । ने प्याधन ब्रन्थ ब्रन्थ हैं ब्रन्स व्रेच हैं। । ने वे धेर-दे-क्रर-पर-गहरक्षेग्रास्थित है ते वितास पीत विद-द्रिया रा

मह्म मा प्राप्त मा प्रमाणित किया था स्री व किया था भी व किया था स्री व किया था स्री व किया था स्री व किया था स

ग्वित्याने से ह्या राया या हत के या राये दारा धेत हैं। वित्यार ने न्या मी अ न श्रुन ग्रुग्य या से न प्यस्य ग्रुम या न्य के या अ से न प्या प्यस्य ग्री ग्राम् विग्रासेन् ग्राम् ने देवे ग्राप्त्र के ग्रायम् माने साधित हैं। । ने स्वाप्त के नेवे त्यव र् त्यू र र्रे । । ने त्थ्र या धेव व वे से वाया श्वाय विव व है न सर वशुरार्से । विदेशायाणराष्ट्रियाग्रेनायाणेवायवे भ्रियावाद्वराष्ट्रियायाग्रेवाया वेंगानी क्रेंन्य अप्पेन हैं। । वे कें अअकुर अपर पर पान्न केंग्य ही न हे व्ययानी प्रवित्त हो। यदे स्वर न सूर्य प्रयः हा य दि । यदे । स्वर न सूर्य । यदे । स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर हो । स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर हो । नित्रारायितर्ते। । न्यानउदानः श्रेतर्ते गित्रामेरा ग्राम्यरेत्रायमः न्हेंन्या भ्रीत के लेंगा तु नित्रम्य या ये भ्रीता स्वर्थ का कित्त भ्रीत के लेंगा केना र् वयानरावगुरार्रे । सान्हेरायासङ्स्यायापरामान्द्रकेषायाधिदार्छे। वैवा हु नहें द सामाधिव है। सर्सेय में मादि वा परे वा वह वा मासे वा वह वा मासे वा का सु । हु मा यने साधिवानी। सूरावसानहिंदायाधिदायदे विसानहिंदादी। विहिदायदे कें तथ्यर भूते भे ह्या महेर में या सामाधित है। विया मते भ्री स्वार्थ नु अद्धर्यायाया प्रवाहित के प्रयाश होता है। वे प्राप्ती के त्र प्राप्त हिंदा या या ये त है। देव ग्राम के मानव भी विम्य सुरद् याम है म भी भिन्य से सी देवे भ्रेत्र भ्रमामार्केन ने नमामान्य के मार्थ भ्रमें वर्ष मार्थन न्या सर्वेद दें। | थर द्वा पा साथित पा ते प्रता निर्मा के साथित साथत साथित सा

सर्द्ध्रस्यायाः स्वायाः वर्षे । दे त्याचे विवा वया वर त्युराया सर्द्ध्रसाया वे प्यट्रिया या या या स्था या द्यो श्री स्ट्रेन श्री या प्रवास स्था स्ट्रेन लट्यस्य त्राचार्यात्राचार्यात्राच्यात् नशःग्राम्याद्वितः स्वर्धाते। स्रायाद्विमः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः <u> ५८.त्याय.य.केट.ट्र.</u>.बुश.चुश.दश.श्री । १८.यबुव.ट्.ट्र्य.क्रीश.म्.य. यर्द्ध्दर्भाराःष्यदःद्वः । हिःक्ष्र्रः वश्चवः ग्रुः सेदःसः यः यः द्रियाशः स्थाः सेदःसरः नुभेग्रामः र्वेनः मः प्यान्यामः सः प्येनः मः ने निवेनः नुः श्रेनः रे वेनः ना वयायायायायाद्या वियायायादी साङ्ग्रेशायाद्याह्मायास्य सुद्रायाया र्शेग्रायाम्यो । ने त्यान्याम्यो धिरास्य त्यासी यात्रे सुदि सीन्याने वे धिरा ने सुन्तु त्याय न हेन्ने । होन्य पर्य हेन स्वाय देव हेना स्वाय न पर्य । वेशःह्याः प्राप्ते दाष्ट्री वार्षे विश्वा स्वार्त्रा विश्वा स्वार्थः अर्द्धरश्रायायपादी क्षेत्राययायायायविवात् भित्रेत्र के विवा प्राप्तेताय प्राप्तेताय विवादी । ब्रेव के वें वा न्दर पद न्वा संस्था पेव संप्यद ने भूर ह्वा संक्रेट पेव के नेवे भ्रिम्भूमाम् वेन इसस्य स्था भ्रित्र के वेजा न्या धरान्य प्राप्त स्था धेता साम्य विषयानिक्ष्यान क्ष्मामार्डेन सम्भागी सक्त हेन त्यम् । न्यायन नेया सम्बर्धिन लर्। निश्चार्यस्यारायह्यायरलर्। व्रियाय्रिर्यावदायारेवे

ते नित्र हो ने प्या नित्र निष्य नित्र निष्य के नित्र नित्र के नित्र निष्य के नित्र के नित्र

मर्ज्ञिनायम् ग्रानित देव द्वा प्राप्त स्था । विदे त्य अपि प्रिक्त प्राप्त प्रिक्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

स्त्। ॥ स्त्रा ॥

ळ्ट्रायागुद्राययान्त्र्यायदे प्रयोगायाः हेंद्रायाया केदारीं विदातुः स

नदे त्रुग्रारास्टरन र्ह्मेन द्वें त्रुंग्रारा में श्राप्त स्तर्भा

भेगार्ते र प्राप्त कर खूना भेरि के प्रचेत्य न नावर व प्राप्त के प्रचित्र कर कि मार्थ के प्रचेत्र कर के प्रचेत्